बरसाना

बरसानो रसमय बरसानों ।

राधा प्रेममयी तहां खेलत, कन-कन रस को थानों ॥
रस ही खानों रस ही पानो, रस ही रस सरसानों ॥
बहुत दिना तेरेहि बरसानों, अजहूँ रस नहिं जानो ॥
अब मैं कहाँ जाऊँ रसिकनी, यह तब नाम हँसानो ॥
वास दियो अब देहु रास रस, निर्भय करि मनमानों ॥

षष्ठम् संस्करणम् – २,००० प्रतियाँ

प्रकाशित २८ फरवरी २०२३

फाल्गुन, शुक्लपक्ष, रंगीली होली, नवमी, २०७९ विक्रमी सम्वत्

प्राप्ति-स्थान

मान मन्दिर, बरसाना

फोन – ९९२७३३८६६६

एवं

श्रीराधा खंडेलवाल ग्रन्थालय

अठखम्बा बाजार, वृन्दावन

फोन – ९९९७९७७५५१

श्री मानमन्दिर सेवा संस्थान

गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

फोन – ९९२७३३८६६६

http://www.maanmandir.org

info@maanmandir.org

प्रकाशकीय

श्रीधाम 'बरसाना' जो रससिद्ध रसोपासकों की परमाराध्या श्रीराधारानी की नित्य लीलास्थली है व अवतार-भूमि है । समस्त साधनों का फल इस धाम के स्मरण, निवास मात्र से सुलभ हो जाता है । यही कारण था कि जगतपिता ब्रह्माजी को साठ हजार वर्ष पर्यन्त आराधना करने के पश्चात् भगवत्कृपा से यहाँ पर्वत बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । ब्रह्माजी के चार मुखों के प्रतीक उक्त पर्वत की भी चार चोटियाँ हैं, जिन पर मानगढ़, दानगढ़, विलासगढ़ एवं भानुगढ़ लीलास्थल विद्यमान हैं । यहीं भगवान् कृष्ण की आराध्या श्रीभानुकिशोरी के करकमलों द्वारा निर्मित गह्वरवन व परम पुनीत राधासरोवर है ।

यत्र गह्वरकं नाम वनं द्वन्द्व मनोहरम् ।
नित्य केलिविलासेन निर्मितं राधया स्वयम् ॥

(श्रीवृषभानुपुरशतक-७)

बड़े-बड़े संतों महापुरुषों ने भी इस पतितपावनी पुण्यदायिनी भूमि का आश्रय लेकर अपने गन्तव्य को प्राप्त किया । ब्रज के परम विरक्त सन्त पूज्यपाद पद्मश्री श्रीरमेशबाबा ने भी इसी भावना से यहाँ अखण्ड ब्रजवास करते हुए इस धाम की उपासना की और अपनी अभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों में की है –

'सबसों सुन्दर है बरसानो ब्रज में राधारानी कौ ।'

इसी आशय से ब्रजभावभावित बाबाश्री की कृति 'बरसाना' का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें सुदैन्यभावपूर्वक श्रीराधामाधव के नाम-रूप-लीला-गुण-धाम-जन इत्यादि की सान्निध्य-याचना की गई है ।
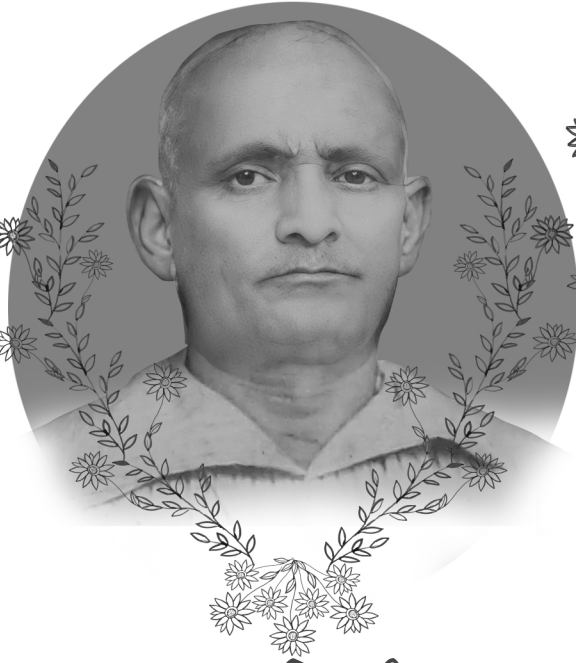
पूज्य पिताश्री
श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल
पूज्या माताश्री
श्रीमती हेमेश्वरी देवी
पूज्या दीदीश्री श्रीमती तारकेश्वरी त्रिपाठी
परम पूज्य
श्री रमेश बाबाजी महाराज
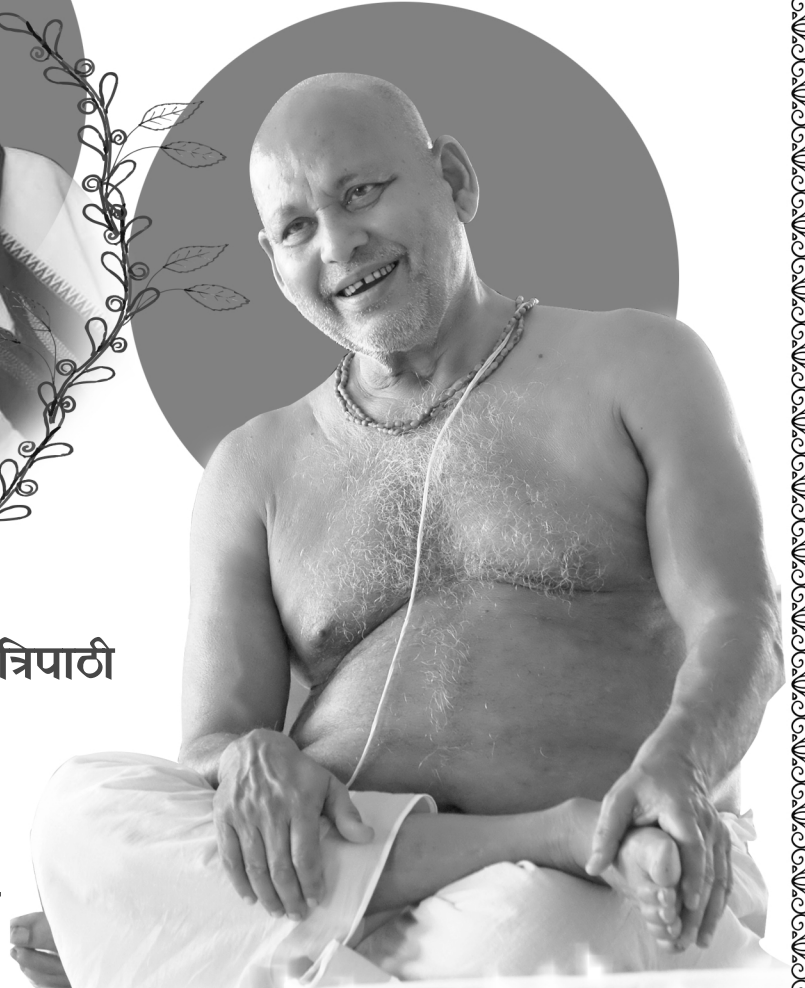
श्री रमेश बाबा जी महाराज

गुण-गरिमागार, करुणा-पारावार, युगललब्ध-साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा-वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मन्द मति की गति विथकित हो जाती है ।

विधि हरि हर कवि कोविद बानी ।
कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कहि जात न कैसे ।
साक बनिक मनि गुन गन जैसे ॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड -३क)

पुनरपि

जो सुख होत गोपालहि गाये ।
सो सुख होत न जप तप कीन्हे, कोटिक तीरथ न्हाये ।

(सूर-विनयपत्रिका)

अथवा

रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये ।
तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी हू बन जाये ॥
जनम-जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये ॥

(बाबाश्री द्वारा रचित 'बरसाना' से संग्रहीत)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है ।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह 'लेख' मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पाएगा अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में । सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य-विभूति का प्रकर्ष-आर्ष जीवन-चरित्र कहीं लेखन-कथन का विषय है?

"करनी करुणासिन्धु की मुख कहत न आवै"

(सूर-विनयपत्रिका)

मलिन अन्तस् में सिद्ध सन्तों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक-लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया, अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की ।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य-दान दिया । माता-पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे । ईश्वरीय-योजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में । दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल ('शुक्ल भगवान्' जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को सन्तान-सुख अप्राप्य रहा, सन्तान-प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ, अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र-कामना ने व्यथित किया । पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया । आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया । शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

"यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव-जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है ।"

वही हुआ, गुरु-शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्पकाल में अध्ययन समापन भी हो गया ।

"अल्पकाल विद्या बहु पायी"

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से । सर्वक्षेत्र-कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन-वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े-बड़े संगीत-मार्तण्डों को । प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का । अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके । अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर ।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण-परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया; सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास-स्थल 'पूज्यपाद' का भी वनवास-स्थान रहा । "स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे" इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में ।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार-बार 'पाद-पद्मों' को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना । मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया । मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है, अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है । बरसाने में आकर तन-मन-नयन

आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए । श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरन्तर राधारससुधा सिन्धु में अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्ज्वल कान्ति से आलोकित-अलङ्कृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के प्राकट्यकर्ता "अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज" से शिष्यत्व स्वीकार किया ।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान 'बरसाना', बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित 'गह्वर-वाटिका' "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गह्वरवन में भी महासदाशया मानिनी का मनभावन मान-स्थान 'श्रीमानमन्दिर' ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा । 'मानगढ़' ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है । उस समय तो यह 'बीहड़ स्थान' दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मन्दिर-प्राङ्गण में न आने देता । मन्दिर का आन्तरिक मूल-स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था । चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः" – चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप-पङ्क के चोर को भी एवं रकम-बैंक के चोर को भी । 'ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे' इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोह-दृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरूप जो ठहरे । फिर तो शनैः-शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया ।

जग-हित-निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं । श्रीमच्चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार से अधिक गाँवों में प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है । ब्रज के कृष्णलीला सम्बन्धित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ-साथ सहस्रों वृक्ष लगाकर सुसज्जित भी

किया । अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें - सन् २००९ में "श्रीराधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज-पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा । समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनाम-संकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य-गान हुआ; नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया । दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य-सत्ता भी नत हो गयी । गौवंश के रक्षार्थ गत १५ वर्ष पूर्व माताजी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज ५५,००० से अधिक गायों का मातृवत् पालन हो रहा है । संग्रह-परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की 'भगवन्नाम' ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है ।

परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य सम्पादित किये इन ब्रज-संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने । गत ७० वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं । ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं । असंख्य जन आपके सान्निध्य-सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव-साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं; इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय । वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व । रसोदधि के जिस अतल-तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस-ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया ।

'आपकी आन्तरिक स्थिति क्या है' यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है । आपका अन्तरंग लीलानन्द, सुगुप्त भावोत्थान, युगल-मिलन का

सौख्य इन गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही सम्भवहै । आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रसेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित विलक्षण रचनाएँ हैं ।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है । साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन । दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्ज्वल पुञ्ज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केन्द्र बन गयी, सैकड़ों ने छोड़ दिए घर-द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं; ऐसा महिमान्वित-सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक   है ।

रस-सिद्ध-सन्तों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पाई । श्रीजी की यह 'गह्वर-वाटिका' जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है । आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग 'स्वस्तिवाचन' कर रहा है । आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वन्दन अनुक्षण प्रणति भी न्यून है ।

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

क्रमसंख्या	पद (गजल)	पृष्ठ संख्या

अनुक्रमणिका

क्रमसंख्या	पद (गजल)	पृष्ठ संख्या

अनुक्रमणिका

क्रमसंख्या | पद (गजल) | पृष्ठ संख्या

अनुक्रमणिका

क्रमसंख्या	पद (गजल)	पृष्ठ संख्या

किसने न भीख माँगी बरसाने लेके झोली ।

ये नाचती औ गाती, मँगतों की फिरती टोली ॥
ब्रह्मा ने माँगी चौमुख, शिव ने भी माँगी पंचमुख ।
श्री शेष ने सहस मुख, भिक्षा की बोली बोली ॥
राजा ने ताज छोड़े, पंडित ने ग्रन्थ छोड़े ।
सब बन गये भिखारी, सत्ता की जला होली ॥
क्या श्वेत केश वाला, क्या नव वधूटी वाला ।
दीवाने बन के फिरते, विजया ही ऐसी घोली ॥
जिसने न भीख माँगी, वो ही रहा अभागी ।
ब्रज गौर श्याम जोरी, दाता ने झोली खोली ॥
घर-घर में जाके माँगा, गलियों में दान माँगा ।
माखन को छोड़ छाछ भी माँगा, ये बोली बोली ॥
ब्रजवासियों से माँगा, ब्रज गोपियों से माँगा ।
प्रेमीजनों से माँगा, मँगतों की बोली बोली ॥
ग्वालों से भी है माँगा, विदुरानी से है माँगा ।
केले के छिलके माँगे, सुदामा की पोट खोली ॥
भक्तों से माँगा करता, द्रोपदी से भी माँगा ।
शाक का पत्ता लेकर, भिक्षा की बोली बोली ॥
ब्रज माँगना है सीखा, ब्रज नाचना है सीखा ।
सबने नचाया ऐसा, महारास लीला होली ॥
ब्रज गलियों-गलियों नाचा, ब्रज के खिरकों में नाचा ।
ब्रज के घरों में नाचा, खेली है नचनी होली ॥
ब्रह्मा भी नाचा ब्रज में, सब देव नाचे ब्रज में ।
लक्ष्मी रही तरसती, महारास देख डोली ॥
बरसाने श्याम आते, राधा को आ रिझाते ।
राधा भी रीझ जाती, ऐसी है राधा भोली ॥

तेरे दर पै है आया भिखारी, भर दे खाली ये झोली हमारी ।

मुरली वारे की तू है पियारी, नाम राधा श्री भानु दुलारी ॥
है गरीबों की सुनने वारी, है अनोखी तू करुणा वारी ।
कर दे कर दे कृपा राधिके तू, तू है दाता बड़ी देने वारी ॥
तेरे दर पै महादेव आये, गोपी बन नाचते रास पाये ।
मैं भी प्यासा हूँ रस को पिला दे, अरी रस बरसाने वारी ॥
तेरे दर पै खड़े गिरधारी, दाबते हैं चरण को बिहारी ।
तेरा ही प्यार है उनका जीवन, तुझ बिना ब्रह्म भी है दुःखारी ॥
तेरे दर के हैं हम दीवाने, कोई हमको बुरा अच्छा माने ।
हम तो दर पै पड़े ले ये आशा, राख में राख होवे हमारी ॥
कब से राधे तुझे हैं बुलाते, तेरे नामों की टेर लगाते ।
लैजा लैजा तू खबर हमारी, राधा कीरति सुकुमारी ॥
मेरा और सहारा न कोई, मेरी आस और नहीं कोई ।
ओ कुंजविहारिन प्यारी, राधा बरसाने वारी ॥
मैंने सौंपा सभी कुछ है तुमको, तू ही सर्वेश्वरी राधा प्यारी ।
चाहे अपनावै या ठुकरावै, मरजी तेरी है भानु दुलारी ॥
अपनाये तो भी शरण तेरी, ठुकराये तो भी शरण तेरी ।
मेरी गति एक तू ही रहेगी, मेरी मति कीरति की दुलारी ॥
तेरा गाँव बड़ा है प्यारा, बरसाने का रस सबसे न्यारा ।
गह्वरवन की लतायें निराली, सदा खेलें माधव औ प्यारी ॥
ओ होरी रंगीली वारी, ओ लठिया मारने वारी ।
पिचकारी चलाने वारी, वृषभानु नंदिनी प्यारी ॥

ओ रास रचावन हारी, ओ लहँगा फरिया वारी ।
ओ माथे चन्द्रिका वारी, शरणागत पालन हारी ॥
तेरा दर है बड़ा अति सुन्दर, जहाँ बन गया श्री मान मन्दिर ।
नामी ठाकुर है मान बिहारी, जहाँ लीला भई अति प्यारी ॥

झोपड़ी ब्रज में बना ली जायेगी ।
ब्रज की रज तन में रमा ली जायेगी ॥

श्याम प्यारे अब हमारे हो गये, अब उन्हीं से लौ लगा ली जायेगी ।
सौंपा इनको आज से हमने सभी, दासी चरणों से लगा ली जायेगी ।
ब्रज की गलियों में फिरेंगे झूमते, मीठी वंशी अब सुना दी जायेगी ।
श्याम श्यामा भी मिलेंगे खेलते, बिगड़ी किस्मत अब बना ली जायेगी ।
हार अँसुवों का बनाया है तुझे, बाँकी झाँकी अब दिखा दी जायेगी ।
सब चढ़ाते भेंट चरणों में तुम्हें, कर्मों की माला चढ़ा दी जायेगी ।
तुम हमारे हम तुम्हारे हे प्रभो, ऐसी भक्ति अब शुरू हो जायेगी ।
कोई भी नाता किसी से ना रहा, नातेदारी सभी तोड़ दी जायेगी ।
मैं किसी का ना रहा कोई मेरा, मैं मेरा उलझन मिटा दी जायेगी ।
तू तेरा सब मिट गया संसार का, इक तेरी लीला ही गायी जायेगी ।
तू ही प्यारा है जगत का एक ही, बस दुहाई तेरी ही दी जायेगी ।
तेरा ही बस है भरोसा ऐ प्रभो, यह सचाई से पकड़ ली जायेगी ।

हे ब्रज के जीवन ब्रज मोहन, तेरे बिन ब्रज ये कैसा हुआ ।

क्या हाल सुनाऊँ मैं अपना, भाग्य का सूरज डूब गया ॥
जो चमका कभी तू बन ज्योति, अपने दिल के अँधियारे में,
फिर आई विरह की रातें, मिलने का दिन अब डूब गया ।
जिन आँखों से तुझको देखा, अब उनसे किसी को क्या देखें,
तेरे साथ ज्योति चली गयी, आँखों का जोड़ा फूट गया ।
तू ही दिल था दिल का प्यारा, दिल की धड़कन दिल जान तू ही,
तू क्या बिछड़ा मेरी जान गई, जाँ गई चली जब तू ही गया ।
वह दिन भी जल्दी आयेगा, जब मैं न रहूँगा दुनिया में,
मेरी राख लिपट चरणों से तेरे, बोलेगी तुझको ढूँढ़ लिया ।
जिन कानों से वंशी सुनी, आवाज सुनी तेरे गीत सुने,
उन कानों से अब सुनना क्या, सुनने को कुछ ना रह ही गया ।
जिन हाथों से हरि तुझे छुआ, शीतलता प्रतिपल रहती थी,
उन हाथों से किसको छूऊँ, सब आग है मैंने मान लिया ।
जिन पाँवों से संग-संग तेरे, हम गाय चराया करते थे,
अब कहीं भी आना जाना क्या, मिलना सब ही से छूट गया ।
जिस जीभ से तुमसे बातें कीं, उस जीभ में छाले पड़ ही गए,
मुख भी अब खुलता नहीं जरा, क्या जाने मुख में क्या है हुआ ।
जिन आँखों में रहते थे सदा, तुम रात दिना सपना बनकर,
उन आँखों में अब नींद नहीं, आँखों का सपना टूट गया ।
जो ब्रज सुन्दर और शीतल था, अमृतमय था आनंदमय था,
मथुरा जाने के बाद तेरे, अब अग्नि कुण्ड सा बन ही गया ।

प्यार श्री चरणों से जोड़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

जगत से नाता है तोड़ा, जो होगा देखा जायेगा ॥

करो निंदा भले दो गालियाँ, जी भर मुझे सब मिल,

कान में तेल जो छोड़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

करें जो भोग परियों से, बने विष्ठा के वे कीड़े,

हमारा उनसे क्या होड़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

ये लूटा आज तक मुझको, इन्हीं इन्द्रिय डकैतों ने,

ये इनको मोड़ा दे कोड़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

न मुझको लोक की चिंता, नहीं परलोक की चिंता,

घड़ा आशा का है फोड़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

मधुर मुरली बड़ी प्यारी, बुलाती कृष्ण चरणों में,

हटाया जगत का रोड़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

हटाती हमको है माया, प्रभु के दिव्य चरणों से,

लुढ़काया हमने भी लोढ़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

आवारागर्दी करता था, ये मन आवारा दुनिया में,

दिया चाबुक मुड़ा घोड़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

काला मन था पापों से, पाप नाशन हो तुम कृष्णा,

मिला काले का है जोड़ा, जो होगा देखा जायेगा ।

इक बार आजा कान्हा दिल में बिठा लूँ,

तेरी गली में प्यारे नजरें बिछा दूँ ।
सिर पै सलोना प्यारा मोर मुकुट हो,
मेरी ये प्यासी आँखें प्यास तो बुझा लूँ ।
नील कमल-सी प्यारी कजरारी अँखियाँ,
सामने तो आजा मेरे आँख तो मिला लूँ ।
इक बार ब्रज में तूने बाँसुरी बजाई,
फिर से बजा दे वंशी दर्द तो दबा लूँ ।
बुझती है जीवन बाती तुझको बिना ही देखे,
तेरा दरस जो पाऊँ फूँक से बुझा दूँ ।
सेंदूर बिना ये सूनी मांग है सिर पै मेरी,
पाऊँ चरण की धूली मांग में सजा लूँ ।
आयी है याद तेरी कैसे मैं धीरज धारूँ,
इंद्र का कोप हुआ है गिरिवर उठवा लूँ ।
ब्रज में जब अग्नि लगी थी मुंजाटवी के वन में,
अग्नि पिया था तूने अग्नि बुझवा लूँ ।
नाथा था काली तूने विष से भरी थी जमुना,
खौला है विष अब आज भी यमुना सुधरा लूँ ।
ब्रजवासियों पै ब्रज में संकट जो आया,
दूर किया था तूने संकट हटवा लूँ ।

तेरा नाम ले-ले के मैं जी रहा हूँ ।

मरुँ नाम लेकर, यही मुझको दे-दे ॥
ये दिन के उजाले ये रातों अँधेरे,
मिलते हुए से ये शामों सवेरे,
बुझाते ही जाते ये जीवन की ज्योति,
हिलते पीताम्बर का झोंका तू दे-दे ।
पहाड़ों पै छाई थी कल चाँदनी जो,
गई यह कहाँ इक कहानी-सी बनकर,
मिला गर नहीं तू मुझे मेरी चाहत,
तो वन-वन भटकना ही तू मुझको दे-दे ।
वनों और निकुन्जों में तू इक रहेगा,
तेरी याद होगी न और कुछ रहेगा,
मुझे जीते-मरते रहे याद तेरी,
यही मुझको दे-दे यही मुझको दे-दे ।
न चाहूँ मैं हीरे न चाहूँ मैं मोती,
बुझाते हैं ये सबकी जीवन की ज्योति,
अँधेरा ही अँधेरा है इस दुनिया में,
अपने ही चरणों का उजाला तू दे-दे ।
न चाहूँ मैं मान बड़ाई जगत की,
न चाहूँ मैं मरने के बाद गती भी,
तेरा प्रेम माँगूं तेरी चाह माँगूं,

तू अपने चरन की तनक धूर दे-दे ।
गाऊँ तेरे गीत सारी उमर भर,
तुझको ही चाहूँ मैं सारी उमर भर,
सेऊँगा तुझको मैं सारी उमर भर,
सुनूँगा तुझे ही मैं सारी उमर भर,
तुझे भूलने से तो मरना है अच्छा,
न भूलें तुझे तू भले मौत दे-दे ।
मरने की तो मुझको चिन्ता नहीं है,
जीवन बिताने की चिन्ता नहीं है,
चिन्ता यही है मैं तुझको न भूलूँ,
तेरी याद ही जीवन, जीवन ये दे-दे ।
मरके भी मैं तेरी याद में ही जनमूँ,
चाहे सरग या नरक में मैं जन्मूँ,
याद ही है तू याद ही तेरा मिलना,
मुझे याद दे-दे मुझे याद दे-दे ।

आवो श्री ब्रजराज कुमारी ।

अँखियन की पलकन पै आवौ, जोहत अँखिया फारी ॥
मेरे मन मंदिर में आवौ, सूनी जगती सारी ॥
नतमस्तक पर श्रीचरनन की, रज चाहत दुःखियारी ॥
रज की आस पर्‌यौ हूँ रज में, हे बरसाने वारी ॥

तेरी गली में मरना तेरी गली में जीना ।

आँखों में आँसू भरके, होंठों से प्याला पीना ॥
खोया-सा दिल है रहता, मन में भरी उदासी ।
ढूँढ़ा ये करती आँखें, वह श्याम-सा नगीना ॥
बीता हुआ ज़माना, रह-रह के याद आता ।
न्यौछावर तुझ पै होती, ब्रज की सभी हसीना ॥
बिजली-सी चमक लेकर, आती थीं राधा प्यारी ।
अंक तेरे छिपती, तुझसे मिलाके सीना ॥
वंशी जो तेरी बजती, गायें भी दौड़ आतीं ।
चूमें यहाँ की धूर को, सब बनके दीन-हीना ॥
हमने यही है सोचा, ढूँढ़ा करेंगे हरदम ।
गलियों में पा ही लेंगे, किस्मत ने जिसको छीना ॥
हम कैसे जी रहे हैं, कैसे तुझे बतायें ।
इतना तू समझ ले, मुश्किल हुआ है जीना ॥
बिन तेरे अब न कोई, तू ही है एक सहारा ।
तू ही है भोर तारा, जिसने अँधेरा छीना ॥
तेरी याद में ए गिरिधर, कोई गीत गा रहा है ।
जाने कौन है बजाता, विरही स्वरों की वीणा ॥
ऊँची तेरी अटारी, ओ भानु की दुलारी ।
मैं चढ़ न पाऊँ ऐसी, सीढ़ी भी है कोई ना ॥
ये मोह का अँधेरा, चारों तरफ से घेरा ।
अब तो दरस दिखा दे, बरसाने की हसीना ॥

कृष्ण पर जान देने वाले कोई और होते हैं ।

नाम ले जीने मरने वाले कोई और होते हैं ॥
यूँ तो कीड़े हजारों उड़ते रहते आसमान हर दम,
मगर लौ पर ही जलने वाले कोई और होते हैं ।
कृष्ण से प्यार है जिनका, उन्हें दुनिया से क्या मतलब,
झूठे धोखे में फँसने वाले कोई और होते हैं ।
यूँ तो कछुए मगर बगुले वगैरह रहते पानी में,
मगर बिन पानी मरने वाले कोई और होते हैं ।
कृष्ण का नाम अमृत है, पिया मस्ती में वो झूमा,
भोग विष्ठा में रमने वाले कीड़े और होते हैं ।
यूँ तो बरसात में जल से हरी दुनिया भरी रहती,
मगर रट पीऊ प्यासे रहने वाले और होते हैं ।
जोगी बने हठ जोग करें, अष्टांग योग में लीन रहें,
मगर इक नाम में ही रमने वाले और होते हैं ।
वन में तपस्या करते कोई वायु पी-पीकर,
शुद्धा भक्ति से पाने वाले कोई और होते हैं ।
कर्मी बने, धर्मी बने, हो कर्म धर्म में लिप्त,
प्रेमा भक्ति से पाने वाले कोई और होते हैं ।
ज्ञानी बने, ध्यानी बने, हो ज्ञान ध्यान में लिप्त,
प्रभु के ही गुण गाने वाले कोई और होते हैं ।

हैं उधारे जो तुमने लाखों अधम ।

एक मुझको उधारो तो क्या होगा ॥
टूटी नरसी की गाड़ी सँवारी प्रभो,
एक मुझको सँवारो तो क्या होगा ।
हुंडी नरसी की चुकाई थी सांवलशाह,
खाता मेरा चुकाओ तो क्या होगा ।
भात रामा का भरा था ऐ साँवलशाह,
कुछ मेरा भी भरोगे तो क्या होगा ।
पी गई मीरा विष है बचाया प्रभो,
मुझे विषयों से बचाओ तो क्या होगा ।
थी तोता पढ़ाती वो गणिका भी तारी,
मुझको भी तारो तो क्या होगा ।
बिल्वमंगल को राह दिखाया जो अंधा,
राह मुझको भी दिखाओ तो क्या होगा ।
कानूपात्रा की तूने लाज बचाई,
लाज मेरी भी बचाओ तो क्या होगा ।
छान नामा की छाई थी हे दीनानाथ,
कुछ मेरी सुनोगे तो क्या होगा ।
पाँचों पांडव बचाये लाखागृह-आग सों,
भव-आग से बचाओ तो क्या होगा ।

मेरी आहें मेरे गीतों को सदा गायेंगी ।

कोई न सुने फिर भी खामोशियाँ सुनायेंगी ॥
हँसने की चाह ने मुझको है रुलाया कितना,
न हँसाओ नहीं ये आँखें छलक आयेंगी ।
रोया इतना कि मेरी आँखों में आँसू सूखे,
न रुलाओ नहीं ये जान चली जायेगी ।
देखना चाहा था मैंने चाँद को तुमसे,
क्या पता था घटा काली इधर छायेगी ।
कुछ भी बाकी न रहा मेरे दिल में देखो,
इसमें तो दरद भरी टीस ही बस पायेगी ।
आओगे नाथ अगर भूल कर भी तुम जो इधर,
तुम्हें करुणा यहाँ से न ले जा पायेगी ।
न मैं सुदामा न सुदामा-सा है प्रेम मुझमें,
रोये थे तुम वह आदत बदल ना पायेगी ।
क्या तुम वो नहीं हो बचाया था गजराज को जिसने,
मैं बुलाता कभी तो टेर गज की सी आयेगी ।
क्या तुम वो नहीं हो बढ़ायी जो साड़ी द्रोपदी की,
कभी तो वो टेर पांचाली की सी निकल आयेगी ।
क्या तुम वो नहीं हो विभीषण को शरण दी जिसने,
कभी तो मुझे भी वो शरण मिल ही जायेगी ॥

मनमोहन की वंशी बाजी, वृन्दावन के रास में ।

ब्रह्म लोक में ब्रह्मा नाचैं, शिव नाचै कैलाश में ॥
देव विमान पुष्प बरसावें, फूल गिरें आकाश में,
बादल थमे मृदंग बजावैं, वंशीधर के पास में ।
नाचत रुकी अप्सरा बँध गई, वंशी के सुरपाश में,
सुतल लोक व्याकुल बलि झूमे, शेषनाग सुखराश में ।
रमा सहित नारायण मोहे, वंशी की मिठास में,
शिव दुर्गा गणेश सरस्वती, राग ताल की तलाश में ।
पत्थर पिघल झरे झरना खिले, कमल सुचन्द्र प्रकाश में,
वृन्दावन के पक्षी नाचै, मोर नचैं रसराश में ।

साँवरिया लाड़ला तेरी यारी बड़ी मँहगी ॥

जो कोइ यारी करै सो वाकी, दुनिया सब ढहेगी ।
लोक लाज कुल धर्म आदि की, होरी-सी जलेगी ।
घर-बाहर की नातेदारी, जीवत ही दहेगी ।
गली-गली में मचे ढिंढोरा, बुरी-बुरी कहेगी ।
कारो रंग चढ़्यो जो वाको, कोऊ नाय चहैगी ।
बदनामी दुःख दर्द टीस की, नदिया-सी बहेगी ।
इतने पै धीरज धर-धर के, कैसे सब सहैगी ।
कृष्णप्रेम की नदिया गहरी, डूब के पार लगेगी ।

याद आई रे, श्याम तेरी आई रे, हाँ याद आई रे ॥

देखो एक दिना हम जाय रही, जब तुमने हँस इक बात कही,
तू आई है कहाँ ते आई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो वे बतियाँ जिय आय रहीं, जब तुमने हमरी बाँह गही,
भर आयी रे आँख भर आई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो जब हम जमुना न्हाय रहीं, तब तुमने हमरी चीर गही,
वे बतियाँ क्यों बिसराई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो जब हमरे सिर माँट दही, हम तुमको दही पिवाय रही,
दही कारण तुम्हें नचाई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो वृन्दावन जमुना तट पै, जब रास रच्यो वंशीवट पै,
तब संग-संग हमें नचाई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो जब जमुना विषैली थी, मरे ग्वाला सब गाय मरी,
तब काली तुमने नथाई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो ब्रज में आयो दावानल, जरन लग्यो ब्रज प्रगट अनल,
तब तुमने आग पिवाई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो कोप्यो सुरपति ब्रज पर, वर्षा भई ब्रज पर प्रलयंकर,
तब तुम गिरिराज उठाई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो जब यमुना विषमई भई, ग्वाला और गाय मरीं सब ही,
तब काली तुमने नथाई रे, हाँ याद आई रे ।
देखो जब दावानल ब्रज आयो, ब्रज को लाग्यो अगन जरायो,
तब तुमने आग पीवाई रे, हाँ याद आई रे ॥

दीनबंधु का द्वार खुला है, आना हो सो आवै

श्रीराधा का द्वार खुला है, आना हो सो आवै ।
अभयदान का दान बँट रहा, लेना हो ले जावै ॥
कोई कैसा पतित अधम है, कामी क्रोधी लोभी,
जिसे देख सब ही मुख फेरैं, ऐसा हो जो क्षोभी,
जिसे स्थान न नरकहु देवै, यहाँ जगह वह पावै, अभय दान.. ।
कोई जिसे सभी ठुकरावैं, ठोकर दर-दर खाता,
जिसका नहीं कोई दुनिया में, नहीं किसी से नाता,
जिसका नहीं सहायक कोई, कोई न अपनावै, अभय दान.. ।
दिन में आवै रात में आवै, सुख में दुःख में आवै,
जीते आवै मरते आवै, मल से लिपटा आवै,
जैसे माता की गोदी में नन्हा-सा शिशु आवै, अभय दान.. ।
इकले आवै दुकलो आवै, सब समूह ले आवै,
हँसतो आवै रोतो आवै, गाय नाच के आवै,
काल भयानक से डर-डर के, घबराकर आ जावै, अभय दान.. ।
अंधकार में भटक रहा जो, मारग कबहुँ पावै,
ज्ञान विराग नयन जो फूटे, मोह अँधेरा छावै,
ऐसा भी अंधा यदि कोई नाम सहारे आवै, अभय दान .. ।
जोग न जाने भोग न जाने, शास्त्र ज्ञान ना जाने,
सब साधन से हीन श्याम की शरण ही जाने आवै, अभय दान .. ।
तन बल नाहीं मन बल नाहीं, इन्द्रिय बलहू नाहीं,
धन बल नाहीं जन बल नाहीं, अपबल तपबल नाहीं,
सभी बलों से हीन परम निर्बल हो शरण में आवै, अभय दान .. ।

जगत रूठे तो रूठे, एक साँवरिया नहीं रूठे

यहाँ पर संग देता कौन, मुझ से भाग्यहीनों का,
अकेला चल पड़ा हूँ, यह जगत सब ही भले छूटे ।
कहाँ तक मैं सुनाऊँ अपनी, बरबादी जमाने को,
गजब माया तुम्हारी जो, सभी के देखते लूटे ।
करेगा कौन सच्चाई में, तुमसे प्रेम का सम्बंध,
आराधन कर सका वो जो, अहंता मारकर घूँटे ।
गरीबों पर दया दृष्टि की, आदत तुम नहीं भूलो,
मैं सुनता आया हूँ गणिका, अजामिल पे भी तुम तूटे ।
तुम्ही पालक सभी के हो, सभी के तुम ही हो रक्षक,
तुम्हारे देखते आखिर, ये माया क्यों हमें लूटे ।
तुम्हारा आसरा सच्चा, तुम्हारी शरण है सच्ची,
करोड़ों जन्म की गाँठें, तुम्हारी शरण में खूँटें ।
बंधा ये जीव माया में, काल-गुण-कर्म के बंधन,
तुम्हारी कृपा बिन मोहन, नहीं बंधन कभी छूटे ।
बंधे माया में जो उनको, कन्हैया तुम नहीं मिलते,
सभी बंधन कटे जिसके, वही तुमको मिले भेंटे ।
कटे जब जीव के बंधन, तभी तुम से वो मिल पाये,
ये बंधन पाप के फल हैं, ये मटकी पाप की फूटे ।

तुम्हारी राह में बैठे, थके हम बेसहारे हैं ।

तुम्ही बोलो कहाँ जाएँ, विपत्ती के जो मारे हैं ॥
ये नैया छोटी सी टूटी, भँवर में घिर गई भारी,
तुम्ही सोचो कहाँ डूबें, जो बिलकुल बीच धारे हैं ।
कटीली राह है टेढ़ी, पिया घर दूर है चलना,
कदम काँपै चले कैसे, अरे जो दम के मारे हैं ।
नगरिया दूर कान्हा की, पहुँचना है बड़ा मुश्किल,
सहारा उनके हाथों का मिलेगा, इस सहारे हैं ।
सहारा उनका न मिलता, सहारा जीव का जब तक,
सहारे औरों के छूटें, तभी मिलते वो प्यारे हैं ।
लगे मोहन ही प्यारे तब, प्यारे जग के सब छूटें,
होवे प्रेम जब तेरा, मिलते बंसीवारे हैं ।
न जप से तप से वे मिलते, न मिलते यज्ञ संयम से,
न मिलते ज्ञान जोग से ही, प्रेम बिन सब ही हारे हैं ।
तपस्वी तप किये हारे, औ हारे जोगी ज्ञानी भी,
आचारी धर्मी कर्मी हो, सभी साधन ये हारे हैं ।
रहे ना धर्म कलियुग में, ना व्रत और नेम कौ आधार,
रहे ना पाठ ना ही स्वाध्याय, ध्यानी हू हारे हैं ।
नहीं है दान ना सद्धर्म, न सत्पात्र न सत्संग,
नहीं हैं व्यास भी निर्लोभ कहूँ, धन नर को मारे हैं ।
नहीं है त्याग नहीं सत्पुरुष, नहीं सत्कर्म नहीं सेवा,
नहीं भक्ति न पूजा हू रही, सन्मार्ग हू हारे हैं ।
हारे हैं सभी साधन व साधक भी सभी हारे,
जो हारे सब तरफ से वो, शरण तेरी ही तारे हैं ।

किशोरी लाड़ली राधे, तेरे दर पै मैं आई हूँ,

जिसे ठुकराया दुनिया ने, वही दिल लेके आई हूँ ।
तुम्हारे जिन चरण की श्याम भी, करते सदा पूजा,
उन्हीं चरणों में खाली हाथों को, मैं ले के आई हूँ ।
तुम्हारी भेंट को तो, मेरी आँखों में नहीं आँसू,
यही इक टीस छोटी सी, हृदय में ले के आई हूँ ।
चढ़ाऊँ क्या भला मुझसा, नहीं दुनिया में है निर्धन,
हमारी धन तुम्हीं तो हो, यही सुनकर मैं आई हूँ ।
सुना है तुम अनाथों को, शरण देती हो श्री राधे,
यही सुनकर किशोरी जी, तेरे ही शरण आई हूँ ।
सुना जिसका न कोई साथी हो, न कोई सहारा,
मैं बिलकुल बेसहारे हूँ, सहारे तेरे आई हूँ ।
जगत में छोड़ जावें सब, सभी संबंधी जो बनते,
अकेली तुम निभाती हो, सभी को छोड़ आई हूँ ।
सुना है जब सभी बल ना रहे, निर्बल रहे प्राणी,
तुम्हारा बल उसे मिलता, यही सब सुन के आयी हूँ ।
सभी कर्मों को है छोड़ा, सभी धर्मों को है छोड़ा,
सभी नातों को है तोड़ा, शरण में तेरे आई हूँ ।
तुम्ही तो दीन शरणी हो, तुम्ही हो हीनों की शरणी,
तुम्ही शरणी अनाथों की, शरण मैं तेरी आई हूँ ।
हमारी एक लक्ष्य तुम, मेरी गंतव्य भी तुम ही,
हमारी एक गति तुम हो, इसी से शरण आई हूँ ।
न जानूँ मंत्र मैं कुछ भी, न जानूँ तंत्र मैं कुछ भी,
न जानूँ जप क्रिया विधि भी, तेरी शरणी मैं आई हूँ ।

ये चाहना मेरी बड़ी जुग-जुग से दिल में है,

कुछ मैं कहूँ, सुने तू, मेरे सामने रहे ॥
आया नहीं यहाँ यह लाचारी मेरी रही,
रहूँ तेरे दर पै ये मेरा भाग्य ही रहे ।
प्रीती प्रगट कर देना इक अपराध है यहाँ,
'निश्चय' ये प्रेमियों का मेरी जिंदगी रहे ।
जो शोर मचाता तेरे नामों का बजा ढोल,
तेरी नजर में ये दिखावा माफ ही रहे ।
बलिदान न प्रेमी ही हुए तेरे नाम पर,
रसना पै फिर भी नाम तेरा हर घड़ी रहे ।
तेरी कृपा बिना यूँ तेरा नाम न आता,
नाम के बिना ये जीवन मेरा न रहे ।
मरने के बाद लोग कहते नाम सत्य है,
'जीवित' जो नाम में जिये और नाम में रहे ।
नाम के बिना जो जिया व्यर्थ ही जिया,
जीना वही है जीना, मुख में नाम ही रहे ।
संतों ने ये कहा है तेरा नाम है बड़ा,
तुमसे बड़ा है नाम समझ ऐसी ही रहे ।
भामा ने दिया दान में, नारद को कृष्ण को,
नामी से बड़ा नाम दे, वापस वही रहे ।

मेरे सरकार मन मोहन, तू ही जग में हमारा है,

तुम्हारी याद में रोशन, नहीं तो जग अन्धेरा है ॥
नहीं कुछ ज्ञान है मुझमें, नहीं कुछ भी विरक्ति है,
बिना लाठी का अंधा हूँ, तुम्हारा ही सहारा है ।
दिया नर तन भजन को, मैंने जग में पाप कर डाले,
पतित पावन सुना तुमको, उसी से अब गुजारा है ।
सुनाऊँ तुमको कैसे मैं, नहीं कुछ भाव भक्ति है,
सुना तुम दीनबन्धो हो, वही मारग हमारा है ।
ये भवसागर बड़ा गहरा, ये इसमें मोह का पानी,
सुना तुम मोह नाशक हो, वही तो इक सहारा है ।
सभी की सुनने वाले हो, बड़े ही दीनबन्धो हो,
सुनोगे मेरी भी इक दिन, यही मैंने विचारा है ।
सुना गजराज की तुमने, उबारा द्रोपदी तुमने,
अनाथा थी सभा में, तू अनाथों का सहारा है ।
सभा में पांच पांडव थे, जो देवों को भी भारी थे,
बंधे थे धर्म बंधन में, बताओ क्या सहारा है ।
सभा में भीष्म जैसे थे, धरम के वे बड़े ज्ञाता,
धरम भी एक बंधन है, तुम्हीं ने यह विचारा है ।
सभी धर्मों को जो छोड़े, वही शरणागत है प्यारा,
नहीं तो बंधन में बँधता, शरण की दूर धारा है ।

तेरा प्यार जो मेरे साथ रहे, नरक से क्या और स्वर्ग से क्या ।

तेरे प्यार में काँटे बिछ जो रहे, फूलों से क्या काँटों से क्या ॥
माना हम माँगने वाले हैं, पर सब की भीख नहीं लेते,
फैलाते दामन कहीं नहीं, ये दर-दर ठोकर खाना क्या ।
हद माँगने की भी होती है, दाता तू चाहे बहुत बड़ा,
यह सर जो झुका सर पेश हुआ, फिर तुझसे ही हमें लेना क्या ।
कतरा-कतरा सब है तेरा, हर साँस अमानत है तेरी,
फिर तू ही बता दे ओ कान्हा, हम पेश करें नजराना क्या ।
यह दिल ही ग़रीबों की दौलत, किस्मत के मारे जो फिरते,
वो दिल ही मैंने तुझको दिया, अब और भला फिर देना क्या ।
तेरी गलियों में ही रहना, तेरे दर पै जीना-मरना,
गर इतनी कृपा जो तेरी रहे, फिर और रहा मुझे मिलना क्या ।
जब तक दुनिया की इच्छा है, तब तक तो प्रेम न हो सकता,
गर मिली रोशनी तेरी मुझे, अँधियारों में फिर रहना क्या ।
तेरा नाम ही सत्य पदारथ है, सब कुछ दुनिया में मरता है,
सच के मिलने के बाद कहो, झूठों का फिर से मिलना क्या ॥

हार निराश बुद्धि रही टेरी ।

करत नित्य अपराध दास बन, राधे यह उलटी गति मेरी ॥
ना मैं जानूँ अर्चन वंदन, ना कर सकूँ मैं सेवा तेरी ॥
भक्तिहीन गतिहीन अधम तन, बुद्धि बनी विषयन की चेरी ॥
अधमतारणी पतितपावनी, क्षमा करो न करो अब देरी ॥

लगन प्रभु से लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।

उन्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जाएगा ॥
कभी दुनिया से डरते थे, कि चुप-चुप प्यार करते थे,
प्यार अब जाहिर कर बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।
कभी ये ख्याल था दुनिया, हमें बदनाम कर देगी,
सभी पर्दा उठा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।
कभी डर था कि ये दुनिया, हमें तो छोड़ बैठेगी,
आज खुद दूर जा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।
हम प्रेमी बन गये तेरे, नहीं दुनिया से कुछ मतलब,
ये दिल तुझको चढ़ा बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।
दीवाने बन गये तेरे, नहीं औरों की कुछ इच्छा,
शरण हम तेरी आ बैठे, जो होगा देखा जाएगा ।
न मैंने धर्म की सोचा, नहीं सोचा अधर्मों की,
सिर्फ सोचा तुझे पाना, जो होगा देखा जायेगा ।
भले हो नरक या हो स्वर्ग, या हो कोटि यातनायें,
करोड़ों जन्म होवे नरक, तो भी देखा जाएगा ।
मिले मुक्ति कभी भी न, रहूँ सड़ता यहाँ निशदिन,
रही भक्तों के संग आशा, यही अब देखा जाएगा ।
प्रभु के भक्त प्यारे हैं, वही सदगति हमारे हैं,
प्रभु से हैं बड़े वे भक्त, इसी में देखा जाएगा ।
मुक्ति से है बड़ा सत्संग, मिले जो संत पुरुषों का,
उन्हीं के पद रज से पावन, प्रभु भी देखा जाएगा ।

तज दीन बंधु के चरन कमल, दुनिया के मुख देखा करते ।

वे नर कैसे जो तज अमृत, विष खा कर गर्व किया करते ॥
बहु वीर भये बलवान भये, जिन तीन लोक पर राज किये,
वे कहाँ बचे अब कहाँ गये, जो मद में नित फूला करते ।
जो खुद मरता वह औरों की, क्या रक्षा कर सकता प्राणी,
फिर दुख में घबराकर क्यों नर, पत्थर की नाव चढ़ा करते ।
सब बने भिखारी चाहत के, क्या राजा रंक धनी दुखिया,
फिर देंगे क्या यह भिखमंगे, इनकी क्यों आस किया करते ।
ये जग इक आग की भट्टी है, सब लोग यहाँ पै हैं जलते,
जल-जल कर जलते फिर भी क्यों, जग की ही आस किया करते ।
सब डूब रहे भवसागर में, कोई न पार पहुँच पाता,
बार-बार मरना जीना, इससे क्यों नहीं छूटा करते ।
कोई आज मरा कोई कल था मरा, सबही हैं ये मरने वाले,
अविनाशी के श्रीचरण छोड़, क्यों जीवों की आशा रखते ।
कुछ चले गये कुछ जाने वाले, जग में आसक्ति करते,
सबकी आसक्ति छोड़ सभी, क्यों नहीं युगल पद रति करते ।

श्री राधा प्रेम नदी उमड़ी ।

फैली ब्रज मण्डल वृंदावन, रस ही रस उमड़ी घुमड़ी ॥
नवजीवनी सोन चंपा तन, फूलन फूली फूल छड़ी ॥
पिय के तन में मन में हिय में, राधा मूरति रहति गड़ी ॥
श्याम सिंधु सों मिलति कुंज में, सदा रहत पिय अंक पड़ी ॥

चला आ रहा हूँ, चला आ रहा हूँ,

तेरी और बढ़ता चला आ रहा हूँ ॥
नहीं होश मुझको कि क्या कर रहा हूँ,
है अंदाज इतना चला आ रहा हूँ ।
कदम डगमगाते औ गिरते गिराते,
मैं खा-खा के ठोकर उठा आ रहा हूँ ।
न जां में जिगर में रहा कुछ भी बाकी,
न जाने मैं कैसे जिये जा रहा हूँ ।
न सीने में धड़कन रगों में न गर्मी,
जाने कैसे सफर किये जा रहा हूँ ।
बहुत मैंने पूछा कि मंजिल कहाँ है,
जरा भी न उसका पता पा रहा हूँ ।
ये अन्धों की आँखों का अंदाज लेकर,
सभी मुश्किलों को मैं ठुकरा रहा हूँ ।
पूरव न पश्चिम न उत्तर न दक्षिण,
सभी ओर से मैं बढ़ा आ रहा हूँ ।
जो आता तेरी ओर जग रोकता है,
फिर भी मैं चलता चला आ रहा हूँ ।
कब तक चलूँगा पता ये नहीं है,
जब तक जीऊँगा चलता रहूँगा ।
कब तक जीऊँगा पता ये नहीं है,

चंद-सी हैं श्वासें चढ़ा मैं रहा हूँ ।
आशा थी जिनसे निराशा मिली है,
धोखेबाजों को भुला मैं रहा हूँ ।
फँसा खुद बनाए जाल में अपने,
उसे काटना न समझ पा रहा हूँ ।

रस सागर श्री गोविन्द नाम है, रसना जो तू गाये ।

तो जड़ जीव जनम की तेरी, बिगड़ी हू बन जाये ॥
रसना गाये प्रेम लगाये, हिय में ध्यान रमाये,
जनम-जनम की जाय मलिनता, उज्जवलता आ जाये ।
परम मधुर यह नाम अमृत तज, काहे विष फल खाये,
जो तू खावे नाम अमृत फल, जीव अमर हो जाये ।
मिथ्या विषय विलास भोग में, अंधकार जिय छाये,
जो तू गह ले नाम महामणि, हिय प्रकाश आ जाये ।
भाव कुभाव से खीझ रीझ के, कैसेहु नाम जो आवै,
गिरते पड़ते जीते मरते, दुःख सुख नामहि गावै,
पाप नसें और भोग टलें सब, मंगल ही हो जावै ॥
मरते समय अजामिल ने जब, यमदूतों को देखा,
भय से काँप उठा बेटे को, जोर पुकारा लेखा,
नारायण सुन दूत भगे सब, हरि धामों में जावै ॥

रज बनकर मुझको रहना है, घनश्याम तुम्हारे चरणों में,

रज बनकर ब्रज में मिलना है, हो अंत तुम्हारे चरणों में ॥
चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने,
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
चाहे पावक में मुझे जलना हो, चाहे काँटों पै मुझे चलना हो,
चाहे छोड़के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो,
पर डग-मग नहिं मन मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह औ शाम रहे,
तेरे चरणों में ही शीश रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
परलोक की कोई चाह नहीं, सद्गति की कोई चाह नहीं,
मुक्ति की कोई चाह नहीं, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
चाहे सम्पत्ति सब नष्ट होय, चाहे दुःख विपत्ति नित्य होय,
चाहे मरण कष्ट सब नित्य होय, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
चाहे नरक यातना आती रहें, चाहे यम यातना मिलती रहें,
चाहे दुःख यातना घिरती रहें, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
चाहे जीवनभर दुःख मिला करे, चाहे सब जीवन दुःखमय ही रहे,
चाहे मृत्यु बाद भी दुःख ही रहे, पर ध्यान रहे श्री चरणों में ।
चाहे सुख सदा ही नहीं मिले, चाहे दुःख सदा ही बना रहे,
चाहे विषम परिस्थितियाँ ही मिलें, पर ध्यान रहे श्री चरणों में ।

इक बार मेरे दिल में, चले आइये गोपाल ।

सेवक गरीब है, कृपा दर्शाइये गोपाल ॥
कहने न देगी बात कुछ, ये दर्द की आहें,
रुकिये जरा कुछ देर, सुने जाइये गोपाल ।
सुनते नहीं कुछ भी भला, ठुकराना ही सीखा,
चरणों में सिर को रख दिया, ठुकराइये गोपाल ।
धिक्कार है जीवन मेरा, भोगों में जो डूबे,
अपने ही दर की धूल, बना डालिये गोपाल ।
आयेगी याद मेरी भी, एक दिन तुमको,
यह सोच समझ कर, न बिसराइये गोपाल ।
बादल बिना अखियाँ मेरी, बरसाती हैं पानी,
सूखी बगिया में बनके, घटा छाइये गोपाल ।
करने दया गरीबों पे, आये तुम दुनिया में,
समझ नहीं पाया मेरा, दुर्भाग्य है गोपाल ।
फिर भी न जाने क्यूँ भरोसा, अब भी तेरा है,
नासमझियों पे मेरी तरस खाइये गोपाल ।
मूढ़ मैं तेरी दया को नेक न समझा,
हम जैसे मूढ़ों पर भी, नजर डालिये गोपाल ।
तुम मुझको भूल जाओगे, तो मेरा क्या होगा,
मेरा सहारा और ना, यह समझिये गोपाल ।
अति तुच्छ हम जैसे तो, अगणित ही तुम्हारे हैं,
तुम जैसे मेरे एक हो, ये समझिये गोपाल ।

पिया प्रेम मोल में हैं बिकते, मुझे ही प्यार करना न आया ॥

प्यार क्या है समझ ना पाई, प्यार का वह आदर कर न पाई,
उनने देखा दयामय हो मुझको, मुझको नजरें झुकाना न आया ।
मैं तो भूली थी देख जवानी, मदमाती थी बनती सयानी,
दीनता ही पिया को है प्यारी, प्यार का ही तरीका न आया ।
मैंने चाहा था उनको खरीदूँ, उनको अपना बना के नचा लूँ,
पर पहले है खुद बिकना पड़ता, प्यार का सौदा करना न आया ।
वे तो गायों का गोबर उठाते, गोपियों का भी हेल उचवाते,
गोपियों का घड़ा भी उठाते, ऐसा सरल प्रेम न आया ।
जना बाई की चाकी चलाते, त्रिलोचन की चाकरी करते,
अन्तर्यामी जूठन माँजा करते, ऐसा भी तो है सुनने में आया ।
वे तो खाते जो जैसा खिलादे, वे हैं पीते जो जैसा पिलादे,
बैठते हैं जहाँ जो बिठा दे, उनको वश में ही करना न आया ।
जूठे बेर खिलाये शबरी ने, जूठे कौर खिलाये ग्वालों ने,
केले छिलके खवाये विदुरानी, मुझे उनसा खिलाना न आया ।
उनको घोड़ा बनाया ग्वालों ने, हराया जिताया ग्वालों ने,
गोपियों ने ताली दे नचाया, मुझे नचना नचाना न आया ।

कृपामयी निज कृपा दान कर ।

खोलहु निज भण्डार कृपा सौ, भिक्षुक एक अर्‌यो तेरे दर ॥
सदा करी दीनन पै करुणा, बरस्यौ ज्यौं लागत घन को झर ॥
परम उदार गुनन की आगर, राधा नागरि सुनहु ध्यान धर ॥

यह जग इक दुख का सागर है, तुम कृष्ण चरण में चलते नहीं ।

क्यों फँसे विकर्मों में प्राणी, तुम शरण पंथ पर चलते नहीं ॥
तुम दिव्य रूप हो दिव्य कान्ति, छोड़ो यह मायिक देह भ्रान्ति,
भ्रम तजकर पा लो नित्य शांति, तुम निजस्वरूप को लखते नहीं ।
हे अमर पुत्र अमृत भोजी, क्यों तुम हो विष्ठा विष भोजी,
मोती चुगते जो राजहंस, मांसाहारी वे बनते नहीं ।
यह जग इक रात का सपना है, नहिं कोई यहाँ पर अपना है,
जो सदा सनातन अपना है, तुम उसको क्यों अपनाते नहीं ।
यह जग इक काल का भोजन है, क्या दीन दुखी क्या राजा है,
जो कृष्ण शरण में पहुँच गये, वे काल चक्र में मरते नहीं ।
नर जीवन भव में मिलता नहीं, यह अवसर कर से खोना नहीं,
नर हो पशु पथ चलना छोड़ो, चलना है तो शुभ मार्ग चलो ।
नर जीवन एक बताशा है, घुल जाता अजब तमाशा है,
मत चलो मृत्यु पथ प्रतिक्षण तुम, चलना है तो अमरत्व चलो ।
नर जीवन मोक्ष द्वार प्राणी, इससे तू मत कर मनमानी,
मन दुष्ट शत्रु आधीन न हो, चलना है संयम मार्ग चलो ।
नर जीवन प्रभु से मिलने को, हरि भक्ति रसामृत पीने को,
विष्ठा विष विषय नरक छोड़ो, चलना है हरि रस सिंधु चलो ।

गौरनील पद कमल दिखावहु

नयन युगल अति प्यासे मेरे, युग पद कमल युगल दरसावहु ॥
हेम कंज अरुनील कंजमिल, मधु मकरंद सरस बरसावहु ॥
नखमणि बीस चन्द्रमा चमकत, मेरे मनहि तनक चमकावहु ॥

मेरा तो विश्राम किशोरी, एक तुम्हारे चरणों में ।

अब नहीं और से काम मुझे, बस आना है इन चरणों में ॥
चाहे जग को ठुकराना पड़े, चाहे जग मुझको ठुकराये,
चाहे दुख के पर्वत टूट पड़ें, पर आना है इन चरणों में ।
चाहे वन वन में फिरना हो, चाहे काँटों में घिरना हो,
चाहे जीवन अपमानित हो, पर आना है इन चरणों में ।
चाहे भूखे ही मरना पड़े, चाहे प्यासे नित्य तड़फना पड़े,
अगणित संकट से घिरना हो, पर आना है इन चरणों में ।
चाहे सागर में घुसना हो, चाहे पर्वत पर चढ़ना हो,
चाहे पावक में जलना हो, पर आना है इन चरणों में ।
चाहे शत् कोटि जनम होवें, चाहे शत् कोटि मरन होवें,
चाहे शत् कोटि जले काया, पर आना है इन चरणों में ।
चाहे छूटे जननी माता, चाहे छूटे जन्म दाता पिता,
चाहे छूटे सब जीवन साथी, आना है इन चरणों में ।
चाहे छूटे ये घर अपना, चाहे छूटे जग ये सपना,
चाहे छूटे जग के साथी, पर आना है इन चरणों में ।
चाहे दुनिया सारी छूटे, चाहे ये जगत छोड़ना हो,
चाहे छूटे तन मन धन जन, पर आना है इन चरणों में ।
चाहे मेरा परलोक जले, चाहे मरने पर नरक मिले,
चाहे दुःख यातना भले मिले, पर आना है इन चरणों में ।

मेरी टेर सुनो राधे, मैं तो आई शरण तिहारी ॥

भानु नंदिनी जगत वन्दिनी, रास रंगिणी श्री राधे ।
राधा रानी रस की खानी, सुख की दानी श्री राधे ।
सब जग छोड़ी ब्रज में दौड़ी, तुम सों जोड़ी श्री राधे ।
दुखिया प्राणी दरद न छानी, काहू न जानी श्री राधे ।
चरण सहारो मोकूँ भारो, आय संवारो श्री राधे ।
दरस दिखाओ रस बरसाओ, मोय अपनाओ श्री राधे ।
दो यमुना की नीली धारा, दो यमुना वट-वृन्दावन ।
बरसाना नंदगाव दो साँकरी, खोर और दो गहवर वन ।
दो राधा कुण्ड कृष्ण कुण्ड दो, गोविन्द कुण्ड दो गोवर्धन ।
निधिवन सेवा कुञ्ज दो वन, ब्रजका कण-कण सब है पावन ।

दीनवत्सले देखहु दीनन ।

श्री वृषभानुराय की बेटी, जगजीवन की हो तुम जीवन ॥
दर-दर सुख आशा में डोलत, स्वान सदृश चाटत जूठन कन ॥
तजि स्वरुप परतंत्र भयौ हौं, तेज रहित स्वांगी अरु निरधन ॥
चरन कमल की विमल प्रभाते, दीन हीन जीतें भव कौ रन ॥
गौरांगी तव गौर कांति से, निर्मल हो जावे मेरो मन ॥
अद्भुत प्रेमशक्ति सों पोषित, रस तरंग में डूबे छन-छन ॥
राधा पद रज राधा कुंजन, वास अखंड करूँ वृंदावन ॥

पिया प्रेम प्रेम है प्रीतम, ये मेरी समझ में न आया ॥

ठोकरें मैंने दर-दर की खायीं, जिय प्रेम नहीं सरसाया ।
वे तो आते चले नंगे पायन, गज टेर लगाना न आया ।
वे तो सुनते हैं दर्द की आहें, पांचाली सा दर्द न आया ।
वे तो बंधन में ही बँध जावैं, जसुदा-सा न बाँध पाया ।
वे तो खाते जूठन भीलनी की, शबरी-सा खिलाना न आया ।
वे तो नाचैं जो कोई नचाये, गोपिन-सा नचाना न आया ।
वे तो खेलैं जो कोई खिलावै, खेल गोविन्दस्वामी-सा न आया ।
सखाओं को कंधे बिठाते, ऐसा सखा भाव न आया ।
वे तो ग्वालों की जूठन भी खाते, ऐसा छाक खिलाना न आया ।
वे जसोदा की सांटी से डरते, ऐसा भाव मुझमें न आया ।
वे माँ के आगे रोया करते, ऐसा रोना रुलाना न आया ।
मैं तो भूला रहा विषयों में, मल-मूत्र मुझे ही भाया ।
मैंने छोड़ी अमरता प्रभु की, और मरण मार्ग अपनाया ।
दुर्भाग्य ज़रा मेरा देखो, दुःख भरा पंथ पकड़ाया ।
छूटीं दिव्य प्रकाश की किरनें, घनघोर अँधेरा छाया ।
झूठी दुनिया ये मिथ्या है सारी, इसमें सार नहीं है पाया ।
यह जग काँटों का जंगल, सुख फूल कहीं न पाया ।
प्रभु कृपा से पाया नर तन, यह अवसर भी है गँवाया ।
बीस लख जड़ योनी पाया, तरु सरि गिरि भटकाया ।
तीस लख तिरियक योनी में, पशु बन पूँछ हिलाया ।
दस लख भया पक्षी योनी में, नभ में जाय उड़ाया ।
ग्यारह लख कीट योनी में, कीड़े बन बिरमाया ।

नौ लख जलचर योनी में, पानी में भरमाया ।
चार लख नर वानर योनी, माया नाच नचाया ।
लख चौरासी जन्मों में, ऐसेई समय गँवाया ॥

प्यार की इक नजर से तो देखो, घाव दिल का दिखा हम रहे हैं ॥

दीनबंधो दया के हो सागर, तुमको ही बुला हम रहे हैं ।
भूल में इक नजर हम पर करिये, प्यासी नजरें बिछा हम रहे हैं ।
ऐ मेरे दिल के मालिक सुनो तो, दर्द दिल का सुना हम रहे हैं ।
सुनायेंगे जब तक न सुन ले, दर्द तुझमें जगा हम रहे हैं ।
तेरे दर से नहीं मुझको हटना, अपनी बैठक जमा हम रहे हैं ।
धूर दर की तेरे रखके सिर पै, बिगड़ी किस्मत बना हम रहे हैं ।
तेरे चरणों में हो बेसहारे, ये बसेरा बना हम रहे हैं ।
पग धोने को ही आँख भरके, ये आँसू बहा हम रहे हैं ।
इस तरह धो के चरणों को तेरे, सारे कल्मष मिटा हम रहे हैं ।
तेरी देहरी पै घिस-घिस के माथा, बद-किस्मत मिटा हम रहे हैं ।
जिस माटी में तू खेला करता, उसको माथे लगा हम रहे हैं ।
तू ही दीनों की है सुनने वाला, ऐसा विश्वास जगा हम रहे हैं ।
दाता तू ही गरीब निवाज़, गरीबी अपनी जता हम रहे हैं ।
तू सुदामा का पग धोवनहारा, तुझको अपना बना हम रहे हैं ।
लाज पांचाली की रखने वाले, लज्जा अपनी चढ़ा हम रहे हैं ।
हे अर्जुन के रथ हाँकनहारे, तुझे चालक बना हम रहे हैं ।

तेरे चरणों की छाया में आये हैं हम ।
तुम राखो न राखो तुम्हारी मरजी ॥

दर-दर डोला दर-दर देखा, पर तुझ जैसा तुझ को देखा,
ये पेश करी अपनी अरजी, तुम राखो न राखो तुम्हारी मरजी ।
दुनियावी यारी बड़ी सस्ती, ये तंग दिलों की है बस्ती,
हर शख्स में देखा खुदगर्जी, तुम राखो न राखो तुम्हारी मरजी ।
बदी मुझमें है नेकी है तुझमें, भरपूर मेहरबानी तुझमें,
सब लोग यहाँ के हैं फरजी, तुम राखो न राखो तुम्हारी मरजी ।
हम आये यहाँ पै ऐ गिरिधर, तू सबसे आला है नटवर,
नहीं छोड़ें तेरा दर यारा जी, तुम राखो न राखो तुम्हारी मरजी ।
तुम बोलो न बोलो मेरे प्यारे, हमें देखो न देखो मेरे प्यारे,
तुम आओ न आओ यहाँ प्यारे, मैं जाऊँ न ऐसा हूँ गरजी ।
रटता है पपीहा पीउ-पीउ, बादल पत्थर बरसाता है,
पर रटन न छोड़ा करता है, तुम सुनो न सुनो हमारी अरजी ।
जीवन भर भले न मेघ सुने, वह तो रटता है जीवन भर,
टेक न छोड़ेगा चातक, ऐसा प्रेमी है वह गरजी ।
विरहानल में जलने से ही, है प्रेम निखरता सोने-सा,
तुम तड़पाते हो तड़पा लो, मंगलमय है तेरी मरजी ।
तुम ही रहोगे सदा हमारे, मानो न मानो सदा तुम्हारे,
टेक मेरी ये ही प्यारे, अब किसी का नहीं है डर जी ।

हम पर दया दिखाओ वंशी बजाने वाले ।

अपना दरस दिखाओ करुणा दिखाने वाले ॥
तेरी राह में खड़े हैं, तेरी आस में पड़े हैं,
हम को जरा उठाओ, गिरिवर उठाने वाले ।
बहुतों का दिल चुराया, तेरी अजब अदा ने,
मेरा भी दिल चुराओ, माखन चुराने वाले ।
तुम भी हो काले मोहन, काला भी दिल मेरा है,
काले पै रंग चढ़ाओ, काले कहाने वाले ।
कोई नहीं है मेरा, मुझको सहारा तेरा,
बिगड़ी मेरी बनाओ, बिगड़ी बनाने वाले ।
पांचाली नग्न होती, गोविन्द नाम टेरा,
मेरी भी टेर सुन लो, दीनों की सुनने वाले ।
अर्जुन का मोह नासा, मैदाने जंग तुमने,
मेरा भी मोह नासो, गीता सुनाने वाले ।
ग्राह ने गज को था पकड़ा, वह छूट जो न पाया,
तुमने छुड़ाया उसको, गज को छुड़ाने वाले ।
हम भी हैं मोह लिपटे, अन्धकारों ने है घेरा,
उस मोह को हटाओ, माया हटाने वाले ।
माया ने दिया डेरा, चारों तरफ से घेरा,
मुझको भी आ बचाओ, सबको बचाने वाले ।
प्रहलाद को उबारा, ध्रुव को भी है उबारा,

किसको नहीं उबारा, दीनों की सुनने वाले ।
दावाग्नि ने था घेरा, मुंजाटवी फँसे वो,
ब्रज गोपों को उबारा, दावाग्नि पीने वाले ।
काली के विष से मरे, सब गाय गोप ग्वाला,
काली को जाकर नाथा, काली नथाने वाले ॥

सब द्वारन को छोड़, द्वार तेरे आयो री ॥

श्रीराधा बरसाने वारी, तू है दयालु भोरी भारी,
करुणा की मूरति है प्यारी, अलबेली स्वामिनी सुकुमारी,
सब ते नाते दिए तोड़, द्वार तेरे आयो री ॥
सुनी सबै अवतारन लीला, सुनी विभव बैकुण्ठहि लीला,
सुनी देव सब देवी लीला, सुनी बड़ी ऐश्वर्यन लीला,
सब ते मन लियो मोड़, द्वार तेरे आयो री ॥
बिना प्रेम रस नहिं ईशता, प्रेम देव सब को ही देवता,
ब्रह्म बिक्यो ब्रजप्रेम वश्यता, नाचै प्रेम बिकी भगवत्ता,
रस-लीला बेजोड़, द्वार तेरे आयो री ॥
यह रस महालक्ष्मि नहिं पायो, ब्रह्मा हाथ मीड़ पछतायो,
शंकर गोपी बनकर आयो, नाचत रास रंग में भायो,
सब बंधन को तोड़, द्वार तेरे आयो री ॥
ऐसो मोह्यो ब्रह्म नचै ह्याँ, राधाचरनन को सेवे ह्याँ,
देय महावर चरनन में ह्याँ, राधा कौ पद सेवे हरि ह्याँ,
उन पद सों रति जोड़, द्वार तेरे आयो री ॥

कोई भला कहे या बुरा कहे, हम हो गये राधारानी के ॥

हमने कोशिश की खुश रखने की, पर दुनिया ये खुश न रही,
अब तो खुश कोई रहे न रहे, हम हो गये राधारानी के ।
हमने कोशिश की दुनिया में बदनामी अपनी न होवे,
अब धब्बे लगे धुले न धुले, हम हो गये राधारानी के ।
हमने कोशिश की प्यारे बनें, सब तो हमसे ही प्यार करें,
अब कोई प्यार करे न करे, हम हो गये राधारानी के ।
हमने कोशिश की सबके हम, अच्छे ही बने जमाने में,
अब हमको सही कहें न कहें, हम हो गये राधारानी के ।
हमने कोशिश की दुःख के खंडहर, ढह जावें सुख मिला करे,
अब दुःख सब ही ये ढहें न ढहें, हम हो गये राधारानी के ।
हमने दुनिया के क्रूर भाव, सब सहे हजारों जन्मों में,
अब मेरी कोई सहे न सहे, हम हो गये राधारानी के ।
कुछ चिंता नहीं है आगे की, कुछ दुःख भी नहीं है पीछे का,
चिंता न रही कहीं कुछ भी, हम हो गए राधारानी के ।
जीने की तनक नहीं चिंता, मरने की थोड़ी नहीं फिकर,
चिंता श्री राधा चरणों की, हम हो गए राधारानी के ।
लोक वेद सब है छोड़ा, दुनिया में सबसे सब मुख मोड़ा,
बस एक यही है अब मन में, हम हो गये राधारानी के ।
एक भरोसा श्रीजी का, आशा है केवल श्रीजी की,
श्रीजी का राधा नाम रटें, हम हो गए राधारानी के ॥

आवाज मुझको दे-दे, गौयें चराने वाले ।

वंशी ज़रा सुना दे, वंशी बजाने वाले ॥
उंगली पै धार गिरि को, ब्रज डूबते बचाया,
मुझको ज़रा उठा दे, गिरिवर उठाने वाले ।
जंगल की आग पीकर, गौ-गोप को बचाया,
भव-आग से बचा ले, भव को बुझाने वाले ।
काली को तूने नाथा, नाचा जो सौ फनों पै,
विषयों का विष छुड़ा दे, काली नथाने वाले ।
ग्वालों को भी अघासुर, मुख से छुड़ा जिलाया,
पापों से तू हटा ले, अघ को मिटाने वाले ।
पूतना को भी उधारा, विष पीकर के स्तनों का,
मेरा भी भव छुड़ा दे, भव को छुड़ाने वाले ।
कागासुर को भी मारा, जो कौवा बन के आया,
हमको उधारो मोहन, उद्धार करने वाले ।
श्रीधर की जीभ ऐंठी, गोकुल में था जो आया,
मुझ पर भी दया करदे, दया भरे दिल वाले ।
प्रलंब को भी मारा, जो ग्वाल बनकर आया,
मेरा कपट भी हर ले, माया मिटाने वाले ।
व्योमासुर को मारा, जो छद्म करके आया,
मेरा भी छद्म हर ले, छल को मिटाने वाले ।
वत्सासुर को मारा, जो बछड़ा बनके आया,
निश्छल मुझे बना दे, निश्छल कहाने वाले ।
बकासुर को भी मारा, बगला का रूप आया,
हिंसा को तो मिटा दे, हिंसा मिटाने वाले ॥

मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में ।

दिन-रात बाट देखूँ, बैठा तेरी गली में ॥
माना कि तेरे लायक, हम तो नहीं हैं प्यारे,
हम ढूँढते तुझे हैं, तन-मन सभी से हारे ।
दीवाने टेरते हैं, तुझको तेरी गली में ॥
हालाँकि तेरे दर के, योग्य नहीं हैं प्यारे,
फिर भी मैं बेसहारा, आया तेरे सहारे ।
रहने दे मुझको दाता, दो दिन तेरी गली में ॥
सच है कि तेरी सेवा, कुछ भी हुई न मुझसे,
मैं पूछता कृपा बिन, सेवा हुई है किससे ।
मरने दे मुझको प्यारे, अपनी ही इस गली में ॥
चरणों में श्वास निकले, आज्ञा तू इसकी दे-दे,
इच्छा भी होगी पूरी, मरने में होगा आनंद ।
इस ब्रज में रज बनूँ मैं, दाता तेरी गली में ॥
दीवाना इक था कोई, गलियों में दम जो छोड़ा,
सिर भेंट जो किया था, सिर और दर न तोड़ा ।
कुछ दिन तो होगी चर्चा, प्यारे तेरी गली में ॥
ब्रज-गलियों में प्यारे, कभी तू जो खेलता था,
दिखता नहीं है श्याम, तू ही तेरी गली में ॥
बरसाने की ये गलियाँ, ये गह्वरवन की कुंजें,
तेरे बिना हैं सूनी, सूनापन इस गली में ॥

मोहन सुजान दिन रैन रटें राधे राधे ।

जागत में राधे राधे, सोवत में राधे राधे,
राधा बनी जीवन प्राण, रटें राधे राधे ।
बरसाने राधे राधे, गहवरवन में राधे राधे,
नन्दभवन नन्दगाँव, रटें राधे राधे ।
वृन्दावन राधे राधे, गोवर्द्धन में राधे राधे,
राधाकुंड रावल गोकुल गाम, रटें राधे राधे ।
पनघट पै राधे राधे, जमुना पै राधे राधे,
राधा रटन परी बान, रटें राधे राधे ।
कुंजन में राधे राधे, लतन में राधे राधे,
सब ब्रज राधा ही भान, रटें राधे राधे ।
दिन में हू राधे राधे, रात में हू राधे राधे,
सब पल राधा ही गान, रटें राधे राधे ।
गावत में राधे राधे, नाचत में राधे राधे,
राधा ही को मुख गान, रटें राधे राधे ।
बंसी में राधे राधे, राग अलापत राधे,
राधा ही बन गई तान, रटें राधे राधे ।
माखन चोरन में राधे, दधि लूटन में राधे राधे,
राधा ही ले जब दान, रटें राधे राधे ।
गैया चरावत राधे, बछरा चरावत राधे,
गैया दुहावत राधा नाम, रटें राधे राधे ।
जमुना नहावत राधे, घाटों पै राधे राधे,
चीर चुरावत राधा नाम, रटें राधे राधे ॥

रस के रसिया श्याम, श्याम रस मुझे पिलादे ।

हाय रे अपना रंग दिखा दे ॥

ऐसा रंग जो कभी न छूटे, सब छूटे चाहे तन भी छूटे,
अपनी प्यारी झलक साँवरा तनक दिखा दे, हाय रे अपना .. ।
यह रस प्याला नीलकंठ पिया, भया बावरा नंगा फिरिया,
वो ही प्याला प्रेम बावरा मुझे चखा दे, हाय रे अपना .. ।
ब्रज में प्याला गोपीजन पिया, लाज छोड़ कर तुझसे मिलिया,
रास रंग में नाच रहीं वो मुझे दिखा दे, हाय रे अपना .. ।
यह रस-प्याला मीरा ने पीया, विष को अमृत बना दिखाया,
विषधर काले नागों का फिर हार बना दे, हाय रे अपना .. ।
यह रस पी गई झालीरानी, मीरा-सी नाची मस्तानी,
सेना का पहरा न पहरा मुझे दिखा दे, हाय रे अपना .. ।
पी गई रस करमैतीबाई, सेना उसको पकड़ न पाई,
सड़े ऊँट में छिपी रही यों लगन लगा दे, हाय रे अपना .. ॥

निकले मरण व्रत ले के हम तेरी तलाश में ।

स्वागत है मृत्यु का भी जो आयेगी राह में ॥
माना कि तेरे प्यार के, योग्य नहीं सजन,
संकल्प है बड़ा ही दृढ़ अपने विचार में ।
बस देखना तुझी को है, आशा की दृष्टि से,
आँखे खुली रहेंगी ये, मरने के बाद में ।
मरता नहीं है कोई भी, बीमार प्रेम का,

जाती चली है साँस, दम लेने की चाह में ।
हमने किया है वादा, एक तुझसे मिलने का,
मिलके ही हम रहेंगे, चरण धूलि धाम में ।
माना कि तेरा मिलना, पापियों को न संभव,
असंभव को भी संभव, होता देखा भक्ति में ।
आएगा एक दिन यहाँ, दर्शन वो देने को,
बैठा ये कोई कह रहा, निज हृदय धाम में ।
वो कौन-सा दिन होगा, आयेगा मेरे सजन,
विरही विरह में बैठा हूँ, तेरी ही राह में ।
सब दुनिया फीकी लगती है, तेरे बिना प्यारे,
ऐसा भी क्या है रस, हरि तेरे ही ध्यान में ।
तेरी याद आती है मुझे, जब-जब कृपानिधान,
होगी कृपा कभी तो, मैं बैठा हूँ आस में ।
तू गायों को चराता हुआ, आये जब गोपाल,
बन खाक लिपटूँ चरणों में, चराहगाह में ।
कब देखूँगा जुगल जोड़ी, कुन्जों में विचरती,
गलबैयाँ दे रही हैं, राधारानी साथ में ॥

सरस मधुर वृषभानु लाड़िली ।

गहवर कुंजन केलि करत नित, हरि की चित्तचाड़िली ॥
मंदिर मान करति पिय चरननि, लोटत मिलत माड़िली ॥
कबहूँ कृपा करेगी राधा, आशा और छाँड़िली ॥
भव-समुद्र अति घोर भयानक, तुम बिन कौन काड़िली ॥

दिलाना याद हे नटवर, दिले भोरी किशोरी में ।

पड़ा ले आस कोई दर पै, गह्वरवन की खोरी में ॥
रसीली रस भरी अखियाँ, तुम्हारा दिल करें घायल,
सदा बरसाती करुणा जो, शरण कीरति किशोरी में ।
बड़ी दाता बड़े दिल की, निराली शान है जिनकी,
खड़े रहते सदा हैं ब्रह्म, देकर हाथ झोली में ।
कहानी मेरी दरदीली, बड़ा विरही है मेरा दिल,
इधर भी नजर हो जाये, जले ज्योति अँधेरी में ।
अन्धेरा दूर होगा तब, जब भी रोशनी होवे,
तेरी होवे जो रोशनी, प्रभो माया अँधेरी में ।
अनेकों चाँद प्रगट होवें, बिखेरें प्रेममयी किरणें,
मधुरता फिर भी न पावैं, जो वृन्दावन की कुंजों में ।
गौरता ऐसी मधुरी है, दामिनी माला न पावैं,
चंचलता चमकी छिप जाती, न होती थिरता चमकन में ।
चरण की उपमा ना होवै, खिले जो फूल गुलाबों के,
सदा खिलते ही रहते हैं, खिलावट ऐसी चरणों में ।
नहीं कोमलता भी पाई, चाहे माखन हो मलाई हो,
हृदय की मृदुता न देखी, कहीं भी दिव्य देवियों में ।
शरद पूनो को आया चाँद, समय जो रास का आया,
रासेश्वर भये आश्रित, राधा गौर चरणों में ।
किया वंशी में राधा नाम, सिद्धि फिर बजी वंशी,

भई तब मोहिनी अद्भुत, सभी लोकों में कण-कण में ।
सुना वंशी रमा मोही, मोहे नारायण भारी,
सुनो वंशी बजी वृन्दावन, प्यारी रास लीला में ।
मोहे शिव चले कैलाश, छोड़ा आये वृन्दावन,
बने गोपी गोपीश्वर बन, नाचैं रास लीला में ।

बुलाता रह ऐ भोले मन, वो आये या नहीं आये ।

न आशा छोड़ ये आहें, मेरी खाली नहीं जायें ॥
भरोसा रख वो सुनता है, वो दर्दे दिल का चाहक है,
वो इक दिन टेर निकलेगी, कि जिसपे दौड़ वे आयें ।
विरह सागर अकेला मैं, अभागा मैं कहाँ जाऊँ,
लहर कोई तो आयेगी, किनारा चूमती आये ।
हृदय में मोरमुकुटी को, बसा ले ध्यान करता जा,
न जाने किस घड़ी में सामने, तेरी वो हो जायें ।
ग्राह ने गज को जो पकड़ा, लड़ा वह बरस हजार पूरा,
अंत में टेर जो निकली, नंगे पैर वो आये ।
बुलाती द्रोपदी हरि को, सभा में लाज रखने को,
भरोसे छोड़े पतियों के, दौड़े चीर बन आये ।
चला ब्रह्मास्त्र उत्तरा पै, पुकारा कृष्ण को हे नाथ,
घुसे हरि गर्भ में ले चक्र, परीक्षित को जा बचाये ।
वनों में आग जो फैली, लगा ब्रज ही सभी जलने,

पुकारा कृष्ण को दौड़ो, दावानल पी के बचाये ।
इंद्र ने क्रोध कर ब्रज पर, गिराया प्रलय का पानी,
पुकारे गोप रक्षा को, प्रभु से गिरिवर उठवाये ।
रास में हरि भये अंतर्धान, गोपियाँ विरह समुद्र डूबीं,
लगी गाने विरह के गीत, पुकारा हरि तहाँ आये ।
तुम्हारे जन्म लेने से, बिरज बैकुंठ से सुन्दर,
शरण लक्ष्मी ने ली आकर, हमें तुमने है तड़पाये ।
जो तड़पाना ही ऐसे था, बचाया इंद्र से ब्रज क्यूँ?
प्रलय के जल में जाती डूब, विरह-दुःख न सहा जाए ।
भला था काली विष मरती, विरह तो अब कठिन सहना,
दावानल में जल जाती, विरह-अग्नि क्यूँ जलाये ॥

सुनियो टेर हमारी, ओ वृषभानु दुलारी ।

वंशी में जो श्याम ने टेर्‌यो, रास रच्यो सुखकारी ॥
ब्रह्मा ने टेर्‌यो पद रज हित, कियो तपस्या भारी ॥
पर्वत रूप दियो बरसाने, ब्रह्माचल पदचारी ॥
शिव ने टेर्‌यो रास दरसहित, ओ रासेश्वरी प्यारी ॥
नाचत गोपीश्वर मण्डल में, अद्भुत गति लयकारी ॥
मेरी टेर सुनोगी कबहूँ, आसा एक तिहारी ॥
चापत चरन बिहारी निशिदिन, नित्य सुहागिन भाग बड़ी ॥
नित्य बिहार महारस सुख की, राधा पदरेणुका कड़ी ॥

बजी थी रात भर पायल, सुना मैंने सितारों से ।

बिछाई नजरें मैंने पर, न आहट आयी कदमों से ॥
तुम्हारे बिन दशा मेरी, बयाँ मैं क्या करूँ तुमसे,
मुझे लूटा सभी ने ही, मज़ा ले ले बहारों से ।
कली ने खोला जो घूँघट, चमन में हुस्न निखराया,
मिलेगा चैन सोचा था, गिरी बिजली नजारों से ।
लहर उठ-उठ के कहती है, न जाने क्या ये कहती है,
बुलाती ही रहेगी तुमको, ये अपने इशारों से ।
न आये तुम यहाँ मैंने, बुलाया तुमको हर इक रात,
रखूँ धीरज बता दो तुम, कभी आकर नजारों से ।
मिलेगा चैन इक दिन, तुम्ही से मैंने ये चाहा है,
लगेगी पार मेरी, डूबती नैया किनारों से ॥

ब्रज की तो जीवन ही श्यामा ।

बिन जीवन जीवत हौं देखो, यह कैसी गति वामा ॥
अति ही निलज न रंच प्रेम पद, विषयन में विश्रामा ॥
जग जीवन हरि हू की जीवन, श्री वृंदावन धामा ॥
श्री बरसाने प्रगट भई हैं, श्री राधा नामा ॥
विद्युत श्री गौरांगी प्यारी, मयंक मुखी रामा ॥
जगदात्मा कृष्ण की आत्मा, पूर्णकाम की कामा ॥

हम निर्बल तुमको टेर रहे, तुम सुन लेना, तुम सुन लेना ।

हम थके निराश दुःखी भारे, तुम आशा दीप जला देना ॥
किसको टेरैं है कौन यहाँ, सुनता है कौन गरीबों की,
तुम दीनबंधु ही सच्चे हो, दीनों पर दया दिखा देना ।
यह भवसागर है घोर अगम, हम डूब चुके हैं हारे दम,
गज की सी अंतिम टेर समझ, अब भी तुम हाथ बढ़ा देना ।
यदि नहिं आये तुम नटनागर, हे शरणपाल करुणासागर,
ये हँसी तुम्हारी ही प्यारे, कुछ तो करुणा बरसा देना ।
भक्तों ने यश गाया पल-पल, उसको भी सोचो भक्त वछल,
तेरे चरणों में पड़े हुये, अपना लेना अपना लेना ।
तुम आओगे तुम आओगे, इस आशा में मैं जीवित हूँ,
आशा मेरी करना पूरी, ऐसी करुणा बरसा देना ।
तू करुणा का है सिंधु प्रभो, तू ही है करुणा का सागर,
तेरी करुणा बरसा करती, घनश्याम नाम दिखला देना ।
कितने जुग बीत गये प्यारे, कितने दिन बीत गये तुझ बिन,
आगे भी क्या ऐसी होगी, तुम यह आकर समझा देना ।
तुम ही कण-कण में रहते हो, तुम व्यापक हो सर्वत्र सदा,
तुम तो सर्वान्तर्यामी हो, यह भी अनुभव करवा देना ।
रोम-रोम में हो मेरे, मेरी हर श्वासों में हो तुम,
मेरे प्राणों में रहते हो, तुम प्राणनाथ कहला लेना ।
गाया है वेदों ने यह, श्रुतियों संतों ने भी गाया,
प्रभु भक्तों के वश हैं यह भी, प्रत्यक्ष ज़रा दिखला देना ।

हे जग मंगल, मंगल यश तेरा, हम मंगल हित गाये रहे ।

हे कृष्णचंद्र-चन्द्रिका कृपा से, हिय शीतल और शांत रहे ॥
हे जगत-पूज्य तेरी पूजा, करते विधि हरि हू पूज रहे,
मेरी पूजा है हास्य मात्र, यह तुम्हें हँसाती नित्य रहे ।
सब बहु विधि पूजा करते हैं, लाते हैं भेंट चढ़ाने को,
बहु मोली वस्तु चढ़ाते हैं, करते हैं यतन रिझाने को ।
मैं तो अनजान अकिंचन हूँ, कुछ भी मैं भेंट नहीं लाया,
हूँ भक्तिहीन और ढीठ प्रभो, बस खाली हाथ चला आया ।
सिर पर है गठरी लदी पाप की, लाता भी तो क्या लाता,
इससे मैं शरण न आया अब तक, आता भी तो क्या आता ।
अपनी पूजा की भेंट मान लो, इसी दीन को करुणामय,
जैसे तैसे मानो अपना, दीनबंधु हरि गिरिधर नागर ।
मुंडमाल सर सर्पमाल और, आप दिगंबर गंगाधर हर,
कालकूट गल नीलकंठ पर, मंगलकारी युगल नाम धर ।
महारास में नाचै शंकर, अद्भुत महारास रस पायो,
मान सरोवर आसुरी मुनि युत, सखी वेष श्री कृपा से पायो ।
सब ने पाई है युगल कृपा, वह युगल कृपा हम चाह रहे,
रसिक कृष्ण रसमयी राधिका, रस वृन्दावन माँग रहे ॥

हर रात रंगीली होती है ।

है दया दयामय तेरी यह, हर रात यज्ञोत्सव होता है ॥
जहाँ भक्त तेरे गुण गाते हैं, आनंद में नाचा करते हैं,
बैकुंठ छोड़ तू आता है, रसमण्डप में रस भरता है ।
नहीं योग्य मैं इसके था, जो तेरी कृपा को पा भी सकूँ,
आश्चर्य है इस दयालुता का, ये कैसा तमाशा होता है ।
जो धूर थी सब के पैरों की, रुख हवा से वो आसमाँ चढ़ी,
अब सब के सिर पर चढ़ती है, ऐसा भी तमाशा होता है ।
अलबेला दाता तू दिलबर, मनमोहन छैला तू नटवर,
जब तू राधे संग होता है, क्या से क्या तू हो जाता है ।
है यही विनय मेरी तुझ से, बस धूर बना इन चरणों की,
न्यौछावर है सब ब्रज जिन पर, जिनको जग चूमा करता है ।
ब्रज के सब गोपी और ग्वाला, गैया भी आराधन करते,
लता पता पशु पंछी आदि, सब पर कृपा तू करता है ।
तू ऐसा रंगीला है दिलबर, ब्रजवासी तेरे इष्ट बने,
जो जैसा नचाया करता है, तू ऐसा नाचा करता है ।
माँ जसुदा के मटके फोड़े, माँ ने तुझको ले बाँध दिया,
साँटी ले तुझको डरपाती, तू आँसू बहाया करता है ।
जिसके डर से वह काल डरे, छिन में ब्रह्माण्ड बनाता है,
ऐसा जो तू है शक्तिमान, माँ के डंडे से डरता है ।
जिन चरणों की सेवा करती, महालक्ष्मी भी धन की देवी,
ऐसा दानी तू ब्रज-गलियों में, छाछ भी माँगा करता है ॥

मैं ना जाऊँगा अब तेरे दर से, चाहे ठोकर लगा दे कदम से ॥

जिन्दगी सम्हलेगी न मेरी, जो गिरायेगा तू ही नजर से ।
मैं भटका बहुत मेरे मालिक, प्यासे नैनों से आँसू ही बरसे ।
हर जगह मैंने तुझको ही ढूँढ़ा, रह गये नैना मेरे तरसे-तरसे ।
वक्त की लहरों में रहा बहता, बेसहारे इधर से उधर से ।
मेरी उजड़ी रही थी दुनिया, आँधियाँ जो चली थीं प्रलय से ।
तू बना दे या चाहे बिगाड़े, है तेरी हर अदा मेरे सर से ।
चलता हूँ मैं जमी को पकड़ कर, दर से हट न जाऊँ ऐसे डर से ।
ब्रज की गलियों में ढूँढा तुझी को, मैंने पूछा लता पत्ते-पत्ते से ।
मैंने गोकुल की गलियों में ढूँढ़ा, ग्वालों से गायों बछड़ों से ।
मैंने जमुना की लहरों से पूछा, तुमने देखी वे आँखें कमल से ।
मैंने गोवर्धन जाकर भी ढूँढ़ा, गिरिराज की हर इक शिला से ।
मैंने वृन्दावन जाकर भी ढूँढ़ा, कहीं भी न मिला तू किधर से ।
आया बरसाने राधा गुण गाया, मिला सोते-सोते सपने से ।
ऐसी समता तू दे दे गोपाला, मैं फूलूँ कभी भी न सुख से ।
ऐसा धीरज तू दे दे गोपाला, मैं रोऊँ कभी भी न दुःख से ।
ऐसा ज्ञानी बना दे तू प्यारे, मुरझाऊँ न अपमान भय से ।
ऐसा ज्ञान मुझे दे दे प्यारे, खुश होऊँ नहीं मैं इज्जत से ।
लाभ-हानि दोनों इक जैसे, दुःख-सुख भी दोनों एक जैसे ।
मौत जीवन दोनों एक जैसे, अच्छा बुरा समय इक जैसे ।
हर रूप तेरा मुझे प्यारा, हर पहलू लगे तुझ जैसे ॥

तेरे दर पै आये हैं, तुम द्वार जरा खोलो

हम टेर लगाते हैं, तुम सुन के जरा बोलो ॥
हम हैं अनाथ भटके, विषयों में हैं अटके ।
यह दीन दशा देखो, अखियाँ अपनी खोलो ॥
मैं चरणों का चेरा, यहाँ कोई नहीं मेरा ।
मैं तेरे सहारे हूँ, तुम मुझको मत छोड़ो ॥
तुम्हें छोड़ कहाँ जाऊँ, किसके आगे रोऊँ ।
कोई नहीं सुनता है, तुम तो मेरी सुन लो ॥
यह जग दुःख का सागर, भर देता दुःख गागर ।
तुम ही दुःख मोचन हो, तुम मुझको मत टालो ॥
बिन तेरी कृपा नागर, सब डूबे भव सागर ।
नहि कोई बचाने को, आओ बाहें पकड़ो ॥
छोड़ा तुमको जब से, दुःख पाया है तब से ।
मत देखो पाप मेरे, कर्मों को मत तोलो ॥
ये काया पापों की, मन विष्ठा विषयों का ।
इन्द्रिय बुद्धि गन्दी, तुम कृपा करो धो लो ॥

कमलांगी पद कमल धरहु शिर ।

आयो शरण विकल यह प्राणी, भवतापन सौं जलत रह्यौ घिर ॥
कृपा दृष्टि सौं ताप शमन कर, लेहु उठाय न फिर जावै गिर ॥
देहु वास श्री बरसाने में, मणिमय भानु नृपति को मंदिर ॥

करदे दया दयालो, हम तो पड़े है दर पै ।

भव सिन्धु में हैं डूबे, पापों का भार सिर पै ॥
रहने दे मेरे पिछले, पापों का लेखा जोखा ।
न गिन सकेगा कोई, छाले पड़े जो दिल पै ।
हारा हुआ हूँ मोहन, मैं सब तरफ से हारा ।
आदत बुरी ना छूटी, आई जो मौत सिर पै ।
तेरी नजर से उतरा, वह फिर कभी न चढ़ता ।
वह फिर कभी न उतरा, जो चढ़ गया नजर पै ।
जिसका नहीं है कोई, तू ही सहारा बनता ।
छोड़ा जिसे है तूने, डूबा वोही लहर पै ।
सुन ले मेरी सदा तू, दाता दया के सागर ।
हम टेरते बुलाते, आयेगा कब इधर पै ।
सब का सहारा तू ही, आँखों का तारा तू ही ।
तेरे बिना न कोई, जीता है इस जगत पै ।
चंदा में तू चमकता, सूरज में रोशनी तू ही ।
तारों में झिलमिलाता, बरसा के हर कणों पै ।
पानी की हर लहर पै, तू ही है लहरा करता ।
हवा में तू ही बहता, हर फूल की सुगन्ध पै ।
हर साँस का तू है, आधार प्राण बन कर ।
सबका तू है जीवन, प्राणों का प्राण बन के ।
जग का बनाने वाला, औ पालन करने वाला ।
जगदाधार आत्मा जग रूप, तू ही सब बन के ।

मैं तेरा हूँ तू ही हमारा है, नहीं कोई यहाँ हमारा है ॥

कोई भी न मिला जमानें में, ढूँढ़ डाला ये जगत सारा है ।
बने साथी हजारों ही मेरे, संग जाता न कोई प्यारा है ।
छोड़ दे छोड़ दे सभी रिश्ते, डूबा इनका लिया सहारा है ।
स्वार्थियों से जो प्रीती की तूने, फूटा आँखों का बीच तारा है ।
मेरा सिर तेरे दर पै ही रहे, मेरी किस्मत का तू सितारा है ।
याद तेरी जो मेरे दिल में रहे, क्या हुआ डूबे बीच धारा है ।
तुझे भूला रहा भटकता मैं, याद तेरा ही इक सहारा है ।
याद मीठी है मिश्री से ज्यादा, तेरे बिना ये जगत खारा है ।
चाहे कितना भी सजा ले कोई, बिना तेरे मिट्टी का गारा है ।
सोना चाँदी हीरा माणिक मोती, हमने सब कुछ तुझी पे हारा है ।
ढूँढा करती हैं आँखे तुमको ही, यही तो बचा बस एक चारा है ।
तू नहीं मेरे सामने प्यारे, तेरे नाम का ही इक सहारा है ।
लोक और लाज जला दिया मैंने, वेद मर्यादा को अब जारा है ।
मान सम्मान लोक का मैंने, धूल-मिट्टी समझ के झारा है ।
मोह सागर में डूबा हूँ अब तक, आसरा तेरा भव का पारा है ।
छाया अन्धकार सारी दुनिया में, मिला तेरे नाम का उजारा है ।
सुख संपत्ति जग की तेरे बिना, सिर्फ इक बोझ बड़ा भारा है ।
फँसा अभागा जो प्रपंचों में, दीनों के नाथ को बिसारा है ।
सभी बंधन जो मोह ममता के, तोड़ा झटके से दिया टारा है ।
सभी डर आपत्तियों के जो थे, उनको कूड़े में दिया डारा है ।
लोक परलोक की सभी चिंता, चिता बना इन सबको जारा है ।

किया तुमने जो करोगे, सदा अच्छा ही हुआ ।

भक्तों के मंगल रूप, सदा मंगल ही हुआ ॥
तुम न आये जो मेरे पास, ये अच्छा ही हुआ,
न सहा कष्ट आने का, ये भी अच्छा ही हुआ ।
मैं तो रोता ही रहा, रोना ही है जिंदगी में,
तुमने न देखे मेरे आँसू, ये अच्छा ही हुआ ।
बेसहारा था कभी मेरा, वो घर जो उजड़ा,
होके बेदर तुझे ढूँढ़े, ये अच्छा ही हुआ ।
टूटे से तार पै छेड़ी थी, बेसुरी सी गजल,
तुमने न सुना मेरा वो गीत, ये अच्छा ही हुआ ।
विरह के ताप से हुआ, प्रकाश जो मन में,
हर तरफ देखता तुझी को, ये अच्छा ही हुआ ।
कोई भी ना रहा सहारा, दुनिया में मेरा,
झूठे टूटे सब सहारे, ये अच्छा ही हुआ ।
कोई भी न रहा दुनिया में, जो आँसू पोंछे,
सहानुभूति झूठी टूटी, ये अच्छा ही हुआ ।
झूठी दुनिया की सभी प्रीति, तो झूठी ही है,
झूठों को झूठा ही समझा, ये अच्छा ही हुआ ।
तू ही सच्चा है साथी, तेरा नाम ही सच्चा,
ये समझ आई है सच्ची, ये अच्छा ही हुआ ॥

करते हैं प्रेम लाखों, पर प्रेम रीति तो सीखो ।

बातें बनाते ऊँची, राहों पै चलना सीखो ॥
हैं दिन बिताते भोग में, विषयों का सुख जो लेते,
मछली तड़प के मरती, मरना तड़पना सीखो ।
क्यों आहें भरते हर दम, बदनाम प्रेम करते,
हँस-हँस जले पतंगा, हँस-हँस के जलना सीखो ।
सर्वस्व का समर्पण, कहना करना अलग है,
सिर खुद ही काट देना, हाड़ी रानी से सीखो ।
प्यासा पपीहा मरता, पर पानी और न पीता,
बस आन पै ही मरना, पपीहे से ही सीखो ।
दुःखों से हैं घबराते, बातें हैं ऊँची करते,
हँस-हँस सूली पै चढ़ना, बाई जना से सीखो ।
घबराते थोड़े में क्यूँ, घबराये थे न कूबा,
दबे अस्सी हाथ नीचे, श्रीकूबाजी से सीखो ।
थोड़े में ही थक जाते, हैं हाथ-पाँव जब अच्छे,
बिन हाथ-पाँव के भक्ति, यह कूर्मदास से सीखो ।
परहित विष पीने वाले, शंकर तो क्या बनोगे,
हरि हित विष पीने वाली, मीराबाई से सीखो ।
भक्ति में भी भय करते, विश्वासी भी हैं बनते,
निर्भय जा सिंह को लिपटी, रत्नाबाई से सीखो ॥

मेरा ये रूप देखने वाले, अपनी ही आँखों से प्यार करते हैं ।

करते हैं प्यार का अहसान मुझ पै, स्वार्थपूरा ही किया करते हैं ।
मेरे इस तन से लिपट कर कहते, मेरा हृदय औ प्राण तू ही है,
प्राण से क्या न प्राण जो जाने, वासना में वो मरा करते हैं ।
लिपट के मुख को चूमने वाले, भोगी कामाग्नि बुझा लेते हैं ।
प्रेम तो गोपनीय होता है, ये कभी न प्रगट किया जाता,
प्राण देने का वादा जो करते, प्रेम बदनाम किया करते हैं ।
ऐसा ही प्रेम जगत में फैला, जिसको संसारी किया करते हैं ।
प्रेमी जो सच्चे छोड़कर सब कुछ, मुरली वाले से प्यार करते हैं ।
क्रिया तो श्वान व शूकर जैसी, शुद्ध प्रेमी बने फिरते हैं ।
चाटकर रक्त अपने गालों का, कुत्ते हड्डी में प्रसन्न होते हैं ।
मल पा हिलाता पूँछ शूकर, यूँ भोग पा प्रसन्न होते हैं ।

श्री जी को अब पाना है री । श्री जी को अब पाना है री ॥

और नहीं कुछ पास मेरे, प्राणों की भेंट चढ़ाना है री ॥
हा करुणामयी स्वामिनि राधे, कह-कह उन्हें बुलाना है री ॥
तेरे द्वारे मरूं या जीऊँ, इसे छोड़ नहि जाना है री ॥
भूखे प्यासे प्राण तजूँ पर, और आस नहि लाना है री ॥
प्यार करो चाहे ठुकरावो, तव पद सीस झुकाना है री ॥
आओ या ना आओ, तेरी आस में जनम बिताना है री ॥
तेरी आस पर्यो तेरे द्वारे, तुमको यही बताना है री ॥
राधे अपनी दीन दशा की, तुमको याद दिलाना है री ॥
तुम करुणा बरसाने वारी, अपनी टेर सुनाना है री ॥

मो अँधरे की दृष्टि किशोरी ।

घोर अँधेरौ उर में छायो, चेतन दृष्टि अविद्या फोरी ॥
बीहड़ भव वन मे भटकत हौं, काल व्याल धावत है जोरी ॥
बिन लाठी को अँधरौ डोलै, गिरत परत है ढ़ोरी ढ़ोरी ॥
कछू उपाय न जानूँ श्यामा, अशरण शरण शरण लई तोरी ॥

सब का दुलारा है, मेरा कृष्ण कन्हैया ॥

भक्त तुम्हारे प्राण पियारे, भक्तन के नयनन के तारे,
भक्त रखवारा है, मेरा कृष्ण कन्हैया ।
प्रेम विवश जूठन हू खाये, प्रेम विवश नाचे नचवाये,
प्रेम पियारा है, मेरा कृष्ण कन्हैया ।
जहाँ भक्त को दुःख ने घेरा, वहाँ चक्र का किया उजेरा,
ब्रज उजियारा है, मेरा कृष्ण कन्हैया ।
भक्त जहाँ पर रहे तहाँ ही, रहै कृष्ण तिन संग सदा ही,
भक्त आधारा है, मेरा कृष्ण कन्हैया ।
भक्त जो खावै सोई खावै, जूठो मीठो ध्यान न लावै,
भक्त सहारा है, मेरा कृष्ण कन्हैया ।
भक्त करें कीर्तन तहँ आवै, नाचै जैसे भक्त नचावै,
प्रेम संचारा है, मेरा कृष्ण कन्हैया ।
भक्तन की सेवा सुख जानै, भक्त वैर से वैर ही मानै,
दुष्ट संहारा है, मेरा कृष्ण कन्हैया ॥

नंदलाल क्या गये, मेरी दुनिया चली गयी ॥

नील कमल आँखें और चाँद का सा मुखड़ा ।
ओ मोर मुकुटी तेरी चितवन कहाँ गयी ॥
दिन-रात बजा करती, वह बांस की बाँसुरिया ।
अब भी है गूँज मन में, वह धुन कहाँ गयी ॥
आँखों की ज्योति था वही, आँखें भी मेरी थी ।
अब कैसे किसको देखिये, आँखें चली गयी ॥
विरह की आँहें उठती, सुनता नहीं है कोई ।
अब कैसे किसको टेरिये, आवाज ही गयी ॥
मन था वही मनमोहन, मन का भी प्यारा था ।
उसके बिना ये जिन्दगी, शव जैसी ही भयी ॥
ऐ प्राण तुम भी जाओ, जहाँ प्राणनाथ हों ।
जीने की तुमसे मुझको भी आशा चली गयी ॥
जीऊँ मैं कैसे हाय, बताओ तो दीनानाथ ।
आशा मेरी गई, निराशा ही बढ़ गयी ॥
जीके भी क्या करूँगा, बोलो दया के सिंधु ।
तेरे बिना ये जीवनी, अब बोझ बन गयी ॥
दिन भी नहीं है कटता और कटती नहीं रातें ।
करवट बदल बदलते, सारी रात यूँ गयी ॥
जाऊँ ना उठ के अब मैं, यहाँ से कभी नहीं ।
आने जाने की हे प्रभो, आदत चली गयी ॥

इक वो भी समय था, कि तू रहता था आँखों में ।
तेरे बिना इस जीवन में, रसहीनता भयी ॥
वो दिन भी थे जब, तू ही एक प्राण था मेरा ।
तेरे बिना न प्राण, प्राणहीनता भयी ॥

तेरे दर पै हैं आये बताने, हम भी मोहन हैं तेरे दीवाने ॥

तूने ब्रज में था माखन चुराया, गोपियों का भी चीर चुराया,
तूने मेरा भी चित्त चुराया, आये हैं तुझको ये ही जताने ।
छोड़े दुनिया के नाते जो झूठे, प्रेम के सब सम्बन्ध हैं छूटे,
महफ़िलों के तराने भी टूटे, आये हैं बस तेरे ही कहाने ।
देखा दुनिया का सब कोना-कोना, सब तरफ देखा रोना ही रोना,
सब लुटके हुआ खोना-खोना, आये हालत ये अपनी दिखाने ।
ठोकरें सबने ऐसी लगाई, टूटा दिल पर न आवाज आई,
ये सिसकती हुई सी तन्हाई, आये तुमको सिसक निज सुनाने ।
ऐ मेरे दिल के मालिक कन्हाई, करदे-करदे दया मन की भायी,
तेरे दर पै है टेर लगाई, आये भाग्य को अपने जगाने ।
हम जाएँ कहाँ ये बता दे, कुछ तो अपनी दया दिखला दे,
ऐसा कौन है और दीनबंधु, कहाँ जाएँ व्यथा को सुनाने ।
ब्रह्मा भी जहाँ कुछ न समझा, वरुण भी हुआ जो भौचक्का,
जहाँ शंकर भी नाचा उचक्का, हम भी आये तेरे यूँ कहाने ॥

तेरे नाम पै लुट गये लाखों हरे, अब हम भी लुट कर देखेंगे ॥

मैंने सुना प्रह्लाद जो बालक था, हरिनाम का कीर्तन करता था,
उसको जो जलाया अटल रहा, अब हम भी जल कर देखेंगे ।
मैंने सुना विभीषण निशिचर था, रावण ने लातों से मारा था,
पिट-पिट प्रभु आश्रय नहिं छोड़ा, हम भी हरिनाम न छोड़ेंगे ।
मैंने सुना जो बाई मीरा थी, हरिनाम में नाचा करती थी,
सर्पों के विष से जो न डरी, हम भी निर्भय अब नाचेंगे ।
मैंने सुना निताई औ हरिदास, सिर फूटे बाजारों में भी पिटे,
हरिनाम प्रचार किये जग में, हम भी कुछ सह कर देखेंगे ।
मैंने सुना जो रानी रत्नावती, कर रही कृष्ण पूजा आरती,
हरि जान सिंह से लिपट गई, हम भी दुखों से लिपटेंगे ।
मैंने सुना करमैतीबाई थी, सड़े ऊँट में छिप जो गयी,
भव के बंधन से बचने को, अब हम भी बच कर देखेंगे ।
मैंने सुना कि सक्खूबाई थी, पंडरपुर को जो भागी थी,
वो मरी जली जीवित भी भई, हम भी अब जग से भागेंगे ।
मैंने सुना कि नामा भक्त भये, घर लगी आग को प्रभु समझा,
ब्रह्मभूत में हरि देखा था, अब हम भी सब में हरि देखेंगे ।
जनाबाई जन सेवा करती, प्रभु संग-संग चाकी पिसवाते,
सूली लोहे की पिघल गई, जन सेवा हम भी सीखेंगे ॥

क्यों करता है मेरा-मेरा, यहाँ कोई नहीं है तेरा ।

बन मोहन का साँचा चेरा, करले उसके ही दर पे डेरा ॥
एक रात के साथी सब हैं, बैठे सब डालों पे संग हैं,
सभी भोर ही उड़-उड़ जाते, कभी ना वे मिलने पाते,
ये चिड़िया रैन बसेरा, यहाँ कोई न साथी तेरा ॥
छूटै साथी बचपन के, साथ जिनके खेला करते,
घूमते खेलते संग जिनके, छूटै यार दोस्त जीवन के,
छूटै गाँव नगर सब खेरा, यहाँ कोई नहीं हैं तेरा ॥
छूटै माता जनम देने वाली, जो करती सदा रखवाली,
छूटै भाई पिता परिवारा, छूटैगी तिरिया तेरी दारा,
छूटै घर जिसमें तेरा डेरा, यहाँ कोई नहीं है तेरा ॥
करले प्रेम तू श्यामसुंदर से, राधावल्लभ गिरिधर से,
जो साथी मरण जीवन के, जो स्वामी सब त्रिभुवन के,
होगा देह राख का ढेरा, यहाँ कोई नहीं है तेरा ॥
साथी एक वही है कन्हैया, जमुना तट वंशी बजैया,
ग्वाल-बाल संग गाय चरैया, गोपिन संग रास रचैया,
साथी तिरिया नहीं है तेरी, जिससे फेरा पड़ा था तेरा ॥
साथी वही जो जन्म समय था, साथी मरन का वो ही रहेगा,
दुःख का भी वही है साथी, सुख का भी वही है साथी,
एक कृष्ण ही है जीवन साथी, यहाँ कोई नहीं है तेरा ॥
साथी वही जो मरने में होगा, उनको साथी तू अपना बना ले,
जग की अपनी तू प्रीति हटा ले, मोह के सब बंधन हटा ले,
उठने वाला है तेरा डेरा, क्यों करता है मेरा-मेरा ॥

मर के भी हम जी रहे हैं, श्याम बस तेरे लिये ।

चंद सांसें भर रहे हैं, श्याम बस तेरे लिये ॥
जीने को मैं जी रहा पर, जीवनी कोई नहीं,
तन का बोझा ढो रहे हैं, श्याम बस तेरे लिये ।
मत पुकारो दूर से, मुझको कहीं सुनता नहीं,
फिर भी खोले कान बैठा, श्याम बस तेरे लिये ।
आना जाना बंद है, मिलना किसी से है नहीं,
फिर भी हर दम मैं भटकता, श्याम बस तेरे लिये ।
कुछ भी बातें मैं नहीं करता किसी से ऐ सजन,
फिर भी कहता कुछ अकेले, श्याम बस तेरे लिये ।
कब का अंधा बन चुका हूँ, देखता कुछ भी नहीं,
फिर भी आँखे खुल रही हैं, श्याम बस तेरे लिये ।
कोई भी आता नहीं है, कोई भी जाता नहीं,
फिर भी दिल में है प्रतीक्षा, श्याम बस तेरे लिये ।
भावनाएँ मन की कहती, आयेगा इक दिन जरूर,
लौ हमारी लग रही है, श्याम बस तेरे लिये ।
बाट बैठा देखता हूँ, रात दिन मोहन तेरी,
टेर मेरी लग रही है, श्याम बस तेरे लिये ।
आँखों की पलकों से झारा, करता हूँ तेरी डगर,
मेरी आसा लग रही है, श्याम बस तेरे लिये ।
आँखों में झाई परी हैं, बाट तेरी देखते,
जीभ में छाले पड़े हैं, टेरते तेरे लिये ॥

तेरे प्यार में मनमोहन, सब कुछ लुटा चले ।

सब कुछ लुटा कर भी, हँसते हँसा चले ॥
कोई नहीं है घर कहीं, ना कोई दर अपना,
पाई जहाँ भी चर्चा तेरी, रुकते वहाँ चले ।
सब कुछ भी भूला-भूला, खुद को भी तो भूला मैं,
कुछ भी न साथ मेरे, इक तेरी याद ले चले ।
हस्ती है जो बनाते, बनाया वे करें,
हमको नहीं बनाना, पग धूर बन चले ।
इक दिन मेरी ये राख, छुयेगी तेरे चरण,
आशा में तेरी, आखिरी साँसें लुटा चले ।
सब कुछ भी छोड़ा दुनिया में, जो कुछ हमें मिला,
आखिर था छूटना, हम पहले ही छोड़ चले ।
कोई ना साथ जाता, इस दुनिया की रीति है,
इकले ही सब हैं जाते, इकले ही हम चले ।
इक आग है ये दुनिया, सब कुछ यहाँ जलता,
ऐसा न बचा कोई, जो जग में ना जले ।
मुर्दे चिता जलाती, जीवित जलाती चिंता,
यह काल सब को खाता, सब लोक हैं जले ।
बचता है भक्त प्रेमी, जो हरि का नाम लेता,
गोपाल से प्रेम करले, अविनाशी ना जले ।

जो करना आज करले, कल ना रहेगा जग में,
फिर क्या करेगा जब जम, पकड़ेगा आ गले ।
फिर बोल ना पायेगा, कुछ देख ना पायेगा,
ठंडा जड़ तू होवेगा, जब मौत के तले ।
सच्ची है शरण प्रभु की, सच्चा है नाम हरी का,
सच्ची है सेवा प्रभु की, जहाँ प्रभु जी मिले भले ॥

भज ले हरि कौ नाम, नाम ये अमृत है ॥

ये दुनिया मुर्दों का मेला, जन्म मृत्यु का है ये खेला,
अंत मृत्यु परिणाम, नाम ये अमृत है ।
महल दुमहले व्यर्थ बनाता, नाश से कोई बच ना पाता,
मिट गये कितने गांव, नाम ये अमृत है ।
बड़े-बड़े राजे महाराजे, तीन लोक में बजते बाजे,
रहे न नाम निशान, नाम ये अमृत है ।
एक दिना मिट जावैं सारे, सूरज चाँद मिटै ये तारे,
चल वृन्दावन धाम, नाम ये अमृत है ।
झूठे नाते रिश्ते सारे, झूठे सगे सम्बन्धी सारे,
झूठा ये धन धाम, नाम ये अमृत है ।
झूठे सारे भोग विलासा, झूठी झूठों की सब आशा,
झूठा जग को नाम, नाम ये अमृत है ।

ले ले हरि को नाम, काया दो दिन की ।

चौरासी लख जोनी भटका, जनम मरन के दुःख में अटका,
झूठे जग के काम, काया दो दिन की ।
भीतर बाहर गन्दी काया, विष्ठा भोगन में भरमाया,
देख लुभाया चाम, काया दो दिन की ।
सुत दारा ये मन ही लुभावै, अंत समय कोई काम न आवै,
छूट जाये धन धाम, काया दो दिन की ।
अजहूँ ले हरि की शरनाई, कृपा सिंधु राधिका कन्हाई,
भज ले आठों याम, काया दो दिन की ।
श्वास-श्वास पै रट ले राधा, जन्म मरण की कट जाय बाधा,
मिले वृन्दावन धाम, काया दो दिन की ।
सेवा कर ले भक्त जनन की, प्रभु से बड़े कृष्ण भक्तन की,
मिले अचल अनूपम ठाम, काया दो दिन की ॥

करुणामयी पुकार सुनो अब ।

काम क्रोध मदमोह लोभ के, बीच घिरयो आधीन रह्यो दब ॥
परम विवश वानर ज्यौं नाचत, नट बनमोहि नचाय रहे सब ॥
पीड़ित द्वार परयौ हूँ तेरे, कृपा दृष्टि सों देखहुगी कब ॥
मेरी दशा तब ही सुधरेगी, आप सुनोगी करुण कथा जब ॥
कौन पुकारे कौन सुने जब, प्राण चले जाये तन से तब ॥

सहारा लिया अब तक, जिस-जिस का हमने,

वो खुद डूबते थे, भँवर में बिचारे ॥
वो क्या तारते जो कि खुद न तरे हैं,
किसी ने न तारा डूबे बीच धारे ।
जो खुद काल के वश विवश मर रहा है,
रोकेगा क्या वो काल के वेग भारे ।
जो खुद कर्म के वश सदा नाचता है,
वो क्या कर्म जारे जिसे कर्म जारे ।
जो खुद ही गुणों का बना है खिलौना,
वो क्या खेलेगा निर्भय खेल सारे ।
जो खुद डर रहा बन्धनों में बँधा ही,
करेगा वो क्या निर्भयता के द्वारे ।
कोई क्या बनेगा सहारा किसी का,
जो खुद ही भटकता रहा बेसहारे ।
सहारा उसी का सहारा सही है,
ये चलती है दुनिया जिस के सहारे ।
सभी डूबे ले ले सहारा यहाँ का,
न जाने क्यों रहते किसी के सहारे ।
उसी के सहारे ये चाँद और सूरज,
जमी भी टिकी है उसी के सहारे ।
बड़ा वो सहारा है मिलता उसी को,
जो उसके सहारे बने बेसहारे ।
सहारा सभी का है कृष्ण कन्हैया,
कन्हैया भी है राधा रानी सहारे ॥

तेरे दर पै लगा लिया डेरा, क्या बिगाड़ेगा कोई भी मेरा ॥

शरणागत बन गया हूँ मैं तेरा, मिट गया काल का भी है फेरा ।
चूमे थे थूक होंठों के अब तक, उन्ही ओंठों से चूमां दर तेरा ।
सोयी थी आज तक किस्मत मेरी, आ जगी ये जो मिला दर तेरा ।
मिटे सब रंग दुनिया के झूठे, रहा इक रंग सांवला तेरा ।
रहे आँखों में रात के सपने, अब आँखों में है प्रकाश तेरा ।
तोड़ा चश्मा लगा जो आँखों पै, दीखता जिससे सब मेरा-मेरा ।
था मैं इकला औ आज भी इकला, देखता हूँ मैं राह ही तेरा ।
छूटे सब साथ के थे जो साथी, न दिया साथ भी तन ने मेरा ।
जीने को जी रहे हैं तेरे बिना, कोई जीना नहीं जीना मेरा ।
ना रहा मैं जो देखने वाला, फिर जो आया तो क्या आना तेरा ।
बना गुलाम भोगी विषयों का, होश में छूटा भोग का घेरा ।
कृपा से छूटा संग भोगियों का, बनूँगा तेरे चरणों का चेरा ।
रहा भोगों में फँसा जन्मों से, अब तक दुःखों ही ने मुझको घेरा ।
कर दिया नाश फँसा के माया ने, भूला तुझको औ नाम भी तेरा ।
ज्ञान विज्ञान नेत्र फोड़े मेरे, मुझे अज्ञान ने चक्की में पेरा ।
ऐसा डूबा हूँ जग की ममता में, रात-दिन छाया भोग का अन्धेरा ।
कर दे कर दे दया तू नाथ अपनी, तू दयालू है फिर न कर देरा ॥

राधे क्लेशनाशनी भाम, जय श्री गौरांगी राधे ।

ऐसो प्रेम दियो ब्रजबालन, पकरि नचाये नंद के लालन,
राधे प्रेम दायिनी बाम, जय श्री गौरांगी राधे ।
कंस, कंस के साथी असुरन, न झांके बरसाने गलियन,
राधे गौर तेज की धाम, जय श्री गौरांगी राधे ।
सब जग जिनकी रहै शरण में, वे हरि इनकी रहे शरण में,
हरि रटैं ये राधा नाम, जय श्री गौरांगी राधे ।
संकट हरणी भक्त तारणी, शरणागत उद्धार कारिणी,
जाको बरसानो है गाम, जय श्री गौरांगी राधे ।
कोटि-कोटि वैकुंठ से सुंदर, तरसें बसने को विधि हरिहर,
जाको वृन्दावन है धाम, जय श्री गौरांगी राधे ।

जै जै श्री वृषभानु लली ।

दिव्य प्रेम देवे के कारण उतरी दिव्य धाम ते भली ॥
श्री वृषभानु नृपति के मंदिर, प्रगटी हेमा कमल कली ॥
गोपी जिनकी पद रज सिर धरि, वश कीने नंदलाल छली ॥
ब्रज वनचरी भीलनी हू पै, अद्भुत जिनकी कृपा फली ॥
पायी निर्मल कृष्ण प्रेम धन, विहरति कुंज-निकुंज गली ॥
बिन वैराग्य ज्ञान योग ही पाई लीला नित्य थली ॥

सब वेद पुराणन में, यह सार विचारा है ।

प्रभु को वश करने का, राधा नाम हमारा है ॥
हरि वंशी में गाते, दिन-रात रटा करते ।
बस दो ही अक्षर का, राधा नाम हमारा है ॥
ऐ दुनिया के लोगो, सब कान खोल सुन लो ।
परतत्व जानने का, राधा नाम हमारा है ॥
हम जप-तप नहि जाने, कुछ और नहीं माने ।
अंधे की लकड़ी सा, राधा नाम हमारा है ॥
हम बहुत रहे भटके, जग में अटके-अटके ।
अब मिला किनारा है, राधा नाम हमारा है ॥
सबसे सुन्दर छोटा, सबसे दृढ है मोटा ।
यह साधन प्यारा है, राधा नाम हमारा है ॥
सब को है अति दुर्लभ, देवन को भी दुर्लभ ।
रस मधुरा धारा है, राधा नाम हमारा है ॥
कुंजन जा यमुना तट, राधा रटते नटखट ।
राधा पद को ध्याते, राधा आधारा है ॥
राधा गाते सुनते, राधा हित ही रोते ।
हरि के नेत्रों बहती, आँसू की धारा है ॥
श्री कृष्ण प्रेम पाते, जो श्री राधा रटते ।
महारास दिलाने को, राधा नाम हमारा है ॥
हरि वश में ही रहते, जो श्री राधा रटते ।

हरि को संग रखने का, राधा नाम उजारा है ॥
हरि आगे-पीछे और, दायें-बाएँ चलते ।
हरि सेवक बन जाते, राधा नाम ही प्यारा है ॥
क्यों कठिन तपस्या कर, जोगी भटका करते ।
बेसहारों निर्बल का, राधा नाम सहारा है ॥

ये काया मेरी अवगुण की है भरी, नाथ कैसे भव सिन्धु से हो तरी ॥

तुझे रिझायवे को गुण नाहीं, सन्मुख आयवे को मुख नाहीं,
ये काया मेरी पापों की है भरी, नाथ कैसे भवसिंधु ... ।
नाम पतित पावन सुन्यो तेरो, याते साहस परयो कछु मेरो,
ये काया मेरी सब विधि है बिगरी, नाथ कैसे भवसिंधु ... ।
तेरी शरण लई है प्यारे, चाहे जिवावै चाहे मारे,
ये काया मेरी निशि दिन जावै गरी, नाथ कैसे भवसिंधु... ।
मेरे अवगुण पर ही रीझो, मेरे पापन पर मत खीझो,
ये काया मेरी चरनन में आ परी, नाथ कैसे भवसिंधु ... ।
तुम्हें छोड़ मैं जाऊँ कहाँ पर, किसकी शरण गहूँ राधावर,
ये काया तेरे दर पै आय अरी, नाथ कैसे भवसिंधु... ।
किसके द्वार जाय दूँ डेरा, और न कोई जग में मेरा,
ये काया मेरी पापन ने विदरी, नाथ कैसे भवसिंधु... ।
जनम-जनम भोगों को भोगे, जीव जीव से ये ही माँगे,
ये काया मेरी कैसे हो उधरी, नाथ कैसे भवसिंधु... ।

ये दुनिया मारै बोल गिरधर मेरा है ॥

मैं तो पिय की पियहि रिझाऊँ, पीट-पीट कर ढोल, गिरिधर..
जित जाऊँ तित कहैं बावरी, नाचूँगी घूँघट खोल, गिरिधर..
जैसे रण में लड़े सूरमा, ऐसे करूँ किलोल, गिरिधर..
गली-गली में रोकै टोकै, ये कैसी बेडोल, गिरिधर..
तेरे प्रेम बिन जीव ना छूटै, बंधन सकै ना खोल, गिरिधर..
बँधा है फिरता लख चौरासी, बंधन आके खोल, गिरिधर..
तेरा नाम ही जग में सच्चा, एक अमोलक मोल, गिरिधर..
आराधना करुँगी ऐसी, गिरिधर लूँगी मोल, गिरिधर..
राधे राधे कहती डोलूँ, कानों में रस घोल, गिरिधर..
तीन लोक की सुख औ संपत, एक नाम ना तोल, गिरिधर..
बिना नाम के सब ये साधन, सार हीन सब पोल, गिरिधर..
जप, तप, जोग, ज्ञान, ध्यान आदिक, सब मिथ्या बस झोल, गिरिधर.

गौरांगी आवहु-आवहु इत ।

हे गजगामिनी भामिनी स्वामिनि, मेरी गलियन बिच विचरहु नित ॥
अशरण शरण कृपालु लड़ैती, तुमकूँ तजि अब हौं जावौं कित ॥
जहँ-जहँ जाय चपल मन मेरौ, राधा चरन विमल देखूँ तित ॥
जागूँ तो तुमको ही देखूँ, तव स्मृति में मन हो अर्पित ॥
सोऊँ तो सपने में देखूँ, गौर चरन जावक सो चर्चित ॥
तेरी कृपा सों भव रण जीतूँ, माया जीतूँ मनक्रमवच जित ॥

प्यारी की पायलिया बाजै, राधे की पायलिया बाजै ॥

हाथन में कंगना हु बाजै, पतरी कमर कौंधनी बाजै,
नरम कलैया चूरी बाजै, पग उंगरिन में बिछुवा बाजै,
फिरकैयां फिरति विराजै, प्यारी की पायलिया बाजै ।
राधे नाच रहीं मंडल में, चरण धरति ठुमकन-ठुमकन में,
देखत श्याम बिके विस्मय में, रीझे मोल बिके चितवन में,
घूँघट में प्यारी लाजै, प्यारी की पायलिया बाजै ।
ता ता थईया ता ता थईया, छूम छननन छूम छननन,
धाधा धूम किट धाधा धूम किट, झूम झूम झननन झूम झूम झननन,
सब गोपिन पर गाजै, प्यारी की पायलिया बाजै ॥

कान्हा बिक्यो प्रेम के मोल गाँव बरसाने में ।

कबहूँ आवै मालिन बन के, बेचैं हाथ गूंथ फूलन के,
पहरे वृषभानु दुलार ॥
कबहूँ आवै जोगिन बन के, ध्यान लगावै बीच सखिन के,
देखें कीरति सुकुमार ॥
कबहूँ सखी साँवरी बन के, लहंगा फरिया पहर ओढ़ के,
मिलें राधा रिझवार ॥
कबहूँ वीणा वारी बन के, वीणा बजावै ताल सुरन ते,
रीझें भोरी सरकार ॥
कबहूँ गावन हारी बन के, गावै गीत राग रागन के,
पहचानेंगी सुन्दर नार ॥

मेरे औगुन पै ही रीझौ, शरण तेरी आया ॥

मैं निगुनी एकौ गुण नाहीं, तुम्हें रिझायने को कछु नाहीं,
बेशर्मी पै मत खीझौ । शरण तेरी...
कौन से पाप किये नहिं मैंने, तुमसे सदा कपट किये मैंने,
मुझ कपटी पै मत खीझो । शरण तेरी...
बाहर कीर्तन नाम हरी का, भीतर विष्ठा भोग विषय का,
पाखंडी पर मत खीझौ । शरण तेरी...
तुमने अगनित पापी तारे, बहुतों को तुमने उद्धारे,
हम पर भी तुम रीझो । शरण तेरी...
तुम हो निर्बल के बल प्यारे, तुम ही निर्धन के धन प्यारे,
निःसाधन पर ही रीझो । शरण तेरी...
मेरा कोई नहीं सहारा, मैं तो हूँ बिलकुल बेसहारा,
हे दीनबंधु अब रीझो । शरण तेरी...
तुम ही माता-पिता तुम्ही हो, तुम ही बंधू सखा तुम्ही हौ,
करुणा रस से रीझो । शरण तेरी...
प्यारे मनमोहन तुम ही बल, तेरे बिना नहीं है कुछ बल,
निर्बल पर ही रीझो । शरण तेरी...
तुम ही गुरु हो मारग-दाता, तुम ही अक्षय सुख के दाता,
दुःख नाशो सुख कीजो । शरण तेरी...
सब जग स्वारथ का ही संगी, तुम निस्वारथ ललित त्रिभंगी,
प्रेम दान अब दीजो । शरण तेरी...

तुझे देखा तो सब देखा, देखना क्या रहा बाकी ।

सुना वंशी की धुन मीठी, तो सुनना क्या रहा बाकी ॥
जो तुझको छोड़ कुछ देखें, वो आँखें फूट ही जायें,
जो देखूं रूप तेरा, तो नहीं पाना रहा बाकी ॥
यहाँ सब प्यार करते हैं, पै मतलब के हैं सब साथी,
तेरा जो प्यार मिल जाये, तो मिलना क्या रहा बाकी ॥
तू मेरा है तू मेरा है, यहाँ कहते सभी ऐसा,
मैं किसका हूँ तू ही कह दे, फैसला क्या रहा बाकी ॥
बने साथी हजारों ही, साथ रहता न कोई है,
साथ जो तेरा हो जाये, तो होना क्या रहा बाकी ॥
कदम दो चल बिछुड़ जायें, यहाँ की रीति ऐसी है,
पकड़ पाऊँ तेरा अंचल, पकड़ना क्या रहा बाकी ॥
सुना है स्वर्ग कोई लोक, जिसमें देवता रहते,
मिले जो ब्रज की रज प्यारी, स्वर्ग का मिलना क्या बाकी ॥
सुना कैलाश पर्वत है, जहाँ शंकर सदा रहते,
मिले नन्दीश्वर जो नंदगाँव, शिव का मिलना क्या बाकी ॥
सुना विधि लोक ब्रह्मा जी, ऊर्ध्व लोकों में हैं रहते,
मिले ब्रह्माचल बरसाने, ब्रह्मा का मिलना क्या बाकी ॥
सुना वैकुण्ठ नारायण महालक्ष्मी जहाँ रहते,
मिले वृन्दावन और जमुना, कोटि वैकुण्ठ नहीं बाकी ॥
तू मेरा है, तू मेरा है, यहाँ कहते सभी ऐसा,
मैं किसका हूँ तू ही कह दे, तो निर्णय क्या रहा बाकी ॥

तेरे सामने मैं कैसे आऊँ, ओ राधा नागरी ।

तू दया की सागर, भर लूँ कैसे, फूटी मेरी गागरी ॥
भूल भुलैया माया में मैं डोला अटका-अटका,
तेरी दया को भूल स्वामिनी जग में डोला भटका,
कैसे मन को मैं समझाऊँ, आवै तेरी प्रेम नागरी ।
जाने कैसे कैसे मैंने कर्म किये हैं जग में,
तुझसे विमुख रहा मैं अब तक समझ न आई मन में,
तेरे ही सहारे जीवन नैया मेरी लागरी ।
मेरी आस भरोसा तू ही, तेरा ही विश्वास,
तेरे चरणों में है अर्पित जीवन ही हर श्वास,
मत भूलो मैं पड़ी हूँ रज में, तेरी ब्रज डागरी ।
साधन अब तक भया न होगा, साध्य मिलेगा कैसे,
मारग ही जब मिला नहीं,
तो लक्ष्य पै पहुँचे कैसे, जाने कितने लगे हैं तन में,
विषयों के अब दाग री ।
अब तक विषयों में, मैं जलता रहा सदा मैं भटका,
काल व्याल का रहा ग्रास, विष्ठा भोगों में सटका,
खूब मनाई होली खेला, विषयों में मैं फागरी ।
जुग-जुग की उत्कंठा मेरी यह तो पुजवो साधे,
अब तो दया करो राधे करुणामई प्रेम अगाधे,
थका निराश पड़ा हूँ शरण में, कब जागै मम भागरी ।

तेरा ही द्वार सच्चा दीनों का द्वार है ।

राधा कृपा दया की तू ही आधार है ॥
कोमल हृदय तेरा है, जो प्रेम से भरा है,
विनती हमारी सुन ले, करुणा पुकार है ।
सबने मुझे गिराया, तेरे ही द्वार आया,
तेरा ही है सहारा, सब की तू सार है ।
तू ही है प्रेम देवी, तू प्रेम की प्रदाता,
तुझसे ही प्रेम प्रगटा, ब्रज में प्रसार है ।
दीनों की तू ही प्यारी, दीनों का तू सहारा,
दीनों का तू भरोसा, भव का किनार है ।
निर्बल की तू ही है बल, निर्धन की तू ही है धन,
है प्रेम की तू गंगा, बहे प्रेम धार है ।
डूबा है बेसहारा, भव सिन्धु में बेचारा,
कोई नहीं है जिसका, उसका उद्धार है ।
डूबी है जिसकी नैया, कोई नहीं खिवैया,
भयानक है भव सागर, कर देती पार है ।

रसिक जनन की भाग्य किशोरी ।

रसमय ब्रह्म श्यामहू आश्रित, रस की विषय राधिका भोरी ॥
निज अर्पण सों पियहिं रिझावति, रस की आश्रय चंपक गोरी ॥
आराध्या आराधिका दुहू है, भानु भूप की सुंदर छोरी ॥
मो नीरस मरुभूमि हृदय पर, कब बरसेगी रस झकझोरी ॥

अरी हेरी जाग उठी मैं आधी रात, सपने में देखे श्याम को ॥

सोय रही सुख सेज पै,
अरी हेरी बरस रही बरसात, सपने में देखे ...
हरि के गरे बैजन्ती माल री,
अरी हेरी मोर मुकुट झोंटा खात, सपने में देखे ...
हरि के कानन कुंडल फबि रह्यो,
अरी हेरी सुन्दर सांवर गात, सपने में देखे ...
हाथन मुरली लग रही,
अरी हेरी चितवन में मुस्कात, सपने में देखे ...
पीतांबर तन पै झूमतो,
अरी हेरी फहर-फहर फहरात, सपने में देखे ...
सपने में आये मेरी सेज पै,
अरी हेरी कहत रसीली बात, सपने में देखे ...
बादर गरज्यो बैरी टूट के,
अरी हेरी नींद खुली पछतात, सपने में देखे ...

कहूँ मैं कैसे करुण कहानी ।

दीन भाव नहिं ज्योति हृदय में, नहिं अँखियन में पानी ॥
वज्र हृदय नहिं पिघलत नेकहुँ, सुन लीला रसखानी ॥
विष्ठा कीट विषय में विहरत, कबहुँ न उपरति मानी ॥
बिना कहे तुम जानति हो सब, जय जय राधा रानी ॥

अपना नहीं है कोई, इक यार जमाने में ।

आना ऐ श्याम अपने, दिल के गरीब खाने में ॥
देखा दुनिया में कहीं भी प्यार न निभता,
मिलती हैं ठोकरें ही, दर्दे दिल को जगाने में ।
बस स्वार्थ भरी दृष्टि सब में भरी देखी,
धोखा ही धोखा देखा है आँखों के लड़ाने में ।
प्रेम के नाम पे व्यापार ही देखा,
बस नाश ही देखा यहाँ अपने ही बिक जाने में ।
अपना तन भी साथ छोड़ देगा ऐ यारो,
जीवन मेरा बलिदान तुझपे तुझको ही पाने में ।
प्रभु को सर्वस दिए बिना कुछ भी नहीं मिलता,
क्या रखा है बलिदान हो जग से धोखा खाने में ।
हर एक स्वार्थी यहाँ स्वारथ की है दुनिया,
स्वार्थियों से मिलता है क्या सब कुछ भी लुट जाने में ।
तू ही है दीनबन्धु दीनों पे दया रखता,
सुदामा को दी स्वर्णपुरी अपने ही समाने में ।
भोग छोड़े कौरवों के जो सजाये थे,
विदुरानी के छिलकों में पाया स्वाद था खाने में ।
ऋषियों के यज्ञ के हविष्य को भी जो छोड़ा,
शबरी के जूठे बेर खाए थे स्वाद पाने में ।

हम जिन्दगी लुटाने, आये हैं तेरे दर पर ।

दिल की लगी बुझाने, आये हैं तेरे दर पर ॥
सब कुछ लुटा चुके हैं, इक जिंदगी है बाकी,
वो भी तुझे लुटा दूँ, ऐसा पिला दे मदिरा,
अभिलाषा ये सुनाने, आये हैं तेरे दर पर ।
तू मुझसे क्यूँ है रूठा, ये तो जरा बता दे,
झाँकी जरा दिखा दे, या अँधा मुझे बना दे,
हम तुझको यूँ सताने, आये हैं तेरे दर पर ।
जब तक ये जिंदगी है, तुझको करेंगे टेरा,
गलियों में तेरी मोहन, देते रहेंगे फेरा,
रूठा तुझे मनाने, आये हैं तेरे दर पर ।
आयेगी याद तुझको, इक था कोई दीवाना,
गलियों में फिरता रहता, ऐसा था मस्ताना,
बिगड़ी सभी बनाने, आये हैं तेरे दर पर ।
चर्चा किया करेंगे, मेरे बाद भी यहाँ पर,
मेरा नाम भी कहेंगे, तेरा नाम ले लेकर,
कहानी ये बनाने, आये हैं तेरे दर पर ।
पतितों से ही कहाते, तुम नाथ पतित पावन,
दीनों से ही कहाते, तुम नाथ दीनबंधो,
महिमा तेरी बताने, आये हैं तेरे दर पर ।
अब तक सभी ने लूटा, सब जन्मों में है लूटा,

भोगों ने ऐसा लूटा, सब योनियों में लूटा,
हालत यही दिखाने, आये हैं तेरे दर पर ।
सब जिन्दगी है लूटी, दुनिया ही सब लुटेरी,
मरने पे लूटने व, लेने की हेरा फेरी,
तुझे लूट ये सुनाने, आये हैं तेरे दर पर ॥

राधे अलबेली महारानी, इनकी शरणन चल प्राणी ॥

राधा-राधा नाम रट्यो कर,
श्री राधा को ध्यान धर्यो कर,
राधे सब गुण की हैं खानी, इनकी शरणन.... ॥
श्री राधा के द्वार पर्यो रह,
भूख प्यास सुख सों मन में सह,
राधे कृपा भरी कल्याणी, इनकी शरणन.... ॥
राधा दासन की सेवा कर,
राधा लीला कह्यो सुन्यो कर,
राधे दया करें ठकुरानी, इनकी शरणन.... ॥
श्री राधा को है बरसानो,
श्री राधा को है गह्वर वन,
राधा कृपा की दानी, इनकी शरणन.... ॥
सर्वाराध्य है कृष्ण मुरारी,
कृष्णाराध्या राधा प्यारी,
राधा हरि की मानभामिनी, इनकी शरणन ... ॥

न तेरे सहारे न मेरे सहारे,

उसी के सहारे उसी के सहारे ।
मेरी जीवन नैया की कुछ भी न पूछो,
चली जा रही है किनारे किनारे ॥
ये आते हैं तूफाँ तो राहत है मिलती,
ये उठती भँवर जो डुबाने को किश्ती,
विपत्ति न होती तो फिर तुम क्यों आते,
विपत्ति भी तुम मैं तुम्हारे सहारे ॥
प्रलय की ये रातें सागर पै छाईं,
अकेले में मुझको बड़ी दूर लाईं,
अँधेरे में आयीं तुम्हारी जो यादें,
मैं फिर जी उठा विरहामृत सहारे ॥
नचाया है माया ने हमको सदा से,
रूप अनेकों बदल-बदल के,
कर दे दया दयामय अब तो,
नाच नाच के हम हैं हारे ॥
जलचर बनाके इसीने तराया नभचर बनाके
इसीने उड़ाया थलचर बनाके इसीने चराया
छूटा न नाच ये कभी भी जीते,
मरते हुए भी हैं नाचन-हारे ॥

कारो कान्ह बसा मेरी अँखियन,
भले जग छोड़ दे, सब जग छोड़ दे ॥

अँखियाँ मेरी बैरिन बन गई, श्याम रंग में ऐसी रँग गई,
और रंग अब नहीं दीखे मोहि, भले जग छोड़ दे, सब जग छोड़ दे ।
अलबेला मोहन मस्ताना, प्रेमी प्रेम रूप दीवाना,
उसकी मुसकन में हँसने दे, भले जग छोड़ दे, मुझे जग छोड़ दे ।
राधा प्रेम पगा जो रोता, आँसू से अपना मुख धोता,
उससे मिलने को मुझे रोने दे, भले जग छोड़ दे, सब जग छोड़ दे ।
जो वृन्दावन रास रचावै, आप नचे और मोहि नचावै,
घुँघरू बाँध अब नाचन मोहि दै, भले जग छोड़ दे, सब जग छोड़ दे ।
सब जग छूटेगा ही इक दिन, बिछुड़ेगा भूलेगा इक दिन,
तू पहले से ही सब छोड़ दे, भले जग छोड़ दे, सब जग छोड़ दे ।
चौरासी लख योनि भटका, लोक लोकोतर अटका-अटका,
चरण शरण तू मुझको रखले, भले जग छोड़ दे, सब जग छोड़ दे ।

बरसानो रसमय बरसानों ।

राधा प्रेममयी तहां खेलत, कन-कन रस को थानों ॥
रस ही खानों रस ही पानो, रस ही रस सरसानों ॥
बहुत दिना तेरेहि बरसानों, अजहूँ रस नहिं जानो ॥
अब मैं कहाँ जाऊँ रसिकनी, यह तब नाम हँसानो ॥
वास दियो अब देहु रास रस, निर्भय करि मनमानों ॥

तेरी कृपा बनी रहे दुनिया से हमको क्या ॥

तेरी दया के प्यासे, तेरी कृपा के प्यासे,
तेरी रटन लगी रहे, दुनिया से हमको क्या ।
तू ही है अपना प्यारा, नयनों का तू ही तारा,
तुझसे नजर मिली रहे, दुनिया से हमको क्या ।
तुझसे ही मेरा नाता, तू ही पिता औ माता,
तुझसे लगन लगी रहे, दुनिया से हमको क्या ।
दर-दर पै भूला भटका, काँटों में डोला अटका,
तेरी डगर मिली रहे, दुनिया से हमको क्या ।
माया में मैं पड़ा हूँ, लाचार मिलने में हूँ,
जग की विपद मिटी रहे, दुनिया से हमको क्या ।
सूखी है प्रेम नदिया, ओ श्याम बाँके रसिया,
दिल में लहर उठी रहे, दुनिया से हमको क्या ।
ये दिल तुझी पै हारा, दर-दर पै फिरता मारा,
उलझन मेरी बनी रहे, दुनिया से हमको क्या ।
तेरा कमल सा मुखड़ा, वो चाँद का सा टुकड़ा,
मीठी हँसन बनी रहे, दुनिया से हमको क्या ।
दुनियावी दुःख औ सुख ये, सब ही हैं आते-जाते,
बादल की दौड़ती हुई, छाया से हमको क्या ।
बादल हैं चलते रहते, कभी धूप कभी छाया,
ऐसे ही जिंदगी बदलती, पर उससे हमको क्या ।
दुःख में नहीं है रोना, सुख में नहीं है हँसना,
दोनों ही मन के धर्म हैं, उनसे है हमको क्या ।
दोनों में प्रभु कृपा ही को, समझता है भक्त,
समता में सदा रहता, विषमता से हमको क्या ॥

तेरी नजर का बयान क्या करें, नजर ही कहर है नजर ही मेहर है ॥

खंजर कटारी दुधारी सुने, धनुष तीर तरकस कमानन सुने,
ये मारे मगर न जिलाते सुने, नजर मौत भी जिंदगी भी नजर है ।
तू हँस के जो देखे तो मरता जिये, तेरी भौंह टेढ़ी से जीता मरे,
ये कैसा करिश्मा है या जादू है, है कातिल नजर वो मसीहा नजर है ।
तू हँस के भी मारे तू रोके भी मारे, हँसा के भी मारे रुला के भी मारे,
तेरी हर अदा करती है कत्ले आम, है तू जिंदगी, जिंदगी ही नजर है ।
नजर से गिरा जो गिरा ही गिरा, नजर पै चढ़ा सो चढ़ा ही चढ़ा,
नजर में बसा जो बसा ही बसा, जो कुछ है वो तेरी नजर की नजर है ।
तेरी ही नज़र की चाहत में, वन-वन में तपस्वी तप भी करें,
जोगी करे जोग, ध्यानी करे ध्यान, ग्यानी भी तत्त्व विचारा करें ।
साधन से मिलता नहीं तू कभी है, नहीं साधन से मिले तेरी गुजर है ।
याज्ञिक यज्ञ किया ही करे और मान्त्रिक मन्त्र जपा ही करें,
धार्मिक धर्म किया ही करें और कर्मी भी कर्म किया ही करें,
मिलता नहीं तू कहीं भी किधर है ।
साधन यही है, बस सार यही है, सिद्धि यही है और फल भी यही,
तड़पता मिलने को तुझसे सदा जो, तरसता दर्शन को तेरे सदा जो,
नामों को तेरे पुकारे सदा जो, बुलाते हैं जो कोई तुझे आने को,
वो ही है पाता तेरी मेहरबानी, वही ही नजर है वही ही मेहर है ॥

बालक की ओर देखो हम तो तेरे हैं पाले,

मेरी भी टेर सुन ले दीनों की सुनने वाले ॥
दुनिया भरी खचाखच, खोया हूँ भीड़ में मैं,
मैं तुझे ढूँढ़ न पाऊँ, तू आ गले लगाले ।
तूने निभाया अब तक, आगे भी अब निभाना,
मैं अपने से हूँ हारा, आकर मुझे बचाले ।
दुःखों ने मुझको घेरा, मुझको कुचल है डाला,
अब कोई न सहारा, तू आ मुझे छुड़ा ले ।
माया की फौज आई, मुझ पर करी चढ़ाई,
इकला ही लड़ रहा हूँ, है कौन जो सम्हाले ।
कोई नहीं है मेरा, दुनिया में हूँ अकेला,
साथी सगे न कोई, कोई न सुनने वाले ।
चरणों की धूल दे दे, दाता ऐ मेरे मालिक,
लाखों जनम की बिगड़ी, है कौन बदल डाले ।
मन मेरा बड़ा चंचल, विषयों में जो फँसा है,
जितना उसे सुधारूँ, उतना मुझे बिगाड़े ।
मेरी यही तमन्ना, राधा किशोरी रानी,
संसार से हटा कर, ब्रजधूरि में बसा ले ।
गांडीव कर से छूटा, तन कंप मोह छाया,
गीता से जग सभी का, कल्याण करने वाले ।
गैया ही उपनिषद हैं, गोपाल एक ग्वाला,

सब दुह के सार अमृत, गीता बनाने वाले ।
न ज्ञान से न तप से, न योग यज्ञ सब से,
प्रभु ना दिखाई पड़ता, हरि को ढूँढ़ने वाले ।
केवल शरण हरि की, शरणागति हो सच्ची,
अनन्य भक्त के तुम, योग क्षेम सँभाले ।

वो कौन सा दर है, किधर है किधर है?

तरे जिससे नर है, किधर है किधर है?
प्रभु का ही दर है, प्रभु का ही दर है ।
तरे जिस से नर है, प्रभु का ही दर है ॥
सुना पूतना थी जो विष को पिलाती,
छोटे कन्हैया को गोद खिलाती ।
माता बना के, तारा भवसागर ॥ प्रभु का ही दर है ...
कंस कसाई बड़ा अत्याचारी,
बूढ़े पिता को दिया जेल भारी ।
पकड़ कंस पटका, तारा भवसागर ॥ प्रभु का ही दर है ...
बहन देवकी पै था मारन को झपटा,
छोटे बच्चों को जनमते ही पटका ।
पटक मुष्टिक चाणूर, तारे भवसागर ॥ प्रभु का ही दर है ...
सुना शिशुपाल रोज गाली ही देता,
सदा द्वेष निंदा हरी से ही करता ।

किया लीन तन में, तरा भवसागर ॥ प्रभु का ही दर है ...

सुना था सुदामा बड़ा ही ग़रीब,

अन्न भर पेट भी न होता नसीब ।

आँसू से पग धो, तरा भवसागर ॥ प्रभु का ही दर है ...

सुना था अजामिल जो पापों भरा था,

लुटेरा हत्यारा वेश्यागामी बड़ा था ।

बस एक नाम लेकर, तरा भवसागर ॥ प्रभु का ही दर है ...

सुना कोई इक गणिका वेश्या थी नारी,

महापापिनी गंदी नाली बिचारी ।

पढ़ा नाम तोते, तरी भवसागर ॥ प्रभु का ही दर है ...

सुना एक व्याधा था जीव हत्यारा,

प्रभु के ही चरणों में जा बाण मारा ।

उसे धाम भेजा, तारा भवसागर ॥ प्रभु का ही दर है ...

राधे लाड़िली कृपा करो ।

कबहूँ बरसाओगी करुणा, यही भरोसो मनहि भरो ॥

कबहूँ तो धारोगी चरनन, मम सिर इच्छा यही धरो ॥

कबहूँ तो विचरोगी मो मन, मधु बरसा झर भरनि झरो ॥

कबहूँ दया करोगी श्यामा, यही भाव ते द्वार अरो ॥

कबहूँ तो देखोगी इत कूँ, बरसाने यहि आस परो ॥

हुये हम तुम्हारे हुये तुम हमारे, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।

पापों को करने की आदत हमारी, पाप जलाने की है आदत तुम्हारी,
शरण में हैं आये शरण के ऐ दाता, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।
सदा माँगने की है आदत हमारी, सदा देने की ही है आदत तुम्हारी,
पसारी ये झोली कृपा से जो भर दी, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।
सदा से गिरे हैं अँधेरों में नीचे, सदा रोशनी आसमा से दिखाई,
गिरे तेरे दर पै हमें भी उठाओ, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।
सदा से है पापों की कालिख लगाई, सदा पाप नाशन की कालिख मिटाई,
मेरे पाप नाशो सुनो चाँद काले, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।
बिगाड़ा है हमने बनाया है तुमने, भटकते हुओं को सम्भाला है तुमने,
भूले हुओं को ज़रा याद आओ, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।
बड़े दीन हैं हम बड़े हीन हैं हम, दीनों के नाथ तुम्ही एक प्रीतम,
दया लेने आये दया दे दे प्यारे, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।
सहारा हमारा नहीं कोई प्यारे, भटकते सदा से रहे बेसहारे,
सहारा हमें भी तू दे बंसी वारे, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।
विषयों में विष्ठा के डूबा सदा से, भोगों में अंधा रहा मैं सदा से,
मेरा मोह नाशो ऐ गीता के नायक, ये सम्बन्ध हमारा सजन जुड़ गया ।
गरीबों की कोई भी सुनता नहीं है,खबर इनकी कोई भी लेता नहीं है,
गरीब निवाज तुम्ही एक तो हो, सुनो मेरा सम्बन्ध सजन जुड़ गया ।

काँटो को फूल जानकार ना प्यार कीजिये,

फट जायेगा दिल आपका आँचल बचाइये ॥
चेहरा जो देखा आपने खिलता हुआ गुलाब,
धड़ पेट हाथ पाँव काँटों के हैं देखिये ।
इंसान बन के आता है दुनिया में जो कोई,
रोना ही पड़ता पहले पहले ये भी सीखिये ।
जाता है दुनिया से कोई तो फिर सभी रोते,
हँसना ही यहाँ धोखा यह जान लीजिये ।
मिल-मिल के बिछुड़ते गये कितने ही राह में,
रुक गये हैं जो उन्हें मत मुड़ के देखिये ।
यदि आपको ठोकर लगी रुक के न बैठिये,
यदि लड़खड़ाये चाल तो भी चलते जाइये ।
फूलों की खुशबु मिलती है काँटो के मिलने बाद,
दुःख पहले मिला करता है सुख पीछे लीजिये ।
आँधी ही पहले आके भरती धूल से आँखें,
पानी बरसता पीछे यह देख लीजिये ।
स्वारथ से भरी भीड़ का ही नाम है दुनिया,
स्वारथ भरे हैं सारे, यह आजमाइये ।
उम्मीद कुछ न करना किसी से कभी कुछ भी,
उम्मीद में ही ठोकरें मिलती हैं खाइये ।

चलते ही चलो राह में बढते हुये कदम,
रुकिये नहीं कुछ देर भी बस चलते जाइये ।
सब का भरोसा छोड़ के हरि का भरोसा कर,
पानी की लहरों पर नहीं दीवार उठाइये ।
यदि आपको ठोकर लगी, न रुक के बैठिये,
यदि लड़खड़ा गए हो तो भी चलते जाइए ।
गिर भी पड़े तो उठिये पर हिम्मत न हारिये,
टाँगें भी टूटें तो सहारे लाठी के चलिये ।

राधिका लाड़िली अलक लड़ी ।

अलक लड़ैती मोहन पिय के, मनमंदिर में मूर्ति अड़ी ॥
ऐसी लिपटी श्याम कंठ सो, नीलमणी मोतियन लड़ी ॥
गौर घटा घनश्याम घटा पर, रस की बरसा रही झड़ी ॥
कोटि काम शर मूर्छित हरि के, जीवन की संजीवनी जड़ी ॥
शरणागत के सिर धरबे को, वरद अभय कर लिये खड़ी ॥

सुंदर भानुराय की बेटी ।

नंदराय को ढ़ोटा मोहन, भुजभरि तासों भेंटी ॥
कोटि कामशर मूर्छित हरि की, बाधा साधा मेटी ॥
वश करि पिय चेटी सी करिकै, विहरति कुंजन लेटी ॥
बाँध्यो लट लटकन ते नागर, बंधन कटि की फेंटी ॥

दिल को इक कमल बना लिया मैंने,

वो ही कमल तुझको चढ़ा दिया मैंने ॥
सोया था आज तक मोह निद्रा में,
पाके सत्संग जगा लिया मैंने ।
खोया था आज तक भोग वासना में,
वासनाएँ दूर भगा दिया मैंने ।
विष्ठा भोगों की जो जमी काई,
उसे भी दूर किया है मैंने ।
प्यासा था जीव मल-मूत्र भोगों में,
तेरी चाहत से हटा दिया मैंने ।
सुत-वित लोक एषनाएँ प्यासी,
प्यास को भी बुझा दिया मैंने ।
अगणित जन्म बिताये हैं अब तक,
न पाई अब तक तेरी शरण मैंने ।
न कोई साधन न सहारा है मेरा,
कृपा ही सब कुछ समझ लिया मैंने ।
ना रहा कोई नाता न रिश्ता,
तुमसे नाते सभी जोड़े मैंने ।
वासना ने मँगाया भीख दर-दर,
भीख की आदत भगा दिया मैंने ।
आशाओं ने श्वान बनाया मुझको,
दिल को अब शेर बना लिया मैंने ।
ना माँगूं ना माँगूं मल-मूत्र कभी,
शूकर कूकर भगा दिया मैंने ।

ये क्या सोचते हो, अरे मुरली वाले,

मैं आया तेरे दर, अरे मुरली वाले ॥
मैं दर-दर पै भटका, अरे मुरली वाले,
पड़े पांव छाले, अरे मुरली वाले ।
अपराधी बड़ा हूँ, अरे मुरली वाले,
क्षमा पाप कर दे, अरे मुरली वाले ।
इक बार दे मौका, अरे मुरली वाले,
दरस का दे झोका, अरे मुरली वाले ।
हृदय डूबता है, अरे मुरली वाले,
चकराती बुद्धि, अरे मुरली वाले ।
मैं तेरा हूँ सुनले, अरे मुरली वाले,
मुझे साथ ले ले, अरे मुरली वाले ।
मैं तुझ पै बिका हूँ, अरे मुरली वाले,
जगत से झिका हूँ, अरे मुरली वाले ।
मैं दर पै अड़ा हूँ, अरे मुरली वाले,
तड़पता पड़ा हूँ, अरे मुरली वाले ।
मैं तुझ पै बलिहारी, अरे मुरली वाले,
मैं तेरे विरह में, अरे मुरली वाले ।
मेरे दिल के स्वामी, अरे मुरली वाले,
तू है मेरा नटवर, अरे मुरली वाले ।
वो बंसी सुना दे, अरे मुरली वाले,

वो झांकी दिखा दे, अरे मुरली वाले ।
तू गोपिन का रसिया, अरे मुरली वाले,
राधा मन बसिया, अरे मुरली वाले ।
बंसी बजैया, अरे मुरली वाले,
गायों का चरैया, अरे मुरली वाले ।
रास रचैया, अरे मुरली वाले,
दधि का लुटैया, अरे मुरली वाले ।
तू है दीनबन्धो, अरे मुरली वाले,
तू करुणा का सिन्धु, अरे मुरली वाले ।
तू माखन चुरैया, अरे मुरली वाले,
तू गिरिवर उठैया, अरे मुरली वाले ।
तू दीनों का वत्सल, अरे मुरली वाले,
तू है भक्तवत्सल, अरे मुरली वाले ।

श्यामा जू के नूपुर की बलिहारी ।

गौर चरन से मणिमय नूपुर, मीठी धुन झनकारी ॥
वा धुन पै मैं वारौ बीना, सबहि वाद्य धुनि वारी ॥
जा को सुनत श्याम सुधि भूले, भूली मुरली प्यारी ॥
बजत निकुंज गली में छमछम, आनंद निधि सुखकारी ॥
कब सुनिहौं हौं कृपा दृष्टि बल, यद्यपि नहिं अधिकारी ॥

जरा देखो सुन लो कन्हैया की वंशी,

जमुना किनारे बजी जा रही है ॥
ये जमुना की धारा रुक जो गई है,
ये बहती हुई जमुना थम जो गई है,
अरे मुरली वारे चरण धूल दे दे,
ये उठ-उठ के लहरें विनय कर रही हैं ।
ये नभ के पखेरू रुके उड़ते-उड़ते,
झुके श्याम ओरी थमें चलते-चलते,
ये कोयल पपैया चुप हो गये हैं,
ये हंसों की जोड़ी चली आ रही है ।
ये चोकड़ी भरना है भूली हिरनियाँ,
रुके नाचते हैं ये मोरा मोरनियाँ,
ये फूलों की बरसा लताएँ हैं करती,
ये मधु धारा वृक्षों से बह जो रही है ।
ये फूले कमल खिल उठे रात ही में,
बिना सूर्य ही सुनके मुरली की तानें,
ये पत्थर भी पिघले गजब ये भी देखो,
झरे झरने धारा चली आ रही है ।
ये बंसी की तानें गई बरसाने,
सुन-सुन के गोपी लगी तरसाने,
सुनकर के गोपी भजीं रात आधी,

ये देखो राधा रानी चली आ रही हैं ।
सरोवर में सारस के जोड़ों को देखो,
कारंडवों के कलरव को देखो,
मछलियों की तरन को तो देखो,
लहराती लहरें चली आ रही हैं ।
चम्पा चमेली खिली गंध देती,
खिली मालती भी बड़ी है महकती,
ये तुलसी कैसी रही है गमकती,
रजनी गंधा महक जो रही है ॥

झोली पसारे बैठा, दर पै तेरे भिखारी ।

दाता पड़ी है खाली, झोली खुली हमारी ॥
दिलदार तू है दाता, देता हमेशा दिल से ।
उदारता की तेरी, जाऊँ मैं बलिहारी ॥
पातकी हूँ मैं भारी, पापात्मा हूँ मैं भारी ।
अबके तू दया कर दे, दोषों को दे बिसारी ॥
आया हूँ तेरे दर पै, विनती पुकार लेकर ।
सुन ले पुकार मेरी, करुणामय जन दुःख हारी ॥
करुणा तू ऐसी कर दे, ऐ मेरे दिल के मालिक ।
मुझ दीन की भी स्वामी, जुड़ जाये तुमसे यारी ॥

यारी जुड़े वो ऐसी, ‘मैं’ मैं न रहूँ मिट कर ।
बस तू ही तू ही दीखे, तेरी छटा हो प्यारी ॥
झाँकी ज़रा दिखा दे, ऐ मीठी बंसी वारे ।
कानों में तेरे कुण्डल, औ मोर मुकुट धारी ॥
गलबैयाँ दे रही हों, श्री भानु की दुलारी ।
कीरति की लाड़ली, श्री राधा बरसाने वारी ॥
ऐसा रास रचाया, शिव गोपी बन के आये ।
कैलाश छोड़ आये, नर से बने वो नारी ॥
अनगिनत गोपियों संग, उतने ही रूप धारे ।
सब साथ में नचायी, संग-संग रासविहारी ॥
रामावतार का वर, ले ले के आयीं गोपी ।
मिथिला अवध की नारी, दंडक वन तपधारी ॥
सीता बिना न पूरा, कर पाये यज्ञ राघव ।
सोने की सीता लेकर, बन गए यज्ञधारी ॥
सीतामयी सब गोपी, महारास रस पायीं ।
महारास था अनोखा, थे अनोखे रासविहारी ॥
राधा सुनहली गोरी, तू नीलमणि सा सुन्दर ।
कैसे सजी अनोखी, दोनों की जोड़ी प्यारी ॥
ऐसा तू दे दे प्यारे, झोली में न समाये ।
झोली भी छोटी होवे दाता तेरी बलिहारी ॥

हम ढूँढ़ते सहारा, ऐसे हैं बेसहारे ।

पतवार मेरी टूटी, नैया नहीं किनारे ॥
हम और भी क्या करते, कुछ दम नहीं है ताकत ।
दरिया में डूबते को, तिनके बने सहारे ॥
देखते किनारा, ऊँचे पुकारते हैं ।
आएगा वो बचाने, जिस पै हैं दिल को हारे ॥
सलोनी हँसती सूरत, आँखें छलकते प्याले ।
दया बरस रही है, आँखों के हर इशारे ॥
आएगा एक दिन वो, दिल की ये टीस कहती ।
गरमी के बाद आता, सावन लिये फुहारें ॥
किस ओर कहाँ जाएँ, किसको यहाँ पै टेरैं ।
सुनता नहीं है कोई, सब कोई बेसहारे ॥
है स्वार्थियों की दुनिया, स्वार्थी ही यहाँ सब हैं ।
किसी की न कोई सुनता, सब दीन हैं बेचारे ॥
सब डूबते हैं भव में, कोई पार ही न पाता ।
ऐसा ही है भव सागर, है कौन जो हमें तारे ॥
कुछ बल नहीं है हममें, कुछ दम नहीं है हममें ।
कुछ धन नहीं है हममें, सब ओर से हैं हारे ॥
सहायक है न कोई, हमदर्द है न कोई ।
सब खेल देखते हैं, दर्शक बने हैं सारे ॥
खम्भे से हिरनाकुश ने, बाँधा प्रह्लाद बालक ।

चाहता था मारना वो, प्रह्लाद बेसहारे ॥
खम्भे में भी है बैठा, गुप्त हो के भगवन ।
आयेगा वो बचाने, उसके हैं जो सहारे ॥
गुस्से में गदा मारी, खम्बा गिरा व टूटा ।
गर्जना भई भारी, हिल गए लोक सारे ॥
खम्बे से निकले तुम, ना नर ना सिंह प्रभु जी ।
निर्दयी को था मारा, नरसिंह रूप धारे ॥

बुलाता तुमको मैं निशिदिन, इरादा क्या तुम्हारा है ।

तेरा आना मेरा जीना, न आना मरना हमारा है ॥
पड़ा हूँ दर पै ऐ मालिक, कहो बैठूँ चला जाऊँ,
मैं जाऊँगा कहाँ पै हाय, जग में क्या हमारा है ।
बड़ी आशा से आया हूँ, तुम्ही से जी रहा हूँ मैं,
नहीं जीना ये जीना है, नहीं जब प्राण प्यारा है ।
किसी की नाव डूबी हो, बताओ क्या सहारा है,
तुम्हारा हाथ मिल जाये, किनारा ही किनारा है ।
नहीं आओगे मनमोहन, बुलाने पर ओ नटनागर,
बुलाने वालों का दिल टूटे, उनका क्या गुजारा है ।
जो ठुकराओगे तुम मुझको, मेरी आहों को सुनकर भी,
दया-सिंधो तुम्हारे नाम का, क्या कुछ विचारा है ।
मुझे अपनी नहीं चिंता, तुम्हारे नाम की चिंता,
तुम्हारा नाम सच्चा है, तुम्हारा गुण अपारा है ।

सुना तुम करुणासागर हो, तुम्हारी करुणा है नामी,
गरीबों दीन पतितों का, तो करुणा ही सहारा है ।
तुम्हारी करुणा न होवे, तो हम सब डूब मर लेंगे,
गरीबों दीन पतितों को, कृपा करुणा ने तारा है ।
न साधन का ही मारग है, न भक्ति का ही है मारग,
जो साधनहीन हम सबको, दया का ही सहारा है ।
तुम्हें आदत है करुणा की, हमें आदत है गिरने की,
गिरेंगे बार-बार गिरधर, उधारा तुमने तारा है ।
जुगों से है अँधेरा श्याम, मेरे दिल की जो बस्ती में,
तुम्हारा नाम आ जाये, उजारा ही उजारा है ।
लौटेंगे कभी भी न, प्रभो मेरे बढ़े कदम,
लौटाया क्या कभी तुमने, शरण आये को तारा है ।
बहा ले जाती नदियाँ भी, सदा तिनके को धारा में,
सदा ही डूबता, अहम् का जिसमें बोझ भारा है ।
कभी वह रुक नहीं सकता, नहीं वो डूब ही सकता,
भरोसा छोड़ औरों का, कृपा की ऐसी धारा है ।

कीरति की सुकुमारी लाली ।

आतुर विवश श्याम संग डोलत, तजि निज बाँकी चाली ॥
मान करति ह्वै प्यारी पिय की, मधु ते मीठी गाली ॥
रसमय काया बोलन चितवनि, सब विधि रस में घाली ॥
बड़भागी गोरी के रस कौ, अधिकारी वनमाली ॥

नैया लगा दे पार किशोरी, तेरी शरण मैं आई ॥

तेरे चरण की शरण लाड़िली, जाके शरण कन्हाई, किशोरी तेरी ...

देख लिये सब जग के नाते, झूठी प्रीति सगाई, किशोरी तेरी ...

देख लिये सब माल खजाने, छोड़ हंस उड़ जाई, किशोरी तेरी ...

देख लिये सब साथी संगी, हंस अकेलो जाई, किशोरी तेरी ...

देख लई ज्वानी मदमाती, चार दिना रंग लाई, किशोरी तेरी ...

देख लियो जब भयो बुढ़ापो, शोभा धूर मिलाई, किशोरी तेरी ...

देख लियो थोरो यह जीवन, देह राख है जाई, किशोरी तेरी ...

मिथ्या रूप ही देख देखते, मिथ्या दृष्टि बसाई, किशोरी तेरी ...

हाड़-माँस भोगत-भोगत ही, त्वचा पाप है जाई, किशोरी तेरी ...

मिथ्या रस चाखत-चाखत ही, रसना भई पराई, किशोरी तेरी ...

मिथ्या गंध नाक से सूँघत, नासा भई पराई, किशोरी तेरी ...

मिथ्या शब्द कान से सुनियत, श्रवण पाप है जाई, किशोरी तेरी ...

रोम-रोम भये पाप ग्रसित सब, काया भई पराई, किशोरी तेरी ...

मन में विष्ठा विषय भरे हैं, विष्ठा मन है जाई, किशोरी तेरी ...

बुद्धि में हैं राग विषय के, बुद्धि विषयिणी भाई, किशोरी तेरी ...

चित में हैं संस्कार विषय के, शुद्ध स्मृति नहिं आई, किशोरी तेरी ...

देह अहंमय भयो लाड़िली, देहाभिमान न जाई, किशोरी तेरी ...

'मैं-मेरा' 'तू-तेरा' ऐसी, मंद दृष्टि नहिं जाई, किशोरी तेरी ...

देख लिये सब देवी-देवा, नीरस सबै जनाई, किशोरी तेरी ...

समझे सब अवतार हरी के, यह रस कहुँ न लखाई, किशोरी तेरी ...

मथुरा देखी द्वारका देखी, समझे कुँवर कन्हाई, किशोरी तेरी ...

समझे कृष्ण के सखा सबै ही, वन-वन गाय चराई, किशोरी तेरी ...

देखे नन्द-यशोदा सबरे, बलदाऊ से भाई, किशोरी तेरी ...

बिन राधा सब ही हैं फीके, चाहे कृष्ण कन्हाई, किशोरी तेरी ...

कीरत औ वृषभान हू देखे, श्री दामा से भाई, किशोरी तेरी ...

बिन राधा हरि प्रेम सिंधु हू, बूंद सरीखो भाई, किशोरी तेरी ...

सृष्टि कथा दूरहि राखी, नारद आदि बिलगाई, किशोरी तेरी ...

ग्वालबाल सब दूर ही राखे, दूर सखा समुदाई, किशोरी तेरी ...

देखी सबरी ब्रज की गोपी, महारास में जाई, किशोरी तेरी ...

राधा लै के छोड़ दई सब, राधा संग लगाई, किशोरी तेरी ...

श्यामा जू करुणा कीजिये ।

अग्नि कुण्ड जग में तव करुणा, दृष्टिवृष्टि सो जीजिये।

शरणागत की करुण टेर अब, करुणा करि सुन लीजिये।

काल व्याल मुख सों रक्षा करि, अभयदान मोहि दीजिये।

करुणा भरी स्वामिनी मेरी, अब विलम्ब नहिं कीजिये।

विचरौं वृन्दावन रज कुंजन, युगल चरन रस पीजिये ॥

कोई जा रहा है, कोई जा रहा है,

हरि का दीवाना कोई जा रहा है ।
उड़ा राख सिर पै, कोई जा रहा है,
प्रभु का दीवाना कोई जा रहा है॥
ले आँखों में आँसू, हृदय दर्द ले के,
पकड़ टीस दिल में, कोई जा रहा है ।
ये छाले पड़े पांव में कैसे-कैसे,
कहाँ इसकी मंजिल, जहाँ जा रहा है ।
सुनेगा ना वो, कोई कितना पुकारे,
न जाने किसे, ढूँढ़ता जा रहा है ।
कोई कहता पागल, कोई कहता है दीवाना,
न जाने वो किस धुन, चला जा रहा है ।
सभी बेड़ियाँ, तोड़ डालीं है इसने,
ये पगला सा कोई, चला जा रहा है ।
अरे कौन है जो कि इसको सम्भाले,
न जाने ये किस मस्ती में जा रहा है ।
कदम लड़खड़ाते, बदन डगमगाते,
मगर फिर भी बढ़ता, चला जा रहा है ।
जंजीरें पाँवों में, हैं झनझनाती,
कहतीं हटो, दीवाना जा रहा है ।
आंधी क्या रोकेगी, इसकी गति को,

बुझे न मशाल, जो जला ये रहा है ।
मेघों की गरज और पानी की बारिश,
नदी बाढ़ सा ये, चढ़ा जा रहा है ।
श्री कृष्ण प्रेम की, ऐसी है मस्ती,
जग बंधन सब, तोड़ता जा रहा है ।
मर्यादाएँ वेद की तोड़ दीं सब,
हाथी सा मस्त झूमता जा रहा है ।
कभी नाम लेता है गोविंदा गोपाला,
कभी कहता कहाँ वो नन्द का लाला,
कभी कहता आना पड़ेगा यहाँ पर,
मेरा दिल चुराए छिपा जा रहा है ।
तुझे भागने की ही आदत पड़ी है,
चितचोर भागा कहाँ जा रहा है ।
ऑ राधा के प्यारे ऑ राधा के वल्लभ,
राधा रानी संग कहाँ जा रहा है ।
ब्रज के ही बसिया, ऑ राधा के रसिया,
ऑ गैया चरैया, कहाँ जा रहा है ।
ऑ रास रचैया, ऑ गिरिवर उठैया,
ऑ काली नथैया, कहाँ जा रहा है ।
ऑ बंसी बजैया, ऑ मुरली बजैया,
बंसी बजा के कहाँ जा रहा है ॥

तू बोले या न बोले, तुझे बुलाऊँगा ।

तू ही सुनता है सबकी, मैं तुझे सुनाऊँगा ।
हे निर्धन के धन श्याम, आँसू ही चढ़ाऊँगा ॥
जीवन का एक भी क्षण, कटता नहीं तेरे बिन,
मैं सारा विरही जीवन, आहों से काटूँगा ।
तेरे बिन हुआ विरह में, मैं तो पागल पागल,
गम के फाँके फाँक फकीर, ही होता जाऊँगा ।
चित में तू प्राण में तू, मन में बसता तू ही,
फिर भी तरसें क्यूँ आँखें, ये समझ न पाऊँगा ।
तू नहीं मिला अब तक, आशा में रहा जीता,
मिलने की आशा में, दुनिया से जाऊँगा ।
हत्यारिन पूतना को, माता-गति दी दाता तूने,
कृपा से भरी झोली, कब मैं भी पाऊँगा ।
प्रह्लाद विभीषण ध्रुव, से दीन बहुत तारे,
मैं दीन कब तेरी, दीनदयालुता को जानूँगा ।
तू ही तो सुनता है, दुःखियों की दीन पुकार,
कब अपनी भी करुणा तुझे, सुना मैं पाऊँगा ।
तेरे चरणों में असहाय, आये जाने कितने ही,
मैं भी असहाय सहारा, तेरा कब मैं पाऊँगा ।
दर्दीले दिल का तो, तू ही है जाननहारा,
अपना भी दर्द मैं तुझको, जना कब पाऊँगा ।

नाथ अनाथों का, तू अशरण शरण प्रभो,
कब शरणवत्सला का, अनुभव कर पाऊँगा ।
जिसका कोई नहीं है, उसका हमदर्द तू ही,
तेरी हमदर्दी कब मैं भी समझ पाऊँगा ।
दोनों कब एक साथ आओगे राधा माधव,
कुञ्ज गलियों में विचरते कब देख पाऊँगा ।
राधा माधव दे के गलबैयाँ विचरते गह्वर,
जैसे बादल में चमकती बिजली निहारूँगा ॥

गोपाल बड़ा दाता, माँगू जो मुझको दे दे ।

दर पै तेरे मैं आया, मेरी भी झोली भर दे ॥
किससे नहीं है माँगा, किसकी न चाटी जूठन,
नर रूप में हूँ कुत्ता, मेरी शकल बदल दे ।
यूँ गाता तो हूँ हरदम, तेरे ही गीत लेकिन,
तू खुद ही खिंच के आये, ऐसा तो दर्द दे दे ।
यूँ तेरा नाम लेता, पर नाम अपना करता,
खुद को ही धोखा देता, आदत मेरी बदल दे ।
ये खुल कर तुझी को ढूंढे, हो बंद तुझको देखें,
इन आँखों को ये प्यास, आँसू से भर के दे दे ।
जिसको दिया है तूने, वो फिर रहा न मँगता,
वह बन गया है दाता, ऐसी कृपा तू कर दे ।

दाता बस एक तू है, जो अपने को दे देता,
दासों का दास बनता, ऐसा भी प्रेम दे दे ।
गोपी-जनों का ऋनिया, तू बन गया सदा को,
ऋण उनका चुका न पाया, प्रेमी मुझे बना दे ।
अर्जुन का रथ जो हाँका, मैदाने जंग तूने,
घोड़ों की लगाम पकड़ी, मुझको जरा पकड़ ले ।
भटका रहा मैं फिरता, तेरे बिना ऐ मोहन,
अब फिर कहीं न भटकूँ, तू प्यार में जकड़ दे ।
चाकर बना तू फिरता, ब्रज गोप गोपियों का,
जैसा नचाया नाचा, मुझको भी तू नचा दे ।
दुखियों का दुःख है हरता, दुखहारी तू सदा से,
मेरी भी कब सुनेगा, दाता दया तू कर दे ।
आया है तेरे दर पै, तू है दया का सागर,
खाली है मेरी गागर, उसको कृपा से भर दे ।
भूखा रहा भटकता, भोगों में मैं सदा से,
अब फिर कभी न भटकूँ, तू भूख मेरी भर दे ।
दर-दर पै भीख माँगी, दर-दर पै खाई ठोकर,
दर -दर पै गिर पड़ा मैं, आ मुझको तू उठा दे ।
विषपान देने वाली पूतना को भी तुमने तारा,
हत्यारिन बनायी माता, मुझ पर भी दया कर दे ॥

प्रभु की ही शरण सच्ची, सब कुछ झूठा ही देखा,

जीते जी सार समझो, मरने पर कुछ न देखा ।
दुनिया ये क्या है यारो, आतिशबाजी ही देखा,
उजला चमकता दीखे, सब कुछ ही जलता देखा ॥
काल अग्नि सदा जलती, कोई न बचते देखा,
बचा शरण गया जो, जब काल भी डरते देखा ।
जिसने भी इसको पाया, पाकर वही पछताया,
बिन पाये भी पछताया, जादू तमाशा देखा ।
इक बाग है फूलों का, रंगीन सपने जिसके,
फल खाने वाला मरता, धोखा ही धोखा देखा ।
आँखों की देखी कहता, रंगीन डाली जिसकी,
मरने के बाद उनको, मिट्टी में मिलते देखा ।
आ होश में ऐ इन्सां, प्रभु से लगन लगा ले,
सब कुछ यहाँ विनाशी, मिटते सभी को देखा ।
मिट-मिट के बनते रहते, जन्म मृत्यु का है चक्कर,
चक्कर से इनको घूमते, पै छूटते न देखा ।
आकाश में लटकते, अगणित हजारों तारे,
बेसहारे ही लटकते, चलते व फिरते देखा ।
सूरत अलग-अलग है, सब की कभी न मिलती,
पत्ते पत्ते अलग हैं, मिलता कोई न देखा ।
चींटी से लेके हाथी तक देता पेट भरकर,

भंडारा उसका फिर भी, चलते कहीं न देखा ।
दुनिया को पानी से भर देता है कुछ ही पल में,
पानी का भी आकाश में, सोता कहीं न देखा ।
जैसा किया फल पाता, दिन रात देखता हूँ,
करता है फैसला कौन, अदालत ही न देखा ।
कितना भी छिप के चोरी, गुनाह को है करता,
देखने वाले से लेकिन, बचता न कोई देखा ।
कोई हो कितना रुस्तम, रावण हिरण्यकुश कंस,
काल ने है खाया, बचता न कोई देखा ।

तेरे दर पै पगला भिखारी पड़ा है,

न खोलो महल वरना आएगा भीतर ॥
नहीं आना चाहे वो महलों के भीतर,
अनोखी है इच्छा, अनोखी ही यारी,
हुये हैं तुम्हारे बड़े प्यारे प्रेमी,
पै ये नासमझ क्यों है पगला है आखिर ।
ये रंगीन गलियाँ ये रंगीन कुंजें,
वो रंगो महल जिससे जग होता पावन,
मलिनता ये मेरी मुझे रोकती क्यों,
कहीं हो न उलझन तुम्हें मेरी खातिर ।
पै याद रखना यही टेक मेरी,
फाँका करूँ धूर तेरे डगर की,

भले जान ले जो मेरी भेंट होगी,
मगर धूर मेरी न जाएगी बाहर ।
नहीं आने लायक हूँ तेरे महल में,
महल की तो क्या, न ही लायक डगर के,
फिर भी पड़ा हूँ तेरे धाम में मैं,
'कभी तो मिलेगी चरणधूर' खातिर ।
उसी धूर की ही है चाहत किशोरी,
जिसे चाहते हैं श्री ब्रह्मा शिवादिक,
जिसे चाहते खुद त्रिलोकी के स्वामी,
जिन्हें लोग कहते तुम्हारे हैं जीवन ।
दिखाई न पड़ते ऋषि-मुनियों को,
जगत के पिता ब्रह्मा शिवादिकों को,
ध्यान में आते नहीं योगियों को,
राधा जिधर हैं उधर श्याम हाजिर ।
वहीं श्याम आते जहाँ तुम हो रहती,
गहवर की गलियाँ गली साँकरी की,
जहाँ रूठा करती चाहे मान मन्दिर,
मन्दिर विलास चाहे दान मन्दिर ।
मैं भी दीवाना उसी का हे राधे,
शिखर हो ब्रह्माचल की या होवे घाटी,
कुन्जों का मंजर या कोई सरोवर,
पड़ा तेरे दर पै मैं तेरी ही आशा ।

तुमसी न कोई दाता, मुझ सा न है भिखारी ।

दोनों की है पुरानी, आदत अनूठी भारी ॥
तुमने दिया सदा से, हमने हमेशा माँगा,
पर तेरे दर न माँगा, दर-दर बना भिखारी ।
माँगा हजारों दर पै, ठोकर हजारों खाई,
क्या देंगे वे बिचारे, जो खुद बने भिखारी ।
भूला रहा भटकता, छोड़ी जो अपनी मंजिल,
मैं क्या बताऊँ तुमको, किस-किस की खाई गारी ।
लाई है तेरे दर पै, मुझको बड़ी ये किस्मत,
जाऊँगा अब न उठके, सुन ले विनय हमारी ।
तेरे बिना श्री राधे, कुछ भी नहीं है जीना,
तुम ही हो मेरी जीवन, आनंद मूर्ति प्यारी ।
राधे तू है सदा से, मोहन की स्वामिनी जू,
तेरी शरण में रहते, गोपाल गिरिवरधारी ।
तेरी शरण में आये, महादेव जो शंकर,
महारास है पाया, शम्भो उमा बिहारी ।
भोले ने फिर सिखाया, त्रैमासिक व्रत सती को,
दुर्गा ने है फिर पाया, राधा कृपा आधारी ।
बोले फिर सदा शिव, बिन गौर तेज राधा,
श्याम को जो भजता, पातकी पाप भारी ।
महारास गोपियों ने, संग-संग गवा नचाया,

गलबैयाँ दे के फिरके, कठपुतली बन बिहारी ।
हम हैं बड़ी सुहागिन, मद ऐसा मन में आया,
झट लुप्त हो गए प्रभु, तड़प रहीं ब्रजनारी ।
वन-वन में ढूंढें विरहिन, मद का मान न भाया,
कहें वृन्दावन के वृक्षों, क्या देखे गिरिधारी ।
हे खग मृग ब्रज भूमी, बोलो श्याम कहाँ पर,
बिन श्याम भई कैसे, अद्भुत फूलन वारी ।
ओ जमुना लहराती, श्याम प्रेमरस वारी,
कमल अपार असंभव, बिन श्याम रस के प्यारी ।

श्याम तेरे दर पै लड़खड़ा के चले आये हैं ।

राह में गिरते पड़ते भी, हम तो चले आये हैं ।
कब से मैं चल रहा हूँ ये तो पता कुछ भी नहीं,
कितनी गलियों से निकलते चले आये हैं ।
जाने कितने हुये साथी, जाने कितने बिछुड़े,
चेहरे नित ही नये मिले, छोड़ चले आये हैं ।
चल रहा कारवां दुनियाँ में, सब साथ मगर,
चलना इकला ही सभी को, ये समझ पाये हैं ।
तेरे चरणों में पड़ा हूँ तू ज़रा देख सही,
तेरी नजरों की ही खातिर तो चले आये हैं ।

कोई इक पग चला कोई, दो पग ही था चला,
कोई दस पग चला उसको भी छोड़ आये हैं ।
न दिया साथ किसी ने भी जनम भर मेरा,
सभी निभाने की कहते थे, छोड़ आये हैं ।
ऐसे भी तो मिले दम भरते साथ देने का,
मौत ने तोड़ा, छोड़ा उसको, चले आये हैं ।
कोई तिरिया बनी कोई बनी जीवन साथी,
साथ उसका भी छूटा छोड़ चले आये हैं ।
छूटे माँ बाप भाई बन्धु स्त्री पुत्र आदि,
छूटी सारी दुनिया ही, चले आये हैं ।
कभी खेलते थे खेल बालापन के जो साथी,
जाने छूटे कहाँ गये, छोड़ चले आये हैं ।
सफ़र अजीब है दुनिया में, मुसाफिर हैं सभी,
सब नये-नये मिले बिछुड़ते छोड़ आये हैं ।
देखने वाले भी गए खेल ख़तम होते,
उन सभी को भी हम छोड़ चले आये हैं ।
साथी कोई नहीं था, न होगा इस दुनिया में,
सच्चा तू ही एक साथी, समझ पाये हैं ।
जाते सब अलग-अलग हैं, सबका साथ झूठा,
सच्चा बस श्याम पियारा है समझ पाये हैं ॥

तेरे दर पै दीवाने चले आ रहे हैं,

ये मस्ताने बढ़ते चले आ रहे हैं ॥
सभी कुछ है छोड़ा, सभी से है तोड़ा,
तुझ से लौ लगाने, चले आ रहे हैं ।
भले कोई रूठे, भले नाते टूटे,
ये तुझको मनाने, चले आ रहे हैं ।
तू ही एक दाता, तेरा गुन मैं गाता,
ये अपना बनाने, चले आ रहे हैं ।
जहाँ भी शरण ली, वहीं ठोकरें दी,
ये हालत सुनाने, चले आ रहे हैं ।
ये उजड़ी सी सूरत, ये बिगड़ी सी मूरत,
ये तुझको दिखाने, चले आ रहे हैं ।
न सुर ताल जानें, नचें गावें गाने,
ये तुझको हंसाने, चले आ रहे हैं ।
न रोकेंगे इनको कोई आँधी तूफाँ,
न पानी की वर्षा धुआंधार इनको,
न ऑले बरसते इन्हें रोक पाये,
ये सब झेलते ही चले आ रहे हैं ॥
लगन लग गई है इन्हें ऐसी भारी,
न व्यापेगी इनको मुसीबत ही सारी,
बीमारी भी व्यापेगी न इन सभी को,
इरादे फौलादी चले जा रहे हैं ॥
खाने की इनको परवाह नहीं है,

पीने की इनको जरुरत नहीं है,
गर्मी व सर्दी न रोकेगी इनको,
ये भूखे व प्यासे चले आ रहे हैं ॥
कहाँ इनकी मंजिल ये कौन जानता है,
है क्या इनका मकसद ये कौन जानता है,
कहाँ ये रुकेंगे ये कौन जानता है,
रिझाने तुझे ये चले आ रहे हैं ॥
इन्हें जीने मरने की फुरसत नहीं है,
इन्हें कहने सुनने की फुरसत नहीं है,
थके बैठने की भी फुरसत नहीं है,
बिन रुके इकदम भी बढ़े आ रहे हैं ॥
कोई इनको रोके ये रुकते नहीं हैं,
कोई इनसे बोले ये सुनते नहीं हैं,
कोई इनसे पूछे ये थमते नहीं हैं,
तीरों की तरह चले आ रहे हैं ॥
ये पहुंचेंगे तेरे ही ब्रज वृन्दावन में,
जहाँ खेलता गोप ग्वालों सखिन में,
गैयाओं में और ब्रजवासियों में,
ये जमुना किनारे चले आ रहे हैं ।
अरे मुरली वाले ये परदा हटा ले,
तेरा हम कहाने चले आ रहे हैं ।
इक बार बंसी बजा बंसीवारे,
बंसी के आशिक चले आ रहे हैं ।

ये मेरी जो तुमसे लगन की कहानी,

प्रलय के पीछे भी चलती रहेगी ।
जाना तो होगा नियम है प्रभू का,
न रहने पे मेरे भी चलती रहेगी ॥
ये दुनिया है सपनों की रंगीन महफिल,
सपनों के टूटे पे कुछ भी न मिलता,
सपने ही सपने सफर जो न खोया,
तो मोहन की प्राप्ति भी होती रहेगी ।
अगर जान जाये तो परवाह है क्या,
ये प्रेम कृष्ण का चलता ही रहता,
जगत से भी ऊपर है प्रेमी की दुनिया,
चलाचल निशानी भी मिलती रहेगी ।
लगन ऐसी दे दे कि चातक बनूँ मैं,
जो पीउ-पीउ रसना रटती रहेगी ।
लगन ऐसी दे दे पतंगा बनूँ मैं,
जलने में भी प्रीति चलती रहेगी ।
लगन ऐसी दे दे कि मछली बनूँ मैं,
पानी बिना जो तड़पती रहेगी ।
लगन ऐसी दे दे तू हिरनी बनूँ मैं,
बान सह बैन सुन झूमती मरेगी ।

लगन ऐसी दे दे जो गिरिजा तपस्विनी,
प्रभु हित जनम कोटि तप जो करेगी ।
लगन ऐसी दे दे तू जनक सुता सी,
वन-वन प्रभु संग भटकती फिरेगी ।
लगन ऐसी दे जो मीरा विरहिनी,
विष प्याला पी के भी नाचा करेगी ।
लगन ऐसी दे रीठोरनी मेड़ते सी,
नागों की माला पहरती फिरेगी ।
बना रानी रत्नावती आमेर की,
सिंह से लिपट गुण गाती रहेगी ।
बना रानी झाली सी मुझको लगन में,
भालों के पहरे में भी न रुकेगी ।

एक तेरा सहारा रहे साँवरे,

फिर जगत के सहारे रहे ना रहें ।
आसरा एक तेरा रहे साँवरे,
आसरे फिर जगत के रहे ना रहें ॥
जग की बगिया में खिलते हैं फूल बहुत,
खींच लेते हैं दिल को नजारे बहुत,
एक तेरा नजारा रहे साँवरे,

दुनिया के ये नज़ारे रहे ना रहें ।
ये अँधेरा जो आशाओं का है यहाँ,
महफिलों में जलाते प्रकाश यहाँ,
मन में तेरा उजाला रहे साँवरे,
चाँद सूरज उजाले रहे ना रहें ।
हैं उजड़ती यहाँ जग में नगरी सभी,
राख में मिलती हैं यहाँ हस्ती सभी,
मन में तेरा बसेरा रहे साँवरे,
दुनिया में फिर बसेरा रहे ना रहे ।
तू मेरा ही मेरा हर कोई कह रहा,
आज तक साथ जग में न कोई रहा,
साथ तेरा ही बस इक रहे साँवरे,
साथ दुनिया का फिर ये रहे ना रहे ।
इस जगत में हो चींटी या होवे हाथी,
देवता होवे या नर या हो तपस्वी,
तेरी ही इक शरण जो रहे साँवरे,
दूसरों की शरण फिर रहे न रहे ।
इस जगत की सब रीति ही स्वारथमयी,
ये झूठी व थोथी है ममतामयी,
प्रीती तेरी ही इक बस रहे साँवरे,
प्रीती ऐसों की फिर ये रहे न रहे ।

बिछड़े हैं जब से तुमसे, हमने न चैन पाया ।

प्यासे रहे भटकते, पानी न प्रेम पाया ॥
रूप के बाज़ार में सूरत हजारों देखीं, व्यापार ही तो देखा,
पर प्रेम कुछ न पाया ।
स्वार्थियों के हाथों, अपनों को भी जो बेचा,
दिल चूरकर के फेंका, शीशा सा टूटा पाया ।
ढूढ़ूँ मैं तुझको कैसे, तू ही बता दे नटवर,
है सब जगह पै तू ही, फिर भी न देख पाया ।
माना कि मर के जग में, सब कोई हैं बिछुड़ते,
मरने बिछुड़ने का ये, न भेद समझ पाया ।
कहते हैं साथ देंगे, हम साथ ही मरेंगे,
फिर खुद ही मार देते, ये अत्याचार ढाया ।
पूनो का चाँद निकला, आँखों को लाया ठंडक,
सूरज से रोशनी है, दोनों राहू ने खाया ।
फूला गुलाब कैसा, महकी है खुशबू कैसी,
पंखुड़ियों बीच कांटे, किस खूबी से छिपाया ।
सीता हरण हुआ जो, पांचाली चीर खेंचा,
है क्रूर बड़ी दुनिया, कोई समझ न पाया ।
बेइमानी से जुआ में, छीना सब पांडवो का,
चुप भीष्म द्रोण धर्मी, न कोई बोल पाया ।

झूठी है सारी दुनिया, ये झूठ पै बनी है,
सच्चा वही है जिसने, प्रभु की शरण है पाया ।
है धर्म सत्य श्रेय, कल्याण भी वही है,
जिसमें शरण प्रभु की, धर्मो का सार पाया ।
आया हूँ तेरे दर पै, जुग-जुग की प्यास लेकर,
लौटूंगा कैसे जब तक, तेरा दरस न पाया ।
तू बोले या न बोले, तू कर तेरी जो इच्छा,
कहता ही मैं रहूँगा, ये ही मुझे है भाया ।
दर छोड़ूं न कभी भी, मैं तेरा दीनबंधो,
जाऊँ कहाँ मैं किसको, दीनों का प्यार भाया ।
कोई न प्यार करता, कोई नहीं निभाता,
स्वारथ की पूर्ती करते, स्वार्थियों ने नचाया ।
हम बेसहारों का है, तू ही तो इक सहारा,
कैसे तुझे बताऊँ, मेरी समझ न आया ॥

हों तेरी, तेरी ही रहौंगी ।

एक दिना या ब्रज में बसिके, चरनन प्रीती लहौंगी ॥
कोई कछु कहै दुर्वचनन, सुनि नहिं नेक डरौंगी ॥
सहि हौं सब कछु मार धार हू, पर नहिं प्रीति तजौंगी ॥
पावक शीतल लगै सती को, ऐसे दुःख सहौंगी ॥

साँवरे तेरे लिये ही ये बरसते आँसू,

रोकने से नहीं रुकते ये हमारे आँसू ॥
दाँतों से होंठों को दाबा, छिपा लूँ प्रेम को मैं,
राज छिपता कहो कैसे, जो चल पड़े आँसू ।
तुमने पूछा कि क्यों हैं रोती, तुम्हारी आँखें,
चुप रही मैं तो मगर, बोल उठे ये आँसू ।
तुम न देखो ये बरसती, हुयी मेरी आँखें,
आ न जाये कहीं आँखों में, तुम्हारे आँसू ।
कभी भी आके न हाथों से, ये आँसू छूना,
डर है हाथों में न छाले, कर दें ये आँसू ।
कोई कितना भी होवे, पापों से काले मन का,
कालिमा को धोते, पश्चाताप के आँसू ।
भवसागर तो है अनंत, अनंत है गहरा,
डूबेगा कोई भला कैसे, तराते आँसू ।
तेरे ही प्रेम में रोता जो, बुलाया करता,
भावना पहुंचा ही देती है, करुणा के आँसू ।
तुम एक रस, सम हो सबमें, समान हो गिरधर,
तुमको भी विषम बना ही देते हैं आँसू ।
उत्तरा ने पुकारा रक्षा करो हे नटवर,
घुसाया गर्भ में तुमको, उत्तरा के आँसू ।

पुकारा गजराज ने, जब ग्राह ने पकड़ा,
वैकुंठ लक्ष्मी गरुड़ छुड़ाया, गज के आँसू ।
थक गिरा दस सहस्र गज बल का दुःशासन,
साड़ी न खेंच पाया, जिनमें भीजे थे आँसू ।
रास में गोपियों को छोड़कर छिपे तुम थे,
छिप सके न गोपियों के बहे थे जो आँसू ।
तेरे दर पै गया सुदामा, जो था दीन गरीब,
तुमने खुद धोये थे, चरण बहा अपने आँसू ।
जाने कितने तरे पापी आज तक ओ मोहन,
सब भये शुद्ध, धुले पाप, बहा के आँसू ।
आये थे दूत जम के, अजामील को लेने,
दूत सब भाग गए, देखे जो बहते आँसू ।

श्रीराधे मोहि न बिसारो ।

जैसे शिशु नहिं जानत मातहिं, तदपि मात तेहि पारो ॥
पंखहीन बच्चा को चिड़िया, चोंचन देती चारो ।
गौ बच्छा को चाट-चाट के, सब ही मल को टारो ॥
दूध पिलावति रक्षा करती, जीवन की आधारो ।
तुम हो वत्सलता की मूरति (जननी), यहि आशा मन भारो ॥

सदा चलते रहना, सदा चलते रहना ।

चलते मुसाफिर न राहों में रुकना ॥
तेरा लक्ष्य आकाश से भी हो ऊँचा,
सदा उड़ते रहना, सदा उड़ते रहना ।
साहस तेरा पर्वतों से भी दृढ़ हो,
सदा चढ़ते रहना, सदा उठते रहना ।
आये जो सागर भी राहों में तेरे,
सदा तिरते रहना, सदा तिरते रहना ।
आयें जो संकट के घेरे भी तुझ पै,
सदा लड़ते रहना, सदा लड़ते रहना ।
राहें तेरी सारी दुनिया जो रोके,
सदा बढ़ते रहना, सदा बढ़ते रहना ।
हाथों की टूटी जो पांवों की लूली,
माँ-बाप मरे यों अनाथ होके रहना ।
निष्ठा की पक्की जो भक्ति की सच्ची,
बाई किशोरी सदा यमुना रटना ।
बहन एक पड़ोसिन दया कर के आती,
बना के खिलाती, यों जीवन था कटना ।
घबराई, कब तक होगी सेवकाई,
ये बंधन सदाई, छोड़ा आना जाना ।

बाई अकेली विपत्तियां झेली,
भरोसे में खेली सदा नाम जपना ।
आई श्री यमुना बदल वेश अपना,
नया एक सपना बना के खिलाना ।
पहले ही दिन लूला-लँगड़ापन सुधरा,
ऐसी हुई इक अनोखी सी घटना ।
दिन तीसरे उठ रसोई बनाई,
लागी रटन श्री यमुना-यमुना ।
इक दिन बहन आयी, देखत हरसाई,
ये ही किशोरी बाई, हाथ न पाँव न ।
गाँव सारा आया, देखत चकराया,
कैसी ये दाया, कोई भेद समझे न ।
जमुना की जय बोलें, सब संशय खोलें,
यमुना भक्ति में डोलें, जय जमुना ॥

एक दया कौ रह्यो भरोसो ।

सब विधि भयो निराश राधिके, दीन और को मोसो ॥
तू है परम दयाल स्वामिनी, मेरी और न तोसों ॥
आस पड़्यौ गहवरवन चाहे, छाँड़ो चाहे पोसों ॥
सर्वेश्वरी कृष्ण की स्वामिनी, प्रेमभक्ति रस कोसो ॥

कुचलने वाले को खुशबू ही देना फूल से सीखो ।

ये वीराने चमन बन जाएँ, खिलना इस तरह सीखो ॥
छाँह पर बैठते पर वृक्ष बरसाते हैं फूलों को,
चलाते चोट पत्थर की, उन्हें फल बाँटना सीखो ।
सदा से ही रही परंपरा मोहन के प्यारों की,
उठे जो हाथ कातिल का, उसे तुम चूमना सीखो ।
जला करती है दुनिया, फूट नफरत जुल्म से हरदम,
बिखेरो चांदनी ठंडी, दिलों में चाँद से सीखो ।
दिले मोती सभी के टूट कर फैले बिखरते हैं,
इन्हें ले प्यार के धागे से माला गूँथना सीखो ।
अमानी ऐसे बन जाओ, कि खुद को भूल ही जाओ,
कभी भी सर उठाओ न, ये झुकना घास से सीखो ।
कुचल दो ऐसे पाँवों से कि तिनका टूट ही जाये,
मगर कुछ भी न बोला वो, ये चुप्पी तिनके से सीखो ।
जला देते हैं कूड़े को, कि कूड़ा राख बन जाता,
राख बन खाद करती उपज, परहित जल के भी सीखो ।
धरती खोदते रहते हैं, हल से जोतने वाले,
सहकर अन्न देती है, ये गुण धरती से भी सीखो ।
सबको साफ़ धो देता है, ऐसा पानी उपकारी,
दिलों की गन्दगी को धो दो, ये गुण पानी से सीखो ।
किसी के गन्ध को न रखती, चाहे खुशबू या बदबू,
सभी कुछ छोडती जाती, हवाएँ मौज से सीखो ।

जगत सब ब्रह्म है, शिक्षा जगत का देता कण-कण भी,
वेश्या सर्प भी दें शिक्षा, दत्तात्रेय से सीखो ।
पिटे बाईस बाजारों में थे कोड़ों से शरीरों पर,
मगर हरी नाम न छोड़ा, ये तो हरिदास से सीखो ।
मधाई ने था मारा, सर जो फूटा, रक्त भी निकला,
प्रभु को चक्र से रोका, निताई से क्षमा सीखो ।
कथाएँ करते रहते, पोट बाँध लाते हैं मोटी,
कथा करके भी ना कुछ लेते, ये शुकदेव से सीखो ।
कथा सुन-सुन भी न बदले, न कुछ ही सीख पाते हैं,
मुक्त हो देह भी भूले, परीक्षित नृप से तुम सीखो ।
देते सबको हैं उपदेश, पर यश नाम के भूखे,
असंग हो सत्कथा देना, यही जयदेव से सीखो ।
काटा हाथ पाँव दुष्टों ने अंधकूप में डाला,
उन्हीं को पूज्य माना था, यह गुण जयदेव से सीखो ।
भेजे नाग राणा ने, बनाये हार मोतिन के,
हंस के विष भी पी जाना, मीरा बाई से सीखो ।
आया ब्रह्मभूत सन्मुख, भयानक आकृति जिसकी,
प्रगट हुए कृष्ण उसमें से, नामदेव जी से ये सीखो ।
फूल-फल पत्र छाया देता रहता वृक्ष जीते जी,
मर के राख लकड़ी कोयला देना, वृक्ष से सीखो ।
ये समझाया कन्हैया ने सखाओं ग्वाल-बालों को,
तन-मन अर्थ वाणी से, परहित श्रेय है सीखो ।

दीनबंधु रे दीनानाथ रे, तोहि छोड़ और कछु नाहीं माँगू रे ॥

तू ही मेरो सोना चाँदी, तू ही मेरो हीरा मोती,
तू ही मेरो लाल रतन, तोहि माँगू रे ।
तू ही बंधु माता पिता, तो ही सों मेरो सब नाता,
तू ही मेरो प्राण जीवन, तोहि माँगू रे ।
तू ही मेरो एक साथी, आंधरे की जैसे लाठी,
तू ही मेरे दोनों नयन, तोहि माँगू रे ।
तू ही मेरी खेती बारी, तू ही जीवन का है साथी,
तुझसे मेरा लेना देना, तोहि चाहूँ रे ।
तू ही मेरी जीवन नैया, तू ही नैया का है खिवैया,
अर्जुन का रथ हाकनहारा, तोहि चाहूँ रे ।
तू ही लज्जा राखन हारा, तू ही मर्यादा है मेरा,
द्रोपदी चीर बढ़ावनहारा, तोहि पुकारूँ रे ।
तू ही निर्धन का धन नाथ, तू ही निर्बल का बल नाथ,
पांडवों का बचावनहारा, तोहि सुमिरूँ रे ।
तू ही ध्रुव का गुरु नारद है, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,
छटे मास में आवनहारा, तोहि बुलाऊँ रे ।
तू प्रह्लाद का राखनहारा, खंभफाड़ हिरनाकुश मारा,
नरसिंह रूप धारनहारा, तोहि ध्याऊँ रे ।
तू नरसी का सांवलशाह, हुंडी हित संत करे तलाश,

हुंडी को चुकाने वाला, तोहे माँगू रे ।
रामा का भात भरने वाला, नभ से वस्त्र गिराने वाला,
सवा पहर तक देने वाला, तोहे माँगू रे ।
तू ही किसना बाढ़ई बन, टूटी गाड़ी लाया,
बूढ़े बैलों से तू ही, अंजार गाँव में आया ।
भात भरने वाले रे दीनानाथ रे, तोहे छोड़ और कछु न ही माँगू रे ।
रामा बोली छूछक देने, ताल बजावत आया,
कंठी माला और तूमड़ा, मिरदंग शंख बजाया ।
लज्जा राखन हारे रे दीनानाथ रे, तोहे छोड़ और कछु न ही माँगू रे ।
कह नरसीलो सुणरी पूतरी, तोसूँ मिलने आया,
दैन लैन को म्हारे नाही, सांवलशाह बुलाया ।
आश्रित पालन हारे रे दीनानाथ रे, तोहे छोड़ और कछु नाहीं माँगू रे ।
एक पलक में सब जग पेलै, साँवलिया गिरिधारी,
द्रुपदसुता कौ चीर बढ़ायो, अबकी बेर हमारी ।
जन रखवारे रे दीनानाथ रे, तोहे छोड़ और कछु नाहीं माँगू रे ॥

कहाँ जाऊँ वृषभानुनंदिनी ।

भरमायो माया नटनी ने, फंदिनी छरछंदिनी ॥
पाई बड़भाग व्रजधरिणी, प्रेमा विश्व वंदिनी ॥
तप्त भयौ त्रयताप दग्ध अब, तब पद नख शशि चंदिनी ॥
तुम आह्लाद प्रेम रस रूप, ब्रजमणि चित्तअनंदिनी ॥

कृष्ण का नाम लेकर जो मर जायेंगे,

वो हारे हुये जीत कर जायेंगे ॥
नाम जिसने लिया वो ही जीवन जिया,
वरना मर मर के जाने किधर जायेंगे ।
ये काया भी तेरी जले एक दिन,
राख के ढेर तेरे बिखर जायेंगे ।
नाम लेने से खुद तो तरेगा ही वो,
उसके माता-पिता पुरखे तर जायेंगे ।
नाम लेकर मरेंगे उसी कृष्ण का,
वो जिधर रहते हैं हम उधर जायेंगे ।
जग में सुख न था नहीं है न रहे,
नाम छूटा तो दुख ही इधर पायेंगे ।
जाने कितने जनम मेरे यूँ ही गये,
तेरे पिछले व अगले सुधर जायेंगे ।
बिना नाम जोग जज्ञ साधन सभी,
सारे के सारे निष्फल हो जायेंगे ।
नाम ही साधन है नाम ही सिद्धि है,
नाम से सद्गति ही सभी पायेंगे ।
नाम अग्नि जलायेगी सब कर्म फंद,
नाम सुनते ही जम दूत भाग जायेंगे ।

आये अजामिल को जमदूत लेने,
पिटे विष्णु दूतों से भाग जायेंगे ।
पिटे दूतों से जो सुना तो यम बोले,
हरिनाम से पाप भाग जायेंगे ।
न तप यज्ञ संयम सदाचार से,
समूल पाप राशि सब कट पायेंगे ।
प्रायश्चित्त कर्म सभी मिलके,
विशुद्ध जीव को नहीं कर पायेंगे ।
जल जायेंगे पाप शुभ कर्मों से,
पर वासना न हटा पायेंगे ।
पाप जलेंगे वासना भी भगेगी,
चित्त भी अशुद्ध शुद्ध हो जायेंगे ।
बोले यम नाम से पापी ही क्या,
पापमय जगत शुद्ध हो जायेंगे ।
दूतो नहीं जाना भक्तों के पास,
वे भक्ति की शक्ति से तर जायेंगे ।
कृष्ण पद विमुखों को लाओ पकड़ के,
शरण बिना कैसे तर पायेंगे ।
प्रभु कृपा करें अपराध को क्षमें,
कृपा से शरण हम समझ पायेंगे ।

कृष्ण से प्यार करना अलग बात है,

प्यार करके निभाना अलग बात है ।
जीवन अर्पण की कहना अलग बात है,
अर्पण करके दिखाना अलग बात है ॥
साथ हँसना घड़ी भर अलग बात है,
उम्र भर साथ देना अलग बात है ।
सौ जनम प्यार करने की खाते कसम,
सिर को भी काट देने की कहते सनम,
धामवास की कहना अलग बात है,
धाम ही में जीवन देना अलग बात है ।
लोक परलोक का बंधन जो तोड़ के,
त्याग जो करते हैं ताज भी छोड़ के,
सोती आँखों के सपने अलग बात है,
देखना जागी आँखों अलग बात है ।
इश्क मैंदां में कायर लड़ेंगे नहीं,
फेंट रोकेगा दर्दीला दिल कोई इक,
लंबी बातें बनाना अलग बात है,
जंगे जौहर दिखाना अलग बात है ।
बात करते हैं तीन लोक के त्याग की,
बिक जाते हैं लोभ दमड़ी की चमड़ी की,
त्याग की बात करना अलग बात है,
त्याग करके दिखाना अलग बात है ।

दिल को देते जिगर जान देते सदा,
चूम कदमों की ख़ाक को रखेंगे सिर,
गीत मिटने के गाना अलग बात है,
सच में मर-मर के मिटना अलग बात है ।
त्याग की बातों को लोग करते बहुत,
अच्छी शिक्षाएँ जन को सुनाते बहुत,
माया छोड़ो ये कहना अलग बात है,
सच में छोड़ देना अलग बात है ।
कृष्ण के गीत गाते हैं महफ़िलों में,
कृष्ण कीर्तन सदा करते हैं भक्तों में,
नाम की महिमा कहना अलग बात है,
नाम निष्ठा में जीना अलग बात है ।
बातें करते सदा ध्रुव प्रह्लाद की,
दृष्टि रखते सदा चमड़ी और दमड़ी की,
वेश भक्तों का रखना अलग बात है,
भक्त बनना सही में अलग बात है ।

प्रेम दायिनी देहु प्रेम निज ।

याचत प्रेम तत्व तुमसों हरि, मेरो चित्त जाय रस सों भिज ॥
भोग मोक्ष की आशा फाँसी, फँस्यो मरत उपजत जिय मनसिज ॥
काम अग्नि की लपट जरत हौं, देहु बुझाय चरनरस सरसिज ॥
वेगि हरहु बाधा राधा यह, पल-पल आयु घटत है छिज-छिज ॥

उठो रे, उठो रे, उठो रे, उठो रे,

उठने की बेला चली जा रही है ॥
बीत चुकी है रात अँधेरी,
चौरासी की हेरा फेरी,
जगो रे - जगो रे, जगो रे - जगो रे,
जगने की बेला चली जा रही है ॥
अब ना जगोगे, फिर ना जगोगे,
सदा-सदा को सोते रहोगे,
छोड़ो रे-छोड़ो रे, आलस छोड़ो रे,
बेला सुहानी चली जा रही है ॥
सोते बीत गये जुग अगनित,
जनमे मरे देह ये जित तित,
मोह उनींदी अंखिया खोले रे,
बेला सुनहली चली जा रही है ॥
हरि की कृपा से भाग जगे रे,
पाया है नर तन भोर सबेरे,
चेतो रे -चेतो रे, चेतो रे -चेतो रे,
भजन की बेला चली जा रही है ॥
मोह अन्धेरा छाय रहा है,
जग चेतनता खोय रहा है,
सुनो रे सुनो रे, सुनो रे सुनो रे,
जागरण बेला चली जा रही है ॥

सपना सोना सपना जगना,
सपना जीना सपना मरना,
जगो रे जगो रे, जगो रे जगो रे,
ज्ञान की बेला चली जा रही है ॥
सपना स्त्री, भोग है सपना,
सपना मिलना-जुलना सपना,
उठो रे उठो रे, उठो रे उठो रे,
सपना बिछुड़ना हुई जा रही है ॥
महल तिवारे हैं सब सपना,
ब्याह बरात सभी है सपना,
जगो रे जगो रे, जगो रे जगो रे,
धन सम्पत्ति लुटी जी रही है ॥
निकसी फूँक टूट गया सपना,
चिता जली में जल गया सपना,
देखो रे देखो रे, देखो रे देखो रे,
राख की ढेरी बही जा रही है ॥

गोपाल तेरी यादें आ तड़पाया करती हैं,

कठिनाइयाँ मेरे लक्ष्य को, आसां ही करती हैं ॥
बादल गरजते धैर्य मेरा आजमाते हैं,
बिजली चमकती रोशनी राहों में करती हैं ।
क्या चाल थी अलबेली उस अलबेले प्यारे की,

हर दम तेरे घुँघरू की झनक दिल में बजती है ।
झुक झूम चलता सुन तेरे यादों की शहनाई,
मैं लड़खड़ाता हूँ यही दुनिया समझती है ।
दिल थाम के जब बैठा तेरी यादों में डूबा,
समझे सभी ये प्रेम बाजी हारा करती है ।
कोई गालियाँ देता है भले ही दिया करे,
हर दम मेरे कानों में बंसी तेरी बजती है ।
मोरों को देखा नाचते काली घटाओं में,
ओ मोर मुकुटी झाँकी तेरी झाँका करती है ।
जब जब पपीहा पीउ-पीउ, बोला करता है,
जाने क्यों कलेजे में मेरे हूक उठती है ।
काली घटाएँ जब-जब आया करती उमड़ कर,
बरसात से पहले मेरी आखें बरसती हैं ।
बादल गरजते जब भी कोयल कूका करती है,
सब रात जाती जागते नींद भाग जाती है ।
गोविन्द तेरी याद आ हैरान करती है,
बिन तेरे लीला स्थलियाँ ये तड़पाया करती हैं ।
बरसाने में जब आया राधा दर्शन न पाया,
राधा राधा कह आँखें आँसू ढारा करती हैं ।
छिपी कहाँ हो राधे करुणा बान भुलाई,
कृपामयी होकर कैसे निठुराई करती हैं ।

चिंता काहे करे कि राधा रानी है सरकार ।

चिंता से कुछ काम बने नहीं, उल्टे होय बिगाड़ ॥
चिंता से बढ़ जाय अहंता, चिंता से बढ़ जाय ममता ।
पांच अविद्या बढ़ती जावैं, मन में बढ़े अंधकार ॥
सब कुछ सौंपा प्रभु को अपना, फिर कुछ रहा न जग का सपना ।
सुख- दुःख ये तो भेद हैं मन के, मन ही के ये विकार ॥
सुख भी तेरा दुःख भी तेरा, सब कुछ तेरा कुछ न मेरा ।
समता में जब भेद मिटे तो, रहा न कुछ भी विकार ॥
मैं औ तू का भेद छोड़ दे, सब कुछ उनका रूप समझ ले,
दुःख और सुख ये नाम भेद हैं, भेद हैं मन के विकार ॥
मीरा ने विष पीया मृत्यु की, चिंता रही न नेकहु मन में,
रही नाचती घुँघरू बाँधे आनंद सिंधु लिये है मन में,
चिन्ता करती नाच न पाती, ना घुँघरू झनकार ॥
सती चली जब दक्ष पिता को शंकर जी ने था यह देखा,
मिले मान ना पिता से नेकहु मिटै न दैव का लेखा जोखा,
सह नहीं पायेगी मेरा अपमान तनक भी सती विसेखा,
ऐसा लगता है कि प्रिया की, मिट गई जीवन की ये रेखा,
चिंता को मैं छोड़ भजूँ अब केवल कृष्ण मुरार ॥
यज्ञ में शिव का मान न देखा, शिव का कहीं भी भाग नहीं,
शिव द्रोही से जन्म लिये इस, तन को राखूं कभी नहीं,
योग अग्नि से तन को जारा, प्रेम निभाया सती सही,

धिक् वह जन्म सुने जो निंदा, देखे प्रभु अपमान कहीं,
जाय मिलूँगी मैं शंकर से, मेरी मति में यही विचार ॥
वृत्रासुर ने देखा इन्द्र खड़ा लै ऋषि का वज्र अमोघ,
डरता नहीं नेक भी वृत्रासुर, भक्ति का ऐसा ओघ,
इन्द्र छोड़ दे वज्र अभी क्यों करता है तू देर ओ शक्र,
मैं मरकर छूटूँ बंधन से छोड़ा जग निःसार तक्र,
चिंता रहित देखकर बोला, इन्द्र सिद्ध तू है ओ दानव,
मृत्यु खड़ी है भय नहीं चिंता वह तो परम सिद्ध है दानव,
माया जीत लिया जिसने, वह निर्भय रहता निर्विकार ॥
मारण यत्न कियो प्रहलाद को, हिरनाकश्यप ने भारी,
नेकहु न चिंता की मन में, ऐसा कृष्ण भक्त वो भारी,
हिरण्यकशिपु गदा हाथ ले बोला कहाँ तेरा भगवान ।
वह हरी जिसके बल पर तू करता है शासन का अपमान ।
बालक डरा न नेक न चिंता, नेक न राखा उसका मान ।
प्रभु सर्वत्र तो 'क्या खम्भे में', 'हाँ' खंभे में है भगवान ।
मारी गदा खंभ जो टूटा, प्रगट भये हरि सिंहाकार ॥
चिंता और चिता दोनों में, बहुत बड़ा कोई अंतर नाईं ।
दोनों अग्नि है देह जलावै, एक जीते, एक शव को भाई ।
जीवत को जलावै चिंता, चिता जलावै मुर्दे को ।
दोनों को ज्ञानाग्नि जलावै और बचाती भक्तों को ।
चिंता रहित का नाम भक्त है योगक्षेम का नाही विचार ॥

गोविन्द गोपाल मोहन मुरारी,

राधा रसिक श्याम राधा बिहारी ।
जागे पुजारी हरि मंदिरों में,
लागे सुनावन प्रभु को प्रभाती,
हे दीन बन्धु अब नींद खोलो, राधा रसिक श्याम... ॥
जल भरने को गोपी चली है,
गागर उठा कर यमुना निकेती,
बहते हुये जल ने ये गीत गाया, राधा रसिक श्याम ... ।
ले ले मथानी दधि को बिलोती,
गाती मधुर बैन कहती सप्रीति,
प्यारी मथानी तू ये गीत गा दे, राधा रसिक श्याम ... ।
दोहनी लिये गोद गायों को दुहती,
आ दूध पीले कन्हैया, ये कहती,
मेरी तू प्यारी गैया ये गा दे, राधा रसिक श्याम... ।
श्याम मिलन को बेचन चली दधि,
दधि लो ये भूली औ हरि लो ये कहती,
मटकी लिये शीश गाती दिवानी, राधा रसिक श्याम ... ।
बैठी रसोई करती ये गाती,
आ श्याम तुझको मैं व्यंजन बनाती,
व्यंजन बनाती औ भोग लगाती, राधारसिक श्याम... ।

जब से तेरे चरणों में, मन अपना जरा लगाया ।

फीकी पड़ गई सारी दुनिया, जिसमें रहा लुभाया ॥
फीके हो गये कुटम कबीले, फीके नाते रिश्ते,
फीकी हो गई सुंदर नारी, जिसने चित्त चुराया ।
फीकी हो गई सारी दौलत, फीके सोने चाँदी,
पत्थर हो गये हीरे मोती, फीकी हो गई माया ।
फीके भोग विलास भये सब, फीके है सुख सारे,
फीके हो गये मीठे सारे, मन में तू ही समाया ।
फीके राग द्वेष भये सब, शत्रु मित्र भये फीके,
तू ही तू दीखता है सब में, तेरी छबि दरसाया ।
फीके हो गये राजा रानी, फीकी अपनी हस्ती,
फीके सारे देव भये हैं, सिर तेरे पद नाया ।
अपना कौन पराया जग में, ये सब हो गये फीके,
तेरे बिना अँधेरा जग में, तू ही रोशन आया ।
पा न सका मैं अब तक तुझको, पाई है ब्रजधूर,
इसमें मेरा जीना मरना, तेरा ही दर भाया ।
पानी कितनाई मथो भले ही, उससे घी ना निकले,
सारहीन है वस्तु जगत यह, इसमें सार न पाया ।
बालू को बरसों तक पीसो, तेल कभी न निकले,
सारहीन माया से प्रभु का, सार कभी ना पाया ।

साधन कितना करे भले ही सिद्धि को ही पाया,
जग से उदासीन हो कर भी विमुक्त यदि कहलाया ।
बिना कृष्ण की कृपा कभी भी माया ना तर पाया,
जोग यज्ञ व्रत जप तप संयम सदाचार भी बनाया ।
वेदाध्ययन करे कितना भी शास्त्र विचार कराया,
बिना कृपा राधा के वश में नहीं कृष्ण हरिराया ।

बताओ राधे तुम्हें छोड़ कहाँ जाऊँ ।

कौन के द्वारे जाये पुकारूँ, कहाँ पै माथा नाऊँ ॥
कौन रसेश्वरी को रासेश्वर, को रस देने वाली ॥
किसके चरण कमल आराधक, वंशीधर वनमाली ॥
तुम तजि और कौन को देखूँ, कौन के हाथ बिकाऊँ ॥
ब्रजवासिनी गँवार भीलनी, डूबी कृष्ण प्रेम में ।
शुक ने कही दुष्ट व्यभिचारिणी, जिनको भागवतम में ॥
तुम्हें पाय भई विधि वंद्या, तुव पद महिमा गाऊँ ॥
जिन हरि के पद ब्रह्म शिवादिक, देववृंद नहिं पाते ॥
जोगी जपी तपी सन्यासी, ज्ञानी ध्यान न पाते ॥
उन्हें नचाती ताली दै गोपी, तुम पर बलि जाऊँ ॥
यमुना तट हरि रास रचायो, तुमरे पद आश्रय कर,
शिव नाचे गोपी तन धर कर, नाम पर्यौ गोपीश्वर,
वंशीवट दियो वास कृपामयी, तुमरी कृपा मनाऊँ ॥

कृपा ही करेगी, कृपा ही करेगी,

सभी कामों को इक कृपा ही करेगी ।
योग भी करेगी, क्षेम भी करेगी,
प्रभु के वचन को कृपा ही भरेगी ॥
पांच पांच पांडव पति थे जिसके,
सभी देव जीते वो ऐसे बली थे,
उन्ही के ही आगे पकड़ द्रोपदी को,
खींचा था बालों से कैसे बचेगी ।
जूए में हारे थे पांचाली को जो,
स्वयं को भी हारे थे राजा युधिष्ठिर,
इन्द्र विजयी खांडव-वन वाले अर्जुन,
भीम वही कीचक को मारने वाले,
हिडिम्ब, बकादी, रावण सम बली जे,
भीम उन सभी का थे वध करने वाले,
बैठे सभी चुप बचे लाज कैसे,
टेरती दादाजी दादाजी दादाजी,
युद्ध में गुरु ईश राम को छकाया,
रथारूढ़ हनुमान को भी छकाया,
इक अबला बचा लो, बचा लो - बचा लो,
नहीं वंश सारे की नाक कटेगी ।
तुम्हें जीतने वाला कोई न जग में,
तुम्हें मारने वाला काल भी न जग में,

इच्छा मृत्यु वाले तुम चाहो बचा लो,
नहीं तो तुम्हारी भी कीर्ति घटेगी ।
गयी द्रोणाचार्य गुरु की शरण में,
यज्ञाग्नि कुंड से प्रगट हो जगत में,
तुम्हारे ही शिष्यों ने चीर जो खींचा,
चीर के साथ वीरता न बचेगी ।
लौटी निराश कृपाचार्य से भी वह,
अमर थे बंधे अन्न दोष से सारे,
नभ में सभी देवता देखते चुप,
असहाय ऋषि मुनि देखते चुप,
निराश हो दांतों से साड़ी छोर पकड़ा,
गोविन्द गोविन्द ही टेरती थी,
गोविन्द गोपाल ब्रज के बचैया,
गोपी ग्वाल-बालों के लाज रखैया,
अनाथों के नाथ सदा दीन पालक,
बताओ मेरी लाज कैसे बचेगी ।
पति माँ पिता से निराश पांचाली,
सभी ही बलों से निराश पांचाली,
केवल श्री कृष्ण की आस पांचाली,
आये प्रभु अब लाज भी बचेगी ।
साड़ी बने हैं अनंत अनादि,
व्यापी सर्वशक्ति साक्षी अनादी,

हारा गिरा दुःशासन खैंच खैंचे,
साड़ी न अंत पाया खैंच खैंचे,
कहानी बनी द्रौपदी की जो साड़ी,
अनंत बनी द्रौपदी की जो साड़ी,
गोविन्द बनी द्रौपदी की जो साड़ी,
भक्ति रूपा बन गई थी वो साड़ी,
महाभारत बनी द्रौपदी की जो साड़ी,
कुरुनाश बनी द्रौपदी की जो साड़ी,
पांडव विजय बन गयी थी जो साड़ी,
सारी सभा की बनी नाश साड़ी,
अत्याचार की दाह बनी थी जो साड़ी,
अनंत ही बची द्रौपदी की जो साड़ी,
कृपा बन गयी द्रौपदी की जो साड़ी,
साड़ी बचेगी कृपा ही बचेगी ॥

सुनहु विनय श्री राधा रानी ।

भवसमुद्र को घोर अंधेरो, गहरो जाको पानी ॥
बढ़यो जात हों तीक्ष्ण धार में, टेरत आरत बानी ॥
और सहाय यहां नहि मेरो, यह मेरी मति ठानी ॥
कर गहि मोहि उबारो श्यामा, कृपा दान कर दानी ॥

गोरी साँवरी झाँकी दिखा दोगे तो बलिहारी ।

मनोहर माधुरी मूरत दिखा दोगे तो बलिहारी ॥
पड़ी मँझधार में नैया खिवैया कोई नहीं मेरा,
ये नैया पार जो गिरिधर लगा दोगे तो बलिहारी ।
सकल जग ढूँढ़ के हारी पता लगता नहिं तेरा,
ठिकाना अपने रहने का बता दोगे तो बलिहारी ।
हृदय में ध्यान हो गिरिधर (राधे) जीभ पर नाम हो तेरा,
पाठ निज नाम का भगवन पढ़ा दोगे तो बलिहारी ।
पिता सुत मात हो बन्धु जगत में कोई नहीं मेरा,
मुझे चरणों का सेवक तुम बना लोगे तो बलिहारी ।
साथी तुम सदा के हो औ संगी तुम पुराने हो,
शरण में तेरी मैं आया निभा लोगे तो बलिहारी ।
ये माना ज्ञानहीन मैं हूँ दयालो भक्तिहीन मैं हूँ,
शरण का ही दिखावा है इसे सच कर दो तो बलिहारी ।

कबहि कृपा की ढार ढरोगी ।

आरत दीन परयो हूँ रज में, निज पद रज मम शीश धरोगी ॥
हौं अयोग्य पै पद रज याचत, यह साहस पर कबहि हंसोगी ॥
मो दुखिया की करुणा बानी, कृपामयी तुम कबहिं सुनोंगी ॥
कनककंज मुख अलकन अलियुत, खंजन अँखियन कब निरखोगी ॥

यही करुणा करना करुणामयि, मम अंत होय बरसाने में ।

पावन गहवरवन कुञ्ज निकट, रज में रज होय मिलूँ ब्रज में ॥
जिस क्षण यह प्राण निकलने लगे, जीवन हाथों से जाने लगे,
उस क्षण कुछ भी नहीं याद रहे, बस ध्यान रहे श्री चरणों में ।
जिन पद की सेवा हरि करते, निज कर से नित जावक धरते,
यदि उन चरणों की याद रही, फिर क्या भय है मर जाने में ।
विकराल काल को देखूँगा, अति मृत्यु कष्ट को झेलूँगा,
मर के भी दर नहीं छोडूँगा, विश्वास यही मेरे मन में ।
मरना फिर जन्म यहीं लेना, लख चौरासी का चक्कर है,
तब तक यह चक्कर चलता है, जब तक आये न चरणों में ।
चाहे छूटे माता ईश्वरी, चाहे छूटे पिता परमेश्वरा,
चाहे छूटे सब जीवन संगी, पर आना है इन चरणों में ।
अंतिम क्षण जिसकी याद रहे, उसकी ही प्राप्ति होती है,
हे नाथ तुम्हारा वचन यही, सार्थक होवे श्री चरणों में ।

धनि-धनि बरसाने की लाढ़ो ।

वश करि नंदगाँव को कान्हा, मिली अंकभरि गाढ़ो ॥
अधर सुधा रस प्याय कुंवर को, विरह सिंधु ते काढ़ो ॥
रहत अधीन सदा पिय सनमुख, करजोरे है ठाढ़ो ॥
युगल केलि गहवर वीथिन में, प्रेम तरंगनि बाढ़ो ॥

जिस गली से दिवाने तेरे चले,

उस गली प्रेम धारा करोड़ों चलीं ।
दिवाने जो पी नाम प्याले चले,
नाचते-गाते मस्ती लुटाते चले,
जिस गली नाम गंगा बह के चली;
उस गली गंगा मैया करोड़ों चली ।
प्रभु प्रेम में जो मर मिटके चले,
वे अमर हो चले, वे अमर हो चले,
जिस गली ऐसे अमरों की टोली चली;
उस गली मौत की मौत आ निकली ।
खाक में जो हस्ती मिटाते चले,
उसकी लौ से ही लौ को मिलाते चले,
जिस गली ऐसी प्रेम की ज्योति जली;
उस गली माया की ये अँधेरी टली ।
जिनको जग की न माया व्यापी जरा,
मोह-ममता ने छूआ न जिनको जरा,
जिस गली उनकी पद-रेणु उड़के चली;
उस गली जम की फाँसी की विपदा टली ।
जिनने छोड़े सहारे जग के सभी,
जिनकी बाँहें स्वयं कृष्ण ने ही गही,
जिस गली से ऐसे सहारे चले;
उस गली पार नैया सभी की चली ।

जिनकी आहें सदा खींचती प्रान को,
जो बुलाते ही रहते सदा श्याम को,
जिस गली टेरती ये टोली चली;
उस गली उनकी करुणा बरसती चली ।
जिनको सोने व चाँदी ने पकड़ा नहीं,
जिनको भोगों ने कीड़ा बनाया नहीं,
जिस गली ऐसे उज्जल सितारे चले;
उस गली काली बदली कभी न ढली ।
जिनको 'देह, इन्द्रयों' की आसक्ति नहीं,
जहाँ ऐसी विरक्ति अभिनिवेश न कहीं,
जिनको अपना-पराया कुछ भी नहीं,
जिनको सब कृष्ण हैं बस यही ध्यान है,
सबको दिव्य प्रेम सुख को लुटाती चलीं;
जिस गली झूमती ऐसी टोली चली;
उस गली प्रभु की कृपा बरसती चली ।

तेरी मर्जी का हूँ मैं गुलाम चाहे जैसे नचा ले ।

हँसा ले, रुला ले; रिझा ले, खिजा ले;
मैं तो बिक ही चुका बेदाम चाहे जैसे नचा ले ।
सीता को तूने हरन करायो, जगजननी को कैद करायो;
रावण-वध को जतन करायो, देवन को भय-मुक्त करायो;
ऐसे ही तेरे काम चाहे जैसे नचा ले ।

देवकी माँ को कैद करायो, वासुदेव को बेड़ी पहरायो;
कन्या युत भाई मरवायो, कंस को पाप घड़ा भरवायो;
(वाको) कर दियो काम तमाम चाहे जैसे नचा ले ।
प्रह्लाद को आग में जरवायो, हिरण्यकशिपु अत्याचार करवायो;
जल में डुबायो अस्त्र चलवायो, दिग्गजन के नीचे दबवायो;
नरहरि बन गए श्याम चाहे जैसे नचा ले ।
मीरा को विष लै पिलवायो, जहर पिलाय अमर करवायो;
भूतमहल में शयन करायो, वन-वन विरहिन को भटकायो;
लीन कियो निज धाम चाहे जैसे नचा ले ।
ब्रज पर इन्द्रकोप करवायो, प्रलयंकर वर्षा करवायो;
सब ब्रज की रक्षा करवायो, नख पै श्रीगिरिराज उठायो;
गिरिधारी कहायो नाम चाहे जैसे नचा ले ।
कालियनाग से ग्वाल मरवायो, अजगर अघ के मुख घुसवायो;
जमुना जल को शुद्ध करायो, मरे भये सब ग्वाल जिवायो;
जिवायो मरे तमाम चाहे जैसे नचा ले ।
सुख औ दुःख तेरेई रूप हैं, जीवन-मरण तेरेई रूप हैं;
हानि-लाभ तेरेई रूप हैं, मान-अपमान तेरेई रूप हैं;
तू है सर्वरूप घनश्याम चाहे जैसे नचा ले ।
वंशीवट पै वंशी बजायो, शरद पूनो महारास करायो;
कोटि-कोटि गोपिन नचवायो, ता-ता थैया नृत्य करायो;
रासेश्वर अभिराम चाहे जैसे नचा ले ।

दाता का दर बड़ा है , उस दर पै चल भिखारी ।

जो भी गया है दर पै, वह न रहा भिखारी ॥
माँगा जो भीख तूने संसारियों के दर पर,
देंगे वो क्या किसी को, जो खुद बने भिखारी ।
जिनसे तू माँगता है वो खुद बने लुटेरे,
लूटा है ऐसा तुझको, तुझे कर दिया भिखारी ।
तू क्यों नहीं समझता, उम्मीद में है मरता,
उम्मीद में मरेगा, फिर होगा तू भिखारी ।
जुग-जुग से तूने माँगा, हर जन्म में है माँगा,
अब तक न आस टूटी, ऐसा बना भिखारी ।
भोगे भी भोग सारे, विष्ठा विषय के सारे,
हर दर पै माँगता है, दर-दर बना भिखारी ।
भिखमंगे होश कर ले, उसका ही दर पकड़ ले,
है एक वो ही दाता, उस दर का बन भिखारी ।
दुःखियों की जो है सुनता, दुःख को सदा मिटाता,
तेरी वही सुनेगा, यह सीख सुन भिखारी ।
जिसकी हजारों आँखें देखेगा तेरी दशा को,
जिसके हजारों काने वो ही सुनेगा दुःख को,
ऐसा भरोसा जिसको वो फिर कहाँ भिखारी ।
जिसके हजारों हाथें वही हरेगा दुःख को,
जिसके हजारों चरणें आये पुकार सुनके,
ऐसा भरोसे वाला वह न रहा भिखारी ।

कीर्ति कुमारी रूप उजारी

कीर्ति कुमारी रूप उजारी, प्रभु की प्यारी देखहु मेरी ओर ।
गौर अंग की चमक निराली, चमकनि दामिनि-सी मतवाली,
अद्भुत शोभा, हरिमन लोभा, देखत छोभा, रति अरु काम करोर ।
चन्द्र लजावनि मुख सुन्दरता, सुधा लजावनि वचन मधुरता,
हारे तन मन, नहिं कछु साधन, शरणागत जन, रसबरसहु घनघोर ।
अखिल लोक नायक नन्दनन्दन, प्रेमाधीन करत पग वन्दन,
मुरली वारे ब्रजरखवारे, नन्ददुलारे शोभित दक्षिण ओर ।
डूबत हों भवसागर माहीं, देहु सहारा पकरहु बाँही,
राधा नामा, सुन्दरभामा, करुणाधामा, खैंचहु मेरी डोर ।

मुरली वारे नन्ददुलारे प्रानन प्यारे अब तो कृपा करो ।

तुम्हरी कृपा मनुज तन पायो, निज जननी की कूँख लजायो,
विषयन धावत जन्म गँवावत पतित कहावत तुम निज विरद धरो ।
दुसह काम दिन रैन जरावत, लै घृत विषय महाग्नि बुझावत,
रसमय काया दै पद छाया टारहु माया मोपै नेंक ढरो ।
निर्भयपद तव पद बिसरायो, जन्म अनेक महादुःख पायो,
भवभयनाशक आश्रितपालक शरणनिवाहक अघदुःखताप हरो ।
दम्भ रैन दिन छूटत नाहीं, सरलता मन को छूवत नाहीं,
लोभ मदारी आसा डोरी मन कपि नाचत माया नाच जरो ।

मोहे लै चल अपनी नागरिया बंसी वारे साँवरिया ।

अपने घर से दूर हूँ मैं, प्रेम राह से दूर हूँ मैं;
ये है पाप की नागरिया ।
चलने में मजबूर हूँ मैं, कदम-कदम पै चूर हूँ मैं;
भारी पातक गाठरिया ।
श्याम दरसन दिखलाता जा, मार्ग मुझे बतलाता जा;
पार होय भवसागरिया ।
ऐसी कर दे कृपा गुसांई, कृपा रूप तू ही है सांई;
फूटी मन की गागरिया ।
तेरे नाम में रंग दी चूनर, नामामृत से भर ली गागर;
नाम की ओढ़ी चूनरिया ।
युगलचरण की धूर धरूँ सिर, देहरी पर घिस-घिस रगड़ूँ सिर;
सेंदुर से भरूँ माँगरिया ।
साधन और कछु न मो में, भयो अनाथ डोलूँ मैं जग में;
टेढ़ी तेरी डागरिया ।
आँधी चल रही जोर जगत में, ममता की रज न पड़े आँख में;
नाम की ओढ़ी चादरिया ।
अनर्थ हटे सब प्रबल मोह के, फाँसी गरे की कटे लोभ के;
जिनने कीनी आँधरिया ।
जग की झूठी नाम बड़ाई, फँसा-फँसा जीवन भरमाई;

चरणों में धरी पागरिया ।

सबको साँचो पति तू ही है, तू ही रक्षक रसदाताहू है;

तेरे संग होगी भाँवरिया ।

युगल नाम की माला पहरूँ, युगल प्रेम में चूनर रँग लूँ;

राधा मोहन नागरिया ।

भानुदुलारी हरि जू की प्यारी प्राण हमारी अब तो कृपा कीजै ।

छोड़ अन्य द्वारन को आयो, और आश्रय सब ठुकरायो,

एक सहारो तेरो भारो येइ हमारो पद आश्रय दीजै ।

तुम हो दयामयी श्री श्यामा, करुणामयी कृपा की धामा,

अति दुःखियारे सब विधि हारे हम हैं तिहारे अपनी कर लीजै ।

भक्ति भावना नेंकहु नाँहीं, सुमिरन नाहीं सेवा नाहीं,

हरि विमुखन को है सँग निशिदिन हरि रसिकन बिन कैसे अब जीजै ।

कहाँ जाऊँ वृषभानु किशोरी, कहा करूँ श्री राधे भोरी,

नहिं कछु साधन लादे पापन सुन मम नामन जमहु अब खीजै ।

अन्तःकरण चतुष्टय मेरो, अन्धकार कौ तहाँ बसेरो,

होत बहिर्मुख नहिं नेकहु सुख भोगत हैं दुःख पल-पल मति छीजै ।

ऐसो दीन नाहिं कोउ राधे, तुम हो आश्रय प्रेम अगाधे,

चरण सुधारस देहु कृपावश तव उदारयश जासों कछु पीजै ।

मेरी गौरांगी श्री राधे मोहन की मतवारी ।

ब्रह्माचल पर्वत की शिखरन, ऊँचे महलन वारी ...मोहन की ।
दान मंदिर दानगढ़ पै सोहे, जहाँ दान दियो है प्यारी...मोहन की ।
गढ़ विलास विलास कियो है, झूला झूलवे वारी ...मोहन की ।
खोर साँकरी की इन गलियन, दही लुटाने वारी ...मोहन की ।
बरसाने की रंगीली गलियन, लठिया चलाने वारी ...मोहन की ।
मान मंदिर मानगढ़ सोहे, जहाँ मान कियो राधा प्यारी ...मोहन की ॥

जय श्री राधे जय श्री राधे, भव दुःख निवारिणी श्री राधे ।

संकट की बदली छाई हो, अँधियारी कारी आई हो;
जय श्री राधे जय श्री राधे, संसार तारिणी श्री राधे ।
कृष्ण प्रदायिनी श्री राधे, रस रास दायिनी श्री राधे;
जय श्री राधे जय श्री राधे, हरि प्रेम दायिनी श्री राधे ।

जय कृष्ण हरे जय कृष्ण हरे सब दुःखियों के दुःख दूर करे जय-३ कृष्ण हरे ।

जब चारों तरफ अँधियारा हो, दीखै नहिं कोई किनारा हो;
जय कृष्ण हरे जय कृष्ण हरे भव सागर को प्रभु पार करे जय-३ कृष्ण हरे ।
विकराल काल टकराया हो, भक्तों का मन घबराया हो;
जय कृष्ण हरे जय कृष्ण हरे सब संकट को प्रभु दूर करे जय-३ कृष्ण हरे ।

माँझ

घुँघरू बाज रहे छुम-छननन, दंपति के गहवर वन कुंजन ।
नाच रही कीरति सुकुमारी, लै गलबांह यशोदानंदन ।
कबहुँक गावति बोल सुनावति, ता थुं ता थुं तों तन नननन ।
भाव बतावति सब दिखरावति, घोर मृदंगन बजत जब परन ॥

ऐंड़ई मोतिन झालरदार, धरे सिर ऊपर गागर भारी ।
मोतिन हार गरे लटकै, झुक झूम चलीं ब्रज की पनिहारी ।
काजर रेख बनी दृग कोरन, छोरन अंचल जरद किनारी ।
डोलत संग लग्यो ब्रजचंद, अरी सुनजा, रुकजा वर नारी ॥

हिमगिरि से निकल पड़ी नदिया, वह फिर पर्वत पै चढ़ती नहीं ।
जिन बालों में पड़ गईं जटा, कंघी काढ़े से सरकती नहीं ।
पंखुड़ियाँ नीचे जा बिखरीं, वह कली कभी भी खिलती नहीं ।
जब प्राण हुए मनमोहन के, फिर कहीं किसी की चलती नहीं ॥

देखो गहवर वन कुंजन, मनमोहन वंशी बजा रहा ।
श्री राधा राधा श्री राधा, मुरली में धुन सुना रहा ।
मीठी तान सुरीली लेकर, गूंज हृदय में मचा रहा ।
गुन गभीर वृषभान सुता का, चित्त अचंचल चुरा रहा ॥

मनमोहन तुमसे मिलने की, कितनी आशाएँ करता रहा ।
एक दिन तुम आओगे प्रियतम, आशा से धीरज धरता रहा ।
मेरी आशाएँ आँसू बन गईं, हृदय नेत्र से ही झरता रहा ।
आशा के आँसू पी पीकर, नैराश्य सिन्धु से तरता रहा ॥

इस आँसू पीने की आदत ने, मुझको नित्य विराम दिया ।
सब भोग छूट गए जगती के, ऐसा वियोग का जाम पिया ।
मैं बना वियोगी नित्य तुम्हारा, योगी का सा वेष लिया ।
त्रय ताप अश्रु से बुझे मेरा, नल जीवन से यह प्राण जिया ॥

वर्षा ऋतु की उमगी नदिया, कितना रोको वह रुकती नहीं ।
कितना भी खेओ नौका को, पानी बिन थल पै तिरती नहीं ।
कामी का पीछा करने से, सत् नारी सत् से हटती नहीं ।
जब प्राण हुए मनमोहन के, कुछ कहीं किसी की चलती नहीं ॥

जो राधामाधव देख रहे, वह ही देखना देखना है ।
जो राधामाधव यश सुनते, उनका सुनना ही सुनना है ।
जो राधामाधव नाम रटे, वह रसना ही बस रसना है ।
जो राधामाधव हित जीते, वह जीना ही बस जीना है ॥

यह निकला पंछी पिंजरे से, इसे मुक्त गगन में उड़ने दो ।
जो ग्रीवा से था हिरन बँधा, उसे मुक्त चौकड़ी भरने दो ।
जो बँधा जंजीरों से गज था, उसे कदली वन में जाने दो ।
दैहिक बन्धों को तोड़ मुझे, अब प्रीति कृष्ण से करने दो ॥

सोता यह रहा पथिक चिर निद्रा, मग्न भूल सब कुछ अपना ।
कितने ही प्रलय हुये सोते, कितनी ही हुयी जगत रचना ।
यह जागा नहीं जगाने पर भी, देख रहा झूठा सपना ।
श्रीकृष्ण नाम से नींद खुली है, धन्य धन्य नर का जगना ॥

मन मोहन से है प्यार जिसे, उसे गाली की परवाह नहीं ।
जब युद्ध क्षेत्र में वीर खडा, उसे मरने की परवाह नहीं ।
जब सत् पर सती चली अपने, उसे जलने की परवाह नहीं ।
जो कृष्ण विरह में मर ही चुका, उसे जीने की परवाह नहीं ॥

मुरली वाले मुरली लैके, मीठी सी तान सुना दे तू ।
ये कर्ण शष्कुली सूख रही, इसमें रस धार बहा दे तू ।
जो झूमा करता मस्तक पै, वह मोर पंख झलका दे तू ।
प्यारे प्यासे इन नैनों में, निज रूप सुधा बरसा दे तू ॥

मेरा जीवन साथी प्यारा, नन्द दुलारा औ मुरली धर ।
तू है मेरा प्राण प्राणपति, तू ही जीवन है जीवन धर ।
नित्य सखा प्यारा दिलदारा, परम सनेही प्रेम प्रीति धर ।
कर दे वर्षा कृपा दृष्टि की, भरदे अपना सौख्य सौख्य धर ॥

गहवर वन में नित्य गूंजती, गूंज मधुर मुरली की सुन्दर ।
सरे गम पध नी सप्त सुरन की, धारा बहती है रस निर्झर ।
राग रागिनी तान अलापन, विविध मूर्च्छना ग्राम श्रुतिन धर ।
कुंज निकुंजन लता पत्र द्रुम, झूम रहे सब वंशी के स्वर ॥

सांवरिया तेरी आँखों ने, यह कैसा जादू मारा है ।
ये भी जीना कोई जीना है, इससे तो मरना प्यारा है ।
आँखों से आँखें मिलते ही, बहती अविरल जल धारा है ।
आँखों से दूर तनिक होते, छा जाता जग अँधियारा है ॥

जब जब पूनम का चन्द्र दिखा, श्रीकृष्णचन्द्र की याद भयी ।
काली लहराती घटा देख, लट घुँघराली छवि आय छयी ।
चपला चमकी मधि कृष्ण मेघ, बन छटा पीत पट छाय गई ।
लखि इन्द्र धनुष मधि श्याम घटा, माला वैजंती चित्त ठई ॥

जमुना की लहरन सों गागर, भर के सीस धरों हों भारी ।
कुंज गली है के निकसी, हों बीच मिले तहां कुंजबिहारी ।
ऊबट बाट गली सँकरी, तँह उरझ परी अंचल इक डारी ।
आँचल छोर छुड़ाय चल्यो, उरझाय मेरो मन श्याम खिलारी ॥

दूर ते आय रही मुरली धुनि, कुंजन ते कछु झीनी झीनी ।
जान गई मनमोहन मोहि, बुलावत टेर है कीनी कीनी ।
गागर सीस लिये निकसी, अंखियाँ मग कुंजन दीनी दीनी ।
जाय गही मुरली मुरलीधर, प्रीति सुधारस लीनी लीनी ॥

बैठी अटा पै वधू मृगनैनी, किये अस्नान सुखावति अलकें ।
मोहन गेंद उछार दई जहाँ, गोरी हती सो गिरि तहँ चलकें ।
दीजो री गेंद गई हमरी, कहि ऊपर देख रह्यो बिन पलकें ।
चार भई अंखियाँ रसमाती, सनेहन नीर सुनैनन झलकें ॥

गाइ उठ्यो ब्रजराज लला, अति मीठे सनेह सुरन मद माती ।
झाँकति एक जो ठाड़ी झरोखन, देखन को वह साँवल गाती ।
ऐसी अधीर भई पिंजरा मधि, बंद पखेरू जो उड़ न सकातो ।
गानन तानन में बस प्रानन, आनन नैनन नीर चुचातो ॥

मेंहदी पीस धरी दोउ हाथन, सींकन ते रच रच अति रचनी ।
आँगन बैठी सुखाय रही, अपने रस ढार ढरी तहँ सजनी ।
छाय रहे मुख ऊपर वार औ, आँचर हूं सरक्यो उर खसनी ।
औचक ओढ़ायो अंचल हरि, आ निज हाथन केश सम्हार्यो ॥

श्री गहवर वन कुंजन की, छैंया में बैठे युगल विहारी ।
मोहन वेणु बजाय रहे सँग, गाय रहीं वृषभानु दुलारी ।
सखी बजाय रहीं बहु बाजे, बीन पखावज लै लयकारी ।
मोदमयी सब लता फूल रहीं, मोद भरे खग मृग वनचारी ॥

गाय रही प्यारी गहवरवन, कुंजन बैठ अलाप अलापति ।
अपने रंग ढरी रसभामिनी, तानन में कछु भेद सुनावति ।
झूम रहे मनमोहन सुनि-सुनि, अँखियाँ अद्भुत भाव जनावति ।
धन्य धन्य वृषभानुनन्दिनी, प्रियतम के मन मोद बढ़ावति ॥

श्री गहवर वन कुंज भवन में, बैठे श्याम मूँद युग अँखियाँ ।
श्री राधा पद ज्योति ध्यान में, मत्त अकेले तहाँ न सखियाँ ।
प्रियाचरण मधुरस में हरि के, चित्त की वृत्ति भई मधुमखियाँ ।
नंदलाल की इष्ट राधिका स्वामिनी, वे ही हैं मम गतियाँ ॥

दे गलबांह रहे मुस्काय, मिलाय के नैन किशोर किशोरी ।
आवत देखे अरी ललना, हमने दोउ गहवर कुंजन खोरी ।
साँवरो लाल औ गोरी प्रिया, नव नेह रँगी नव जोवनी ओरी ।
झूम चले झुकि ठाड़े रहें, कहुँ बैठे विनोद करें रस बोरी ॥

गलबैंयाँ में लिये लाल को, आय रहीं वृषभानु दुलारी ।
जाय रहीं गहवर की कुंजन, सघन लतन की छाँह जहाँ री ।
पूरन प्रेम छकीं अनुरागिनी, रसिक श्याम की जिय जियारी ।
जहाँ जहाँ निकसत गौरांगी, जगमगात तिन कुंज दिवारी ॥

या भवसागर डूबत हौं, नहिं कर्म किये यासों तरवे को ।
मर मर जनमत जनमि मरत पुनि, फल पावत हरि विमुख भये को ।
नर्क स्वर्ग अपवर्ग परमपद, नहिं सोचों फल अंत समै को ।
धूरि बनौं ब्रज बरसाने की, लाभ लहौं यह देह धरे को ॥

परन बजत द्रुत चाल मृदंगन, मध्य नचत राधा गिरिधारी ।
छनन छनन छन बाजत घुँघरू, घोष उड़त गहवर वन भारी ।
चरण धरत कटि हलत पयोधर, हार ररत उरझत माला री ।
करताल ताल मिलावत सम को, ताथेई बोल कहत सुखकारी ॥

नाचत रंग भरे पिय प्यारी, अद्भुत गति मंडल गह्वरवन ।
कबहुँक गावत राग अलापत, भाव बतावत बहुविध नूतन ।
मोरत अंग नचावत नैनन, ग्रीवा मुरनि ढरनि मुख श्रमकन ।
मुसकावत मुख मोर मोर मृदु, रीझ परस्पर मिलवत हैं तन ॥

प्रात काल देशी गावत हैं, राधा रसिक निकुंज विहारी ।
अद्भुत घोर उठत गायन की, गूंजत गह्वर वन द्रुम डारी ।
बजत मृदंग परनि अतिसुन्दर, मिलवत ताल विविध लयकारी ।
राग जमाय अलाप लेत हरि, प्यारी लेति मींड़ अति प्यारी ॥

लै वीना मधुमती लाड़िली, गह्वर कुंजन बैठी बजावति ।
मन्द्र मध्य औ तार सुरन सों, क्रम सों राग स्वरूप बढ़ावति ।
अतिकोमल भीने स्वर लै लै, सकल श्रुतिन को भेद दिखावति ।
मुग्ध सुनत लाल लाड़िलो, प्रिया श्याम को मन अति भावति ॥

बोना यदि छोटे हाथों से, आसमान छुए छूने दो ।
कोई यदि अपने हाथों से, सूर्य बिम्ब ढकता ढकने दो ।
श्याम लगन रोके नहिं रुकती, सब जग आये तो आने दो ।
नाच रहा जो कृष्ण प्रेम में, हँसे जगत तो हँसने दो ॥

घटा टोप नभ बादल छाते, सूर्य प्रभा उनमें रुकती क्या ।
बादल में से बिजली गिरती, वर्षा जल से है रुकती क्या ।
नदिया हिम पर्वत से गिरकर, सावन भादों में रुकती क्या ।
लगन लगी जब हरि मिलने की, सब जग रोके पै रुकती क्या ॥

चन्दन इत्र फूल की खुशबू, कभी हवा बिन उड़ सकती नहीं ।
शुभ चरित्र सौगंध हवा बिन, उड़ती त्रिभुवन में रुकती नहीं ।
खारा सागर पी लो जितना, कभी प्यास बुझ सकती नहीं ।
श्रीराधा पद शरण लिये रससरिता, मन बहती रुकती नहीं ॥

बीहड़ वन खण्ड अँधेरे में, बिन राह पथिक भटका ही करें ।
बिन खेवट नाव फँसी सागर, तूफान बीच डूबा ही करें ।
पीकर हलाहल विष कोई, अपने हाथों मरना ही करें ।
तज चरण किशोरी के मानव, विष्ठाविष पान किया ही करें ॥

जो अपनी हस्ती रखते हैं, वे प्रेम निभाना क्या जानें ।
जिसने जीना ही सीखा है, वो मरना मिटना क्या जानें ।
निज जीवन से है मोह जिसे, प्रभु हेतु तड़पना क्या जानें ।
जो मीठा भोजन खाते हैं, वे ठोकर खाना क्या जानें ॥

कभी न गाया गीत विरह के, प्रीति स्वरों को क्या जानेगा ।
तारों की झनकार न झूमा, हृदय तार को क्या जानेगा ।
पत्थर दिल जिसका फूलों की, कोमलता को क्या जानेगा ।
विष्ठा भोगों का कीड़ा जो, युगल प्रेम रस क्या जानेगा ॥

शीश फूल झलमलात शीश पै, चमचमात माथे पै बिंदिया ।
कंचन कंकन दिपै कलैयन, काजर रेख बनी युग अँखियाँ ।
हीरन हार गरे बिच झूमै, नगन जड़ी जगमग उर अँगियाँ ।
या छवि बिबस लगे डोलें हरि, देख देख मुसकति सब अँखियाँ ॥

भोर बजी वंशी गिरधर की, जमुना जल हौं गयी भरन को ।
एक अचम्भो बीर लख्यो जल, जमुनाहू नहिं बहत सुनन को ।
टोल टोल मृग दृग मूंदे तहँ, खड़े नहीं सुध वन धावन को ।
गो गोवत्स चरें नहिं तृण हूँ, भूल गए खग गगन उड़न को ॥

श्रीहरि के नेत्र हजारों हैं, दीनन के दशा निरखने को ।
भूमा के कान हजारों हैं, दर्दीली आहें सुनने को ।
गिरधर के हाथ हजारों हैं, भक्तन की रक्षा करने को ।
प्रियतम के चरण हजारों हैं, प्रेमी रसिकन सों मिलवे को ॥

पिय की यह राह कठिन टेढ़ी, कंकड़ पत्थर पर चलना है ।
नहिं दर्शन सुन्दर फूलों का, काँटों की शैया पर सोना है ।
शीतल सुख की आशा छोड़ो, विरहाग्नि शिखा में जलना है ।
विषयों के भोगी भागो रे, इस पथ तुमको नहीं आना है ॥

नैनन रेख लगी कजरा की, सैनन नेह सुधा बरसाती ।
बैनन बीन बजै सुर की, सुन वंशी वंशीधरन लजाती ।
मैनन पुंज निछावर भावन, धन्य राधिका की रसघाती ।
दैनन चैनन मोहन कूँ दुःख, विरह व्यथा गिरधरन नसाती ॥

चढ़ गढ़ मानवती प्यारी को, चले मनावन कुंजबिहारी ।
पीठ दिए बैठी नहिं देखें, नागर हरि एक जुगति विचारी ।
तिय आगे दर्पन धरकें, प्रतिबिम्बन बिम्बन कर मनुहारी ।
नागर जुगति लखि विहँसी तिय, हँसे श्याम हँसी सखियन सारी ॥

दर्पन देख रही कीरतजा, हरि संग कुंजन गहवर माहीं ।
मोहन कछु लंगरहि कीनी, मान किये झटकी पिय वाही ।
बैठी चढ़ी गढ़ मान भवन में, मान मनावन को पिय जाही ।
मुकुट छुवावत तिय चरन में, प्रिया करत बस नाहिं जु नाहिं ॥

जिस पथ पर सिंह चला जाता, गीदड़ उस पथ क्या रुक सकता ।
जिस रण में तलवारें चलतीं, कायर उस रण क्या रुक सकता ।
लगता कलंक का भय जिसको, वह प्रेम गली क्या रुक सकता ।
लोभी भोगी कपटी कामी, हरि रस पथ में क्या रुक सकता ॥

आखिर यह तन जायेगा, क्यों नहीं प्रभु को अर्पण करते ।
यह साथ सभी का छूटेगा, इससे तुम क्यों धोखा खाते ।
सभी वस्तु प्रभु की फिर, इसके तुम कैसे मालिक बनते ।
नकली चोगा पहर प्रेम का, प्रेमी का सा दम क्यों भरते ॥

आँख मिचौनी खेलत गहवर, नंदलाल राधा अभिरामा ।
लतन ओट दुरि भाजत ढूँढ़त, पकरत हँसत सप्रेम सकामा ।
हरि की अँखियाँ बाँध लाड़िली, हरि की ओटहि दुरति सुबामा ।
सब जग ढूँढ़त जाहि ब्रह्म कहि, सो ब्रज कुंजन ढूँढ़त श्यामा ॥

भादों सुदी अष्टमी तिथि, भई कीरति के कन्या सुखरासी ।
श्री वृषभानु महीपति कौ जस, फ़ैल रह्यो चहुँ ओर उजासी ।
राधा राधा नाम कहैं सब, नाम लली कौ बाधा नासी ।
श्री बरसाने बधाई बजी, तिहुँ लोक करैं सब धूम धमासी ॥

नाचत मोद भरी सब गोपी जु, गाय रहीं हुलसाय बधाई ।
कंचन थार लिये सिर पै चलि, भानु भवन जुर मिलके धाईं ।
कीरत के जनमी इक कन्या, बात सुनी नहिं फूली समाई ।
कीरति की जैकार मची कहुँ, भानु की राधा की जै जै सुनाई ॥

जैसेई जनम सुन्यौ राधा कौ, दुन्दुभी बाज रही सहनाई ।
ब्रज की कहा कहौं सजनी, तिहुँ लोक बजी आनन्द बधाई ।
धाय रहे ब्रजवासी जन सब, रच पच के सिंगार बनाई ।
नाचत गावत करै कुलाहल, आज बधाई है कीरति माई ॥

बजी बधाई भानुभवन में, गोपी ग्वाल जु नाचैं बधाई ।
मंदिर मंदिर श्री बरसाने, घर घर गली बधाई बधाई ।
हाट बधाई जु बाट बधाई जु, पर्वत ऊपर मची बधाई ।
नभ मण्डल में छाई बधाई सु, देव करैं जैकार बधाई ॥

प्रिया कुण्ड पै छाई बधाई, प्रेम सरोवर भई बधाई ।
भानोंखर आनन्द बधाई, बरसाने नर नारि बधाई ।
खोर साँकरी की गलियन में, जुरी मण्डली गाय बधाई ।
गह्वर वन की लता पतन में, डार डार फल फूल बधाई ॥

कुंजन कुंजन श्री राधा कौ, जनम महोत्सव बाज बधाई ।
पात पात पै फूल फूल पै, गावत भ्रमर समूह बधाई ।
शुक पिक मोर चकोर पपैया, कोयल कुहँकै करैं बधाई ।
ग्वाल बधाई खिरक बधाई, गो गोवत्स बधाई बधाई ॥

जनमीं भानुलली सुनकें जु, चले ब्रजवासी रंग रचाये ।
मोती माणिक लेत न जाचक, राधा दरसन आस लगाये ।
नाचत खेलत गोपिका गोप जु, दूध दही हरदी लपटाये ।
गवाये बधाये जसोमति पै मिलि, आँगन नंदहि नाच नचाये ॥

वृन्दावन उमग्यो राधा को, उमगी यमुना रस सरिता री ।
पुष्पमयी भई ब्रज अवनी रचि, है निशि रास शरद उजियारी ।
फूली लता वृक्ष मधु झर रहे, झरना झरै अमित रस भारी ।
जीवन मूरि कृष्ण की प्रगटी, कृष्ण प्राण की पोषणहारी ॥

जो दुनिया से खुश रहते हैं, वे आहें भरना क्या जानें ।
जो मजार मिसही में रहते हैं, वे सूनेपन को क्या जानें ।
जो अँधियारे में डरते हैं, वे वन में रहना क्या जानें ।
जो मीठे सरबत पीते हैं, वो ओंठ सुखाना क्या जानें ॥

जो मखमल सेज बिछाते हैं, वो धरती पर पड़ना क्या जानें ।
जो तकिया शीश लगाते हैं, हाथों का सिराना क्या जानें ।
जो फूलों को तोड़ सूँघते हैं, वो काँटों पर चलना क्या जानें ।
जो ऊँची बातें करते हैं, वे ऊँचा करना क्या जानें ॥

जो अपना ही यश गाते हैं, दिलबर को गाना क्या जानें ।
जिस पर दिलबर की हुई दया, वो जाने और नहीं जाने ।
जो स्वांग दिखाते फिरते हैं, वो प्रेम पंथ को क्या जानें ।
जो अपने ही में रहते हैं, वो दिलबर के दिल की क्या जानें ॥

जिसने लेना ही सीखा है, वो सब कुछ देना क्या जाने ।
जो दिल के काले कपटी हैं, वो दिल को लगाना क्या जानें ।
जो देखा करते दोषों को, वो कहाँ रीझना क्या जानें ।
जो थोड़े ही में खीज गये, वो सँग-सँग चलना क्या जानें ॥

जिसकी आँखों में गुस्सा है, वो आँख मिलाना क्या जाने ।
यारो यह सड़क नहीं सीधी, ये खेल नहीं सब क्या जाने ।
जो जीतेजी मर कर बैठा, वो ही जाने प्रीतम जाने ।
जो कुर्बानी को सीख गया, प्यारे की दया वही जाने ॥

तुम मुझको क्या तरसाते हो, ये तरस नहीं है जाने की ।
ये प्राण पपीहा अटक रहे, आशा है दर्शन पाने की ।
पी-पी रटता जाये जीवन, कुछ और नहीं चित लाने की ।
घनश्याम भले गरजो बरसो, डर नहीं पत्थर बरसाने की ॥

जिस दिन से प्यार किया तुमसे, मैं इस दुनियाँ को भूल गया ।
मैं कौन कहाँ क्या करता हूँ, ये सब बातें भी भूल गया ।
ये दुनियाँ पागल कहती है, मैं इन पगलों को भूल गया ।
बस याद तुम्हारी मनमोहन, सब भूल गया दिल भूल गया ॥

लाखों को लुटते देख लिया, अब मेरा लुटना बाकी है ।
दीवानें लाखों देख लिए, अब मेरी हस्ती बाकी है ।
आयेगा एक समय तूफां, उसकी ख्वाइश ही बाकी है ।
मैं लुटकर तुमको पा जो सकूँ, फिर कुछ मिलना क्या बाकी है ॥

चंदा देखा सूरज देखा, ये देखे अगणित तारे हैं ।
ये नील गगन भी देख लिया, जिसने ये सब ही धारे हैं ।
उठती जो घटा उमड़ करके, देखे बादल जो कारे हैं ।
इन सबमें तुझको ढूँढ़ लिया, तेरे बिन नैन दुखारे हैं ॥

तेरी मुस्कान चन्द्रमा में है, देखो मैंने देखी है ।
तेरे नैनों में अरुणाई, उगते सूरज में देखी है ।
तेरे जुल्फों की लहरावन, काली बदली में देखी है ।
तेरा मुख देखे बिना प्रियतम, सब देखी भी बिन देखी है ॥

हम तुझ पै ही कुर्बान हुए, सच मानें मेरा कहना है ।
इस दुनियाँ में एक तेरे बिन, अब और नहीं कुछ अपना है ।
दिन बहुत गुजरते देखे हैं, तेरा मिलना एक सपना है ।
अब तेरे दर पै आय अड़े, फिर क्या जीना क्या मरना है ॥

राधे किशोरी दया करो ।

हम से दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषय विष ज्वाल माल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और (विषय) की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो ।